राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र प्रभात

जो लिखेगा, वही टिकेगा

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करें.....
9511151254

@swatantraprabhatmedia @swatantramedia RNI.No. UPHIN/2019/79073 (epaper.swatantraprabhat.com) @SwatantraPrabhatonline news@swatantraprabhat.com

लखनऊ से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

लखनऊ, शनिवार, 28 जून 2025

वर्ष 06, अंक 266, पृष्ट 12, मूल्यः 03 रुपया

www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

बेटी को पीटते रहे दबंग, मां-बहन भी बनीं शिकार गांव में दहशत, न्याय की गुहार...03

कांग्रेस ने आरएसएस के संविधान प्रस्तावना के शब्दों की समीक्षा के आह्वान पर साधा निशाना...08

उत्तर प्रदेश में पुलिस और नागरिक प्रशासन न्यायिक आदेशों का उल्लंघन करने में गर्व महसूस करते हैं

प्रयागराज। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने हाल ही में टिप्पणी की कि राज्य पुलिस और नागरिक प्रशासन के अधिकारी न्यायिक आदेशों का उल्लंघन करने में गर्व महसूस करते हैं और ऐसा लगता है कि इससे उन्हें अपराध बोध की बजाय उपलब्धि का अहसास होता है [श्रीमती छामा बनाम उत्तर प्रदेश राज्य और 3 अन्य]। न्यायालय एक ऐसे मामले पर विचार कर रहा था जिसमें प्राधिकारियों ने उच्च न्यायालय द्वारा पारित स्थगन आदेश का उल्लंघन करते हुए एक मकान को ध्वस्त कर दिया था।

न्यायमूर्ति जेजे मुनीर ने यह टिप्पणी एक याचिका पर सुनवाई करते हुए की जिसमें आरोप लगाया गया था कि अधिकारियों ने उच्च न्यायालय के स्थगन आदेश के बावजूद बागपत जिले में एक मकान को ध्वस्त कर दिया। न्यायालय ने कहा, "ऐसा लगता है कि राज्य के कार्यकारी अधिकारियों, खास तौर पर पुलिस और नागरिक प्रशासन के अधिकारियों के बीच न्यायिक आदेशों का उल्लंघन करने में एक तरह का गर्व महसूस करने की संस्कृति विकसित हो गई है। ऐसा लगता है कि इससे उन्हें अपराधी होने का अपराध बोध होने के बजाय उपलब्धि का अहसास होता है। इस मामले को हल्के में नहीं लिया जा सकता। यह अच्छी तरह से स्थापित है कि न्यायिक आदेश का उल्लंघन करके की गई कोई भी कार्रवाई, चाहे वह किसी भी तरह की हो, अमान्य है।"

एकल न्यायाधीश ने कहा कि विध्वंस एक भौतिक कार्य है, जिसके पूरा हो जाने पर न्यायालय के पास केवल दो विकल्प बचते हैं - क्षतिपूर्ति देना या क्षतिपूर्ति देना। " पुनर्स्थापना ध्वस्त भवन के पुनर्निर्माण द्वारा की जाएगी। यहाँ भवन का निर्माण हरिजन आबादी में किया गया था। यह किसी सार्वजनिक उपयोगिता वाली भूमि, जैसे तालाब, खलिहान या पानी के नीचे डूबी हुई भूमि पर निर्माण नहीं था। इसलिए, हमारी राय में, यह एक ऐसा मामला हो सकता है, जहाँ पुनर्स्थापन का आदेश दिया जाना चाहिए, जिसके लिए राज्य को पुनर्निर्माण की आवश्यकता होगी, "न्यायालय ने स्पष्ट किया। वर्तमान मामले में, जुलाई 2024 में मकान मालिक छामा (याचिकाकर्ता) के खिलाफ बेदखली का आदेश पारित किया गया था और फरवरी 2025 में उनकी अपील खारिज कर दी गई थी। उन्होंने मार्च 2025 में उच्च न्यायालय का रुख किया। इस बीच, अतिक्रमण हटाने की मांग को लेकर एक जनहित याचिका (पीआईएल) दायर की गई। जनहित याचिका में हाईकोर्ट ने 5 मई को बागपत कलेक्टर को आदेश दिया कि वे जवाब दें कि क्या किसी उच्च फोरम ने इस मामले में कोई अंतरिम आदेश पारित किया है और यदि नहीं, तो बेदखली क्यों नहीं की गई।

इसके बाद याचिकाकर्ता ने तत्काल राहत के लिए बेदखली के खिलाफ अपना मामला दर्ज कराया। उच्च न्यायालय ने बेदखली के आदेश पर रोक लगाते हुए निर्देश दिया कि याचिकाकर्ता के निर्माण को ध्वस्त नहीं किया जाएगा और कोई वसूली नहीं की जाएगी। इन दोनों मामलों, याचिकाकर्ता की याचिका और जनहित याचिका को बाद में एक ही पीठ के समक्ष सूचीबद्ध करने का आदेश दिया गया।

विध्वंस के बाद, याचिकाकर्ता ने स्थगन आदेश की अवहेलना करने के लिए अधिकारियों के खिलाफ अदालत की अवमानना की याचिका दायर की। यह देखते हुए कि अदालत की अवमानना के मामलों से निपटने के लिए उसके पास कोई रोस्टर नहीं है, अदालत ने याचिका को "गलत काम करने वालों के लिए" माना ।

प्रथम दृष्टया पाया गया कि स्थगन आदेश का उल्लंघन करते हुए तोड़फोड़ की गई। न्यायालय ने कहा कि तस्वीरों से पता चलता है कि जब अधिकारियों को स्थगन आदेश दिखाया गया तो उन्होंने दूसरी तरफ देखा। न्यायालय ने आगे कहा, "अधिकारियों का प्रतिनिधित्व करने वाले विद्वान स्थायी वकील की उपस्थिति में पारित न्यायालय का आदेश, जैसे ही पारित होता है, उसे तुरंत सूचित कर दिया जाता है। प्रतिवादी राज्य के सभी अधिकारी हैं, जिनका प्रतिनिधित्व विद्वान स्थायी वकील करते हैं, और इसलिए, न्यायालय में उनकी उपस्थिति हमेशा बनी रहती है। उन्हें विद्वान स्थायी वकील के माध्यम से इस न्यायालय द्वारा पारित सभी आदेशों की जानकारी है।" इस दावे पर कि स्थगन आदेश उच्च न्यायालय की वेबसाइट पर देर से अपलोड किया गया, एकल न्यायाधीश ने कहा कि प्राधिकारियों को याचिकाकर्ता को दी गई अंतरिम राहत के बारे में सूचित किए जाने के बाद उसका सत्यापन करना चाहिए था।

"भले ही आदेश अपलोड करने में देरी हुई हो और इसे विद्वान स्थायी वकील की मौजूदगी में पारित किया गया हो, और याचिकाकर्ता का कहना है कि उच्च न्यायालय ने स्थगन आदेश पारित किया है, यह अधिकारियों का कर्तव्य है कि वे विध्वंस जैसी कठोर कार्रवाई से तब तक पीछे हटें, जब तक कि इस न्यायालय द्वारा पारित स्थगन आदेश के तथ्य की पुष्टि न हो जाए। इस न्यायालय द्वारा स्थगन आदेश पारित किए जाने की बात सुनने और इस तथ्य की जानकारी मिलने पर, अधिकारियों को तुरंत सतर्क हो जाना चाहिए था और आगे बढ़ने से पहले उक्त तथ्य का पता लगाना चाहिए था।

यहाँ, तस्वीरों से पता चलता है कि आदेश पहले से ही था, जैसा कि रिकॉर्ड दिखाते हैं और प्रतिवादी-अधिकारियों के ज्ञान में था और फिर भी उन्होंने विध्वंस को आगे बढ़ाया।" न्यायालय ने अब कलेक्टर, उप-विभागीय मजिस्ट्रेट, तहसील-सदर, जिला बागपत और तहसीलदार, तहसील-सदर, जिला बागपत को नोटिस जारी किया है, तथा उनसे कहा है कि वे 7 जुलाई तक या उससे पहले अपना-अपना हलफनामा दाखिल करें, जिसमें यह स्पष्ट किया जाए कि क्यों न ध्वस्त भवन का पुनर्निर्माण उनके द्वारा कराया जाए और राज्य द्वारा उसे उसके मूल स्वरूप में बहाल किया जाए।

कांग्रेस का चुनाव आयोग को दो टूक- मतदाता सूची-वीडियो फुटेज दे तभी होगी बैठक

प्रयागराज। कांग्रेस ने चुनाव आयोग को दो टूक जवाब देते हुए कहा है कि हमारी मांगों को टालना बंद करें! महाराष्ट्र और हरियाणा चुनाव में कथित गड़बड़ियों पर पार्टी ने मतदाता सूची और वीडियो फुटेज की मांग दोहराई। इसने साफ़ किया है कि पहले इसकी मांग पूरी होगी तभी पार्टी के नेता चुनाव आयोग के साथ बैठक को तैयार होंगे।

दरअसल, कांग्रेस ने महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव 2024 में कथित अनियमितताओं को लेकर चुनाव आयोग को एक कड़ा पत्र लिखा है। यह पत्र लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी को ईसीआई द्वारा भेजे गए पत्र के जवाब में है, जिसमें आयोग ने राहुल गांधी से महाराष्ट्र और हरियाणा चुनावों से जुड़े मुद्दों पर चर्चा के लिए बैठक का प्रस्ताव दिया था। कांग्रेस ने अपने जवाब में साफ़ किया है कि आयोग का उनकी मांगों को टालना ठीक नहीं है और मशीन से पढ़ी जाने योग्य मतदाता सूची, डिजिटल कॉपी तथा मतदान के दिन की वीडियो फुटेज उपलब्ध कराने की मांग को दोहराया। पार्टी ने यह भी कहा कि वह इन दस्तावेजों को पाने के बाद चुनाव आयोग के साथ बैठक करने और अपने विश्लेषण के निष्कर्ष देने को तैयार है।

कांग्रेस ने अपने पत्र में कहा है कि ये जानकारियाँ इस पत्र की तारीख़ से एक सप्ताह के भीतर दें। इसने कहा है, 'यह एक लंबे समय से चली आ रही मांग है, जिसका पालन करना चुनाव आयोग के लिए आसान होना चाहिए। कांग्रेस का नेतृत्व इन दस्तावेजों को पाने के बाद जल्द ही चुनाव आयोग के साथ बैठक करने के लिए तैयार है।'

पार्टी ने चुनाव आयोग के रवैये को रहस्यमयी और हैरान करने वाला क़रार देते हुए कहा कि आयोग ने उनकी मांगों को प्रक्रियात्मक बहानों के साथ टालने की कोशिश की है। कांग्रेस ने जोर देकर कहा कि मतदाता सूचियों और मतदान फुटेज की पारदर्शी उपलब्धता ही चुनावी प्रक्रिया में जनता का विश्वास बनाए रख सकती है।

महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव 2024 और हरियाणा विधानसभा चुनाव में विपक्षी गठबंधन को उम्मीद के मुताबिक़ सफलता नहीं मिली। इसके बाद कांग्रेस ने मतदाता सूचियों में असामान्य वृद्धि और मतदान प्रक्रिया में कथित गड़बड़ियों का आरोप लगाया। पार्टी ने दावा किया कि महाराष्ट्र के कुछ निर्वाचन क्षेत्रों में मतदाता संख्या में 8त्न की असामान्य वृद्धि दर्ज की गई, जो संदेहास्पद है। कांग्रेस ने हरियाणा और महाराष्ट्र के मतदान केंद्रों पर सीसीटीवी फुटेज में कथित हेरफेर और मतदाता सूचियों में गड़बड़ियों के आरोप भी लगाए हैं।

चुनाव आयोग ने हाल ही में राहुल गांधी को पत्र लिखकर महाराष्ट्र और हरियाणा चुनावों में उठाए गए मुद्दों पर चर्चा के लिए बैठक का प्रस्ताव दिया था। हालाँकि, कांग्रेस ने इस निमंत्रण को स्वीकार करने से पहले अपनी मांगों को पूरा करने की शर्त रखी। पार्टी ने चुनाव आयोग के पिछले जवाबों को अपर्याप्त करार देते हुए कहा कि आयोग ने उनकी चिंताओं को गंभीरता से नहीं लिया। कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में तल्ख़ टिप्पणी करते हुए कहा, 'पहले हमें वो डेटा दीजिए जो हम मांग रहे हैं। क्या हमें चाय पीने के लिए बुला रहे हैं?'

पार्टी ने यह भी कहा कि ईसीआई का उनकी मांगों को टालना और प्रक्रियात्मक जवाब देना जनता के बीच संदेह को और बढ़ाता है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने भी आयोग पर निशाना साधते हुए कहा कि चुनाव आयोग को सरकारी कठपुतली की तरह व्यवहार करने के बजाय पारदर्शिता दिखानी चाहिए।

कांग्रेस ने चुनाव आयोग को एक सप्ताह का समय दिया है ताकि वह मांगी गई मतदाता सूचियाँ और वीडियो फुटेज उपलब्ध कराए। पार्टी ने कहा कि यदि ये दस्तावेज मिल जाते हैं तो वह अपने विश्लेषण के निष्कर्षों के साथ चुनाव आयोग के सामने विस्तृत चर्चा के लिए तैयार होगी। यदि चुनाव आयोग इस अनुरोध को पूरा करने में विफल रहता है तो कांग्रेस ने संकेत दिया है कि वह इस मुद्दे को और जोर-शोर से उठाएगी। इसमें क़ानूनी कार्रवाई और जन आंदोलन के विकल्प भी शामिल हो सकते हैं।

कांग्रेस नेता सुप्रिया श्रीनेत ने एक्स पर लिखा, 'कांग्रेस पार्टी चुनाव आयोग के साथ बैठक करने को तैयार है, लेकिन पहले हमें वह डेटा चाहिए जो हम मांग रहे हैं। हम अपने विश्लेषण के निष्कर्ष पेश करेंगे।'कांग्रेस का कहना है कि मतदाता सूचियों और मतदान फुटेज की जांच से ही सच्चाई सामने आएगी। यह मामला न केवल चुनाव आयोग की विश्वसनीयता पर सवाल उठाता है, बल्कि भारतीय लोकतंत्र में चुनावी प्रक्रिया की पारदर्शिता के महत्व को भी रेखांकित करता है। आने वाले दिनों में चुनाव आयोग का जवाब और कांग्रेस की अगली रणनीति इस मामले को और गति दे सकती है।

संक्षिप्त ख़बरें

एम्बुलेन्स चिकित्सालय की जगह कचहरी परिसर के पास हो रही है खड़ी एम्बुलेन्स को चिकित्सालय परिसर में नहीं होने दे रहे खड़ा सीएमओ है नोडल कहकर पल्ला झाडा

मिर्जापुर। मरीजों के लिए स्वास्थ्य विभाग द्वारा तमाम सुविधाओं को चिकित्सालय में उपलब्ध करा रही है लेकिन विभाग में तैनात अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा इसका कोई पालन नही किया जा रहा है। एम्बुलेन्स को मंडलीय चिकित्सालय के परिसर में खड़ा नहीं होने दे रही है उनको खड़ा देखकर चिकित्सालय के कर्मचारियों द्वारा लगातार भगाने का कार्य किया जा रहा है। इस कारपा एम्बुलेन्स के चालक जिलाधिकारी गेट के बगल में लगाकर चले जा रहे है। जिससे कचहरी के समय घण्टो का जाम लग रहा है। इस पर जब मेडिकॉल कालेज के अधिकारियों को सूचित किया गया तब वहां के दो डॉक्टरो द्वारा वाट्सअप पर जवाब आया कि एम्बुलेन्स के नोडल मुख्य चिकित्साधिकारी है इससे कोई मतलब नहीं है जबकि मंडलीय चिकित्सालय के पीछे पर्याप्त जगह है जहां पर एम्बुलेन्स को आसानी से खड़ा किया जा सकता है इनके इस तरह की लापरवाही से जनता के लोगों को काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है।

अपराधी शिक्षक गया जेल

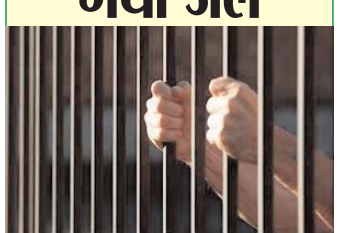

कोरांव प्रयागराज। कोराव तहसील के मलीपुर गांव के रहने वाले सिद्धार्थ सिंह व यथार्थ सिंह पुत्र त्रिभुवन नाथ सिंह ग्राम मलीपुर पोस्ट बड़ोखर थाना कोराव जनपद प्रयागराज मुकदमा संख्या 155 /20 20 धारा 147/ 148 149/ 323/452 /504 /506 /308 भारतीय दंड संहिता थाना कोराव जनपद प्रयागराज जिला जज प्रभारी माननीय एडीजे कक्ष संख्या 15 प्रयागराज ने दिनांक 25/06/25 को वादी मुकदमा के अधिवक्ता भूपेंद्र कुमार मिश्र को सुनकर भेजा जेल।

आरजी कर के बाद कोलकाता में फिर गैंगरेप

● अब लॉ स्टूडेंट बनी शिकार, पूर्व छात्र और ज्वाइंट मेंबर की करतूत से सनसनी।

प्रयागराज। आरजी कर में महिला डॉक्टर की गैंगरेप के बाद हत्या का मामला अभी जेहन से मिटा भी नहीं था कि पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता से एक और दिल दहला देने वाली घटना सामने आ गई. महानगर के सब-अर्बन एरिया में लॉ की एक छात्रा के साथ गैंगरेप करने का मामला सामने आया है. इस जघन?य कांड में एक पूर्व छात्र और कॉलेज के दो कर्मचारियों के शामिल होने की बात कही जा रही है।

चौंकाने वाली बात यह है कि इस वीभत?स घटना में सत?तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस (TMC) के एक मेंबर के भी इस घटना में संलिप्?त होने का आरोप है. लॉ स?टूडेंट के साथ गैंगरेप का मामला सामने आने के बाद सनसनी फैल गई है. आरजी कर मेडिकल कॉलेज में एक ट्रेनी डॉक?टर के साथ रेप के बाद उनकी हत?या कर दी गई थी. इस घटना से कोलकाता, पश्चिम बंगाल के साथ ही पूरा देश उबल पड़ा था. अब एक बार फिर से छात्रा के साथ गैंगरेप की घटना को अंजाम दिया गया है.

जानकारी के अनुसार, लॉ स्टूडेंट के साथ 25 जून 2025 को गैंगरेप की घटना को अंजाम दिया गया था। स्थानीय पुलिस ने आरोपियों की पहचान कर उसे हिरासत में ले लिया है. इनके खिलाफ एफआईआर दर्ज कर ली गई है इनकी पहचान मनोजीत मिश्रा, जैब अहमद और परमीत मुखोपाध?याय के तौर पर की गई है। स्थानीय पुलिस ने बताया कि मनोजीत और जैब अहमद को 26 जून को गिरफ्तार कर लिया गया था. इन्हें कोलकाता-42 क्षेत्र में स्थित सिद्धार्थ शंकर रॉय शिशु उद्यान (तालबगान क्रॉसिंग के पास) के सामने से पकड़ा गया था। इसके बाद परमीत को 27 जून को भी गिरफ्तार कर लिया गया. अधिकारियों ने बताया कि तीनों आरोपियों के मोबाइल फोन जब्त कर लिए गए हैं और मामले में आगे की छानबीन की जा रही है।

बताया जा रहा है कि आरोपियों ने पीड़िता को लॉ कॉलेज के रूम में बुलाया था. उन्हें यूनियन में जनरल सेक्रेटरी का पद देने का वादा किया और फिर उनके साथ रेप किया गया. साउथ कोलकाता लॉ कॉलेज की छात्रा की ओर से शिकायत देने के बाद हरकत में आई स?थानीय पुलिस ताबड़तोड़ एक?शन लेने लगी. दो दिनों के अंतराल में सभी आरोपियों को गिरफ्ता कर लिया गया है। दूसरी तरफ, डॉक्टरों ने गैंगरेप पीड़िता की स्थिति सामान्य बताया है. वह किसी भी तरह के खतरे से बाहर हैं। अधिकारियों शुरुआती जांच के आधार पर बताया कि पीड़िता संभवत- मुख्य आरोपी को पहचानती है। पीड़िता फर्स्ट ईयर की पहले सेमेस्टर की छात्रा बताई जा रही है।

लॉ स्टूडेंट से गैंगरेप करने की घटना सामने आने के बाद बंगाल की राजनीति एक बार फिर से गर्मा गई है. बीजेपी आईटी सेल के चीफ अमित मालवीय ने एक?स पर पोस्ट शेयर कर ममता सरकार पर हमला बोला है. उन्होंने कहा, 'भयानक! 25 जून को कोलकाता के उपनगर कस्बा में एक लॉ कॉलेज के अंदर एक महिला लॉ छात्रा के साथ

सामूहिक बलात्कार किया गया, जिसमें कोई और नहीं बल्कि एक पूर्व छात्र और कॉलेज के दो कर्मचारी शामिल थे।

चौंकाने वाली बात यह है कि रिपोर्ट बताती है कि इसमें एक टीएमसी सदस्य भी शामिल है. आरजी कर का खौफ अभी भी कम नहीं हुआ है और फिर भी बंगाल में इस तरह के जघन्य अपराध हर रोज बढ़ रहे हैं. ममता बनर्जी के शासन में पश्चिम बंगाल महिलाओं के लिए एक बुरा सपना बन गया है। बलात्कार एक आम त्रासदी बन गई है. भाजपा पीड़िता और उसके परिवार के साथ खड़ी है. हम दंड से बचने की इस संस्कृति को खत्म करने के लिए दृढ़ संकल्प हैं. हम तब तक चैन से नहीं बैठेंगे जब तक हर अपराधी को सजा नहीं मिल जाती।'

कार सवार ने आटो चालक को धमकाते हुए पीटा, भरे बाजार पत्रकार पर भी तान दी पिस्टल; मुकदमा दर्ज!

स्वतंत्र प्रभात

कौंधियारा। प्रयागराज। थाना क्षेत्र के जारी बाजार में गुरुवार की शाम उस वक्त हड़कंप मच गया जब साइड लेने के दौरान कार सवार ने आटो चालक को धमकाते हुए पीटने लगा और मौके से जा रहे क्षेत्र के एक पत्रकार ने बीच-बचाव किया तो कार सवार ने पत्रकार पर भरे बाजार पिस्टल तान दी और मारने की धमकी दे डाली। पीड़ित पत्रकार ने पुलिस को तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की। मामले में पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर छानबीन में जुट गई है। बताया गया कि कौंधियारा थाना क्षेत्र के गड्या कला जारी बाजार निवासी एक हिन्दी दैनिक समाचार पत्र के पत्रकार शैलेन्द्र कुमार गुप्ता उर्फ गोलू पुत्र स्व. बनवारी लाल ने कौंधियारा थाने में तहरीर देकर बताया कि गुरुवार को शाम करीब 8 बजे जारी बाजार से घर की ओर जा रहे थे, तभी रीवा राजमार्ग पर कार सवार दो व्यक्ति और टैम्पो चालक नोंक-झोंक किये थे, मामला पूछने पर उक्त कार जिस पर जिला जज न्यायालय लिखा था उक्त कार पर सवार अज्ञात महिला समेत एक अज्ञात पुरूष आकर पत्रकार से ही मार-पीट करने लगे। पीड़ित शैलेन्द्र कुमार गुप्ता ने बताया कि उक्त व्यक्ति के हाथ में पिस्टल थी, जो उसके सीने पर सटाकर गाली देते हुए जान से मारने की धमकी दिया। जिस पर वह पूरी तरह से भयभीत हो गया और लोगो के बीच बचाव से उसकी जान बच सकी। मामले में पीड़ित पत्रकार की तहरीर पर कौंधियारा पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी है।

झांसी में डिप्टी डायरेक्टर का बाबू रिश्वत लेते रंगेहाथ गिरफ्तार

● सरकारी कर्मचारी से मांगे थे 7 हजार।

फाइल रोकने से टालनी पड़ी बेटी की शादी।

स्वतंत्र प्रभात

प्रयागराज। गराज झांसी में विजिलेंस टीम ने उप शिक्षा निदेशक के बाबू (वरिष्ठ लिपिक) को 7 हजार की रिश्वत लेते रंगेहाथ गिरफ्तार किया है. बाबू ने सहायक लिपिक से जीपीएफ निकलवाने के एवज में रिश्वत ले रहा था। एक सहायक लिपिक ने अपनी बेटी की शादी के लिए जनरल प्रोविडेंट फंड (जीपीएफ) से धनराशि निकालने का आवेदन किया था. लेकिन आरोपी बाबू राकेश चंद्र शर्मा फाइल को बिना संस्तुति किए लगातार डेढ़ माह तक लटकाए रखा. पीड़ित कर्मचारी ने कई बार बाबू से निवेदन किया, लेकिन वह फाइल पास करने के एवज में 7 हजार रुपये की रिश्वत मांग रहा था।

एंटी करप्शन टीम के हेड उपनिरीक्षक ठाकुर दास ने बताया, माधोगढ़ उरई जालौन के रहने वाले राजकुमार सिंह सहायक लिपिक के पद पर बुंदेलखंड इंटर कॉलेज विरनपुरा जालौन में नियुक्त हैं। राजकुमार ने बताया था कि उसकी बेटी की शादी के लिए 16 लाख रुपये जीपीएफ से निकालने के लिए 16 मई की जालौन जिला विद्यालय निरक्षक को आवेदन दिया था। जिस पर कार्यवाही करते हुए उनके द्वारा उप शिक्षा निदेशक झांसी मंडल झांसी को भेज दिया गया.

उप शिक्षा निदेशक झांसी मंडल कार्यालय में तैनात लिपिक राकेश चंद्र शर्मा भुगतान करवाने के लिए 7 हजार रुपये रिश्वत की मांग की. इसपर लिपिक राकेश चंद्र शर्मा ने इसकी शिकायत झांसी एंटी करप्शन शाखा में की. टीम ने मामले की जांच में पाया की शिकायतकर्ता द्वारा की गई शिकायत बिल्कुल सही है। इसके बाद टीम ने जाल बिछाया।

सहायक लिपिक राजकुमार शर्मा को पैसे लेकर बाबू रमेश चंद्र शर्मा के पास बुलाया। एंटी करप्शन टीम प्लान के अनुसार लिपिक रमेश चंद्र शर्मा को कार्यालय परिसर में ही 7 हजार रुपये रिश्वत लेते हुए। रंगेहाथों पकड़ लिया। उपनिरीक्षक ठाकुर दास ने बताया कि रिश्वतखोर बाबू को पकड़ने के बाद सदर बाजार थाने में मामला दर्ज कराया गया है. इसके अलावा उसके बैंक खातों और प्रॉपर्टी की भी जांच की जा रही है। उन्होंने बताया कि शिकायतकर्ता लिपिक को जीपीएफ का पैसा समय पर न मिलने के कारण उसको अपनी बेटी की शादी की तारीख भी बदलनी पड़ी थी।

निगोहां पुलिस की संवेदनहीनता बेटे की पिटाई से घायल बुजुर्ग मां को थाने से लौटाया

● .....एसीपी से लगाई न्याय की गुहार।

स्वतंत्र प्रभात

निगोहां, लखनऊ। राजधानी लखनऊ के निगोहां थाने की पुलिस एक बार फिर सवालों के घेरे में है। थाना क्षेत्र के गांव सुखना खेड़ा कुसमौरा मजरा की बुजुर्ग महिला सुंदारा देवी अपने ही बेटे की दरिंदगी का शिकार होकर थाने पहुँचीं, लेकिन न्याय के बजाय उन्हें थाने से टालमटोल कर चलता कर दिया गया।पीड़िता का आरोप है कि उनका बेटा कैलाश, नशे की हालत में न केवल उनके साथ मारपीट और गाली-गलौज करता है, बल्कि 10 वर्षीय नातिन पर भी गलत नजर रखता है। दो दिन पहले कैलाश ने अपनी मां की बेरहमी से पिटाई की, जिससे वह बेहोश हो गई और ग्रामीणों की मदद से अस्पताल पहुँचाया गया।थाना प्रभारी अनुज कुमार तिवारी पर गंभीर आरोप जब सुंदारा देवी थाने पहुँचीं, तो थाना प्रभारी अनुज कुमार तिवारी ने उनकी लिखित शिकायत को पढ़ने के बजाय यह कहकर खारिज कर दिया कि, ÷इतना बड़ा-बड़ा क्यों लिखा है, यहीं थाने में नया एप्लीकेशन लिखवाओ तभी कार्रवाई होगी।÷

जब पीड़िता ने बयान बदलने से इनकार किया तो उन्हें यह कहकर चलता कर दिया गया कि, "कोई लड़का ऐसा नहीं करता।महिला की हालत गंभीर होने के बावजूद मेडिकल परीक्षण तक नहीं कराया गया, क्योंकि पुलिस का कहना था कि पहले "मारपीट की सही तहरीर दो", तभी मेडिकल होगा।

एसीपी ने दिलाया भरोसा, पर अभी भी डर में जी रहा है परिवार... पूरा मामला जब मोहनलालगंज सर्किल के एसीपी रजनीश वर्मा के संज्ञान में आया, तो उन्होंने पीड़िता से बात कर जांच और कार्रवाई का आश्वासन दिया। एसीपी का कहना है कि दोषी के खिलाफ सख्त कदम उठाए जाएंगे।हालांकि परिवार को एसीपी के भरोसे से थोड़ी राहत मिली है, लेकिन बुजुर्ग महिला और उसका परिवार अब भी अपनी जान-माल की सुरक्षा को लेकर डरे हुए हैं। गांव के लोगों का कहना है कि अगर पुलिस समय पर कार्रवाई करती तो मामला और गंभीर नहीं होता। ग्रामीणों ने थाना प्रभारी की भूमिका पर गंभीर सवाल उठाते हुए उच्चाधिकारियों से कार्रवाई की मांग की है।

जिलाधिकारी ने किया ईवीएम गोदाम का त्रैमासिक निरीक्षण

गाजीपुर। गाजीपुर 27 जून, 2025- अविनाश कुमार, जिलाधिकारी/ जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा जिला कार्यालय स्थित ईवीएम गोदाम का त्रैमासिक (आंतरिक) निरीक्षण किया गया। इस दौरान ईवीएम गोदाम को मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में खोला गया तथा ईवीएम/वीवीपैट मशीनों के रख रखाव एवं सुरक्षा व्यवस्था की विस्तृत समीक्षा की गई। इस अवसर पर विभिन्न अधिकारीगण एवं राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे, जिनमें दिनेश कुमार, अपर जिलाधिकारी (वि0 /रा0)/गाजीपुर, विपिन कुमार सिंह, सहायक आयुक्त एवं सहायक निबन्धक, सहकारिता गाजीपुर, देवी प्रसाद सिंह, प्रभारी सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी गाजीपुर, रविकान्त राय, (भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस) राजेश कुमार यादव (समाजवादी पार्टी), राजन कुमार प्रजापति (भारतीय जनता पार्टी), सुवाष राम सिपाही (बहुजन समाज पार्टी), जावेद अहमद (आम आदमी पार्टी) तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति शामिल

संक्षिप्त खबरें

कप्तानगंज में दो बाइकों की टक्कर, एक की मौत, दो घायल

बस्ती। बस्ती जिले के कप्तानगंज थाना क्षेत्र के सरैया मिश्र गांव के पास कप्तानगंज नगर रोड पर गुरुवार को आमने-सामने बाइक से हुई भिड़ंत में एक की मौत तथा दो गंभीर रूप से घायल हो गये है। नगर थाना क्षेत्र के मलिया चूहा गांव निवासी सुरेंद्र यादव पुत्र जगदीश यादव उम्र 30 वर्ष तथा विनोद पुत्र जैसराज उम्र 40 वर्ष एक ही बाइक से कप्तानगंज की तरफ जा रहे थे।विपरीत दिशा से आ रहे पल्सर सवार से आमने-सामने टक्कर हो गई जिससे सुरेंद्र यादव पुत्र जगदीश के सर में गंभीर चोट आने के कारण मौके पर ही मौत हो गई। वहीं विनोद पुत्र जैसराज को भी काफी चोटे आई हैं जिनका इलाज जिला अस्पताल में चल रहा है। जबकि पल्सर सवार भी गंभीर रूप से घायल हुआ है। थानाध्यक्ष सुनील गौड़ ने बताया कि मृतक के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है तथा घायलों को जिला अस्पताल में भर्ती कराया

मेधा की मांग, परिषदीय विद्यालयों के समायोजन पर लगे रोक

बस्ती। बस्ती जिले में परिषदीय विद्यालयों के समायोजन के विरोध में मंगलवार को मेधा पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता दीनदयाल त्रिपाठी के नेतृत्व में पार्टी नेताओं, कार्यकर्ताओं ने राष्ट्रपति को सम्बोधित ज्ञापन सी.आर.ओ. को सौंपा। मांग किया कि उत्तर प्रदेश की सरकार शिक्षा विरोधी इस निर्णय को तत्काल प्रभाव से वापस ले। ज्ञापन देने के बाद मेधा पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता दीनदयाल त्रिपाठी ने कहा कि शिक्षा, स्वास्थ्य और समान अवसर दिये जाने की जिम्मेदारी केन्द्र और राज्य सरकार की है। शिक्षा अमीरी, गरीबी के दो पाटों में पिस रही है। परिषदीय विद्यालयों में अब अधिकांश गरीबों के बच्चे पढते हैं। कहा कि सरकार को उन्हें बेहतर शिक्षा देकर सुयोग्य नागरिक बनाना था कहां स्कूल ही बंद करने का फरमान आ गया है। मेधा निरन्तर शिक्षा के सवाल पर संघर्षरत है। शिक्षा के बाजारीकरण और स्कूलों को बंद किये जाने के विरोध में चरणबद्ध आन्दोलन जारी रहेगा। आगामी 28 जून को बापू प्रतिमा के समक्ष एक दिवसीय उपवास कर सरकार से मांग किया जायेगा कि शिक्षा विरोधी अपने निर्णय को वापस ले। राष्ट्रपति को सम्बोधित ज्ञापन सौंपने वालों में मुख्य रूप से उमेश पाण्डेय 'मुन्ना', प्रमोद यादव, राहुल तिवारी, अंशू चौरसिया, ग्रीश चन्द्र गिरी, प्रतीक मिश्र, प्रशान्त मिश्र आदि शामिल रहे

ओ-लेवल व ट्रिपल-सी कम्प्यूटर कोर्स के लिए 14 जुलाई तक करें आवेदन

चित्रकूट - जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी रजनीश कुमार पांडेय ने बताया कि 12वीं पास बेरोजगार अभ्यर्थियों के लिए पिछड़ा वर्ग विभाग ओ-लेवल और ट्रिपल-सी कंप्यूटर कोर्स कराने जा रहा है। उन्होंने बताया कि 12वी पास पिछड़ा वर्ग के शिक्षित बेरोजगार युवक और युवतियों के हितों को ध्यान में रखते हुए विभाग की तरफ से ओ-लेवल और ट्रिपल-सी कंप्यूटर कोर्स के लिए आवेदन पत्र मांगे गए है, जिसकी अंतिम तिथि 14 जुलाई है। इन कंप्यूटर कोर्स का उद्देश्य बेरोजगार युवक-युवतियों को स्वरोजगार उपलब्ध कराना है। बताया कि अभ्यर्थी को अपने आवेदन के साथ सभी आवश्यक दस्तावेज ऑनलाइन अपलोड करने होंगे। इसके बाद आवेदन की दो प्रतिया डाउनलोड कर उसे समस्त अभिलेखों सहित 14 जुलाई की तक जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण कार्यालय विकास भवन में जमा करना होगा। जिसके बाद पात्र आवेदकों के आवेदन सत्यापित कर लॉक किए जाएंगे और त्रुटिपूर्ण अथवा अपात्र आवेदनों को अस्वीकृत किया जाएगा। इसके बाद प्रशिक्षणार्थियों की सूची तैयार कर संस्थावार एवं पाठ्यक्रमवार आवंटित लक्ष्य के अनुसार जनपद स्तर से अनुमोदन के बाद चयनित लाभार्थियों के नाम डिजिटली लॉक किए जाएंगे। इसके साथ ही चयनित आवेदकों की प्रतीक्षा सूची भी तैयार की जाएगी, जिसे जिला स्तरीय चयन समिति का अनुमोदन प्राप्त होगा।

मसालों की खेती से प्रदेश के किसानों की आय में हो रही है वृद्धि

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। भारत प्राचीन काल से ही मसालों की भूमि के नाम से जाना जाता रहा है। मसाला एक लो वॉल्यूम एवं हाई वैल्यू वाली फसल है। अंतर्राष्ट्रीय मानक संगठन के अनुसार विश्व के विभिन्न भागों में 109 से अधिक मसाला प्रजातियों की खेती की जाती है। भारत में भी विभिन्न प्रकार की मृदा एवं जलवायु होने के कारण 20 बीजीय मसालों सहित कुल 63 मसाला प्रजातियां उगाई जाती है। भारत विश्व में मसालों का सबसे बड़ा उत्पादक, उपभोक्ता एवं निर्यातक देश है। भारत के कुल मसाला उत्पादन का 80 से 90 प्रतिशत घरेलू माँग की पूर्ति में उपयोग होता है तथा उत्पादन का शेष भाग विश्व के लगभग 130 देशों में निर्यात होता है। वर्तमान में भारत में मसालों का उपभोग 3.25 किलोग्राम प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष है, जिसमें परिवार के कुल खाद्य का 4.4 प्रतिशत खर्च होता है। कुल कृषि निर्यात में मसालों की हिस्सेदारी 06 प्रतिशत है। कुल विभिन्न मसालों के निर्यात में मिर्च की हिस्सेदारी 42 प्रतिशत, बीजीय मसालों की 25 प्रतिशत, हल्दी 5 प्रतिशत, अदरक 4 प्रतिशत व अन्य मसालों की 7 प्रतिशत है। विश्व में मसालों की अनुमानित माँग वृद्धि 3.19 प्रतिशत है, जो की जनसंख्या वृद्धि दर से ठीक ऊपर है। उत्तर प्रदेश में किसानों को उत्पादकता बढ़ाने हेतु उन्नतशील बीज, उन्नत कृषि तकनीक के साथ साथ मसालों पर शोध एवं किसानों को प्रशिक्षण देते हुए मसाला उत्पादन में बढ़ोत्तरी की जा रही है। जिससे किसानों की आय में वृद्धि हो रही है।

उत्तर प्रदेश के कृषक खरीफ में हल्दी, अदरक, मिर्च एवं प्याज आदि की खेती करते है तथा रबी मौसम में धनिया, सौंफ, जीरा, मेथी, लहसुन, अजवाइन, कलौंजी एवं मंगरैल आदि की खेती करते हैं। प्रदेश में कृषि वैज्ञानिकों द्वारा अबतक विभिन्न मसाला फसलों की 11 प्रजातियों का विकास किया गया है, जिनमें हल्दी की 5 प्रजातियां विकसित की गयी है। जिनमें नरेन्द्र हल्दी- 1. नरेन्द्र हल्दी-2 नरेन्द्र हल्दी -3. नरेन्द्र हल्दी-98 नरेन्द्र सरयु है। धनियों की प्रजातियां में नरेन्द्र धनियां -1 व नरेन्द्र धनिया- 2 विकसित है। मेथी की 3 प्रजातियां विकसित की गई है।

हल्दी का कृमिनाशक गुण एवं पीलापन इसमे उपस्थित तत्व करक्यूमिन के कारण होती है। इसकी खेती के लिए गर्म एवं नम जलवायु के साथ साथ जीवाश्म युक्त दोगट एवं बलुई दोमट मृदा सर्वोत्तम रहती है। हल्दी की बुवाई उत्तर प्रदेश में कम एवं मध्य अवधि वाली किस्मों के लिए 15 मई से 15 जून तथा लंबी अवधि की किस्मों के लिए 15 जून से 30 जून तक का समय सर्वोत्तम है। हल्दी की खुदाई जब 6 से 9 महीने बाद जब पत्तियों पीली होकर सूखने लगे तभी करना चाहिए। अदरक उत्पादन में भारत विश्व में सबसे आगे है। अदरक का प्रयोग मसाले औषधीय तथा सामग्री के रूप में हमारे दैनिक जीवन में वैदिक काल से चला आ रहा है। खुशबू पैदा करने के लिये आचारों, चाय के अलावा कई व्यंजनों में अदरक का प्रयोग किया जाता है। सर्दियों में खाँसी जुकाम आदि में किया जाता है। अदरक का सोंठ के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। अदरक को सुखाकर 15 से 20 प्रतिशत सोंठ प्राप्त की जा सकती है। गर्म एवं आर्द्र जलवायु में अदरक की खेती अच्छी होती है।लहसुन भी किसानों को एक अधिक आय देने वाली महत्वपूर्ण मसाले की फसल है इसके रोजाना प्रयोग करने से पाचन क्रिया में सहायता एवं मानव रक्त में कोलेस्ट्राल की भी कमी होती है। इसका उपयोग भोजन के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के उत्पाद जैसे अचार, चटनी पाउडर एवं लहसुन पेस्ट बनाने में किया जाता है। उत्तर भारत में लहसुन की बुवाई अक्टूबर-नवंबर में की जाती है। प्रति हेक्टेयर 5-6 कुन्तल बीज की आवश्यकता होती है जिससे औसतन 150 से 200 कुन्तल प्रति हेक्टेयर उत्पादन प्राप्त हो जाता है।

मिर्च एक सर्वाधिक निर्यात की जाने वाली मसाला की फसल है, जिसका उपयोग प्रत्येक घरों में हरी एवं सूखी दोनों रूप में किया जाता है। मिर्च की खेती के लिए गर्म एवं आर्द्र जलवायु सबसे उपयोगी होती है। इसकी प्रजातियों का चुनाव बोने के उद्देश्य को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए जिससे अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सके। सभी बीजू मसाला की खेती रबी मौसम में (शरद ऋतु में) की जाती है तथा लाभ एवं लागत अनुपात 2.2 से अधिक होता है। उन्नत विधि से धनिया की खेती करने पर सिंचित क्षेत्र में 18 से 20 कुन्तल एवं बारानी खेती से 6 से 8 कुन्तल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त होती हैमेथी का प्रयोग सब्जियों एवं खाद्य पदार्थों में किया जाता है। औषधीय गुणों के कारण इसका उपयोग जोड़ों के दर्द निवारण, मधुमेह रोग एवं प्रसूता स्त्री के दुग्ध वृद्धि के लिए किया. जाता है। मेथी की खेती हेतु 20 से 25 किलोग्राम बीज एवं कसूरी मेथी की खेती के लिए 10 से 12 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर आवश्यकता होती है। इस प्रकार विधि से खेती करने पर देशी मेथी 15 से 20 कुन्तल एवं कसूरी मेथी 6 से 8 कुन्तल दाना (बीज) प्रति हेक्टेयर तथा पत्ती उत्पादन 70-80 कुन्तल प्रति हेक्टेयर प्राप्त हो जाती है। जीरा भी हमारी रसोई का एक अभिन्न घटक है। मसाला गुणों के साथ-साथ इसमें अनेक औषधीय गुण भी पाये जाते है. जिसके कारण इसका उपयोग पाचन वृद्धि, अतिसार से सुधार हेतु किया जाता है। उन्नत विधि से खेती करने पर 8 से 10 कुन्तल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त होती है। सौंफ का उपयोग मसाला, खाद्य एवं पेय पदार्थों में किया जाता है। औषधि गुणों के कारण इसका उपयोग खांसी में लाभ हेतु एवं बच्चों की पाचन विकार एवं अन्य रोग उपचार में किया जाता है। उत्पादन 20 से 25 कुन्तल प्रति हेक्टेयर प्राप्त होता है। अजवाइन भी भारतीय रसोई घर की एक प्रमुख मसाला फसल है। औषधि गुणों के कारण इसका उपयोग पाचन, वातालुलेमन, दुग्धवर्धक, कफ निष्कारक आदि के रूप में किया जाता है। सिंचित क्षेत्र में 12 से 15 कुन्तल एवं असिंचित क्षेत्र में 4-6 कुन्तल प्रति हेक्टेयर उत्पादन प्राप्त होता है।

मसालों की फसलें अन्य परम्परागत कृषि फसलों की अपेक्षा अधिक आय देने वाली होती हैं। प्रदेश में इनका मूल वर्धित उत्पाद बनाकर स्वरोजगार के साथ-साथ ग्रामीण एवं शहरी श्रमिकों को भी मसाला उद्योग में रोजगार उपलब्ध कराया जा रहा है। मसाला फसलें शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार एवं अधिक आय के सुअवसर प्रदान करने के कारण अत्यधिक आर्थिक समृद्धि का एक प्रमुख जरिया है, जिससे मसालों की खेती भारतीय अर्थव्यवस्था में और अधिक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। प्रदेश के किसानों की आय दोगुनी करने में मसालों की फसलें काफी लाभप्रद एवं सहायक सिद्ध हो रही है।

एक सप्ताह से नही हुआ मनरेगा कार्य

● 70 श्रमिक प्रतिदिन पूराना फोटो अपलोड कर लगाया जा रहा है मनरेगा में फर्जी हाजिरी लालपुर भुवनडीह का मामला

स्वतंत्र प्रभात

बलरामपुर । मनरेगा योजना से व्यापक स्तर पर धांधली रुकने का नाम नही ले रही है। विशुनपुर टनटनवां गांव में छः लोगों के जेल जाने के बाद भी कोई प्रभाव नही पड़ रहा है। इस दुस्साहस का क्या कारण हो सकता है यह भी एक खोज का विषय है। मामला पचपेड़वा विकास खण्ड के लालपुर भुवन डीह गांव से जुड़ा हुआ है जहां मीडिया टीम ने दि0 27-06-2025 को. मौके का मुआयना किया जिसमें ग्रामीणो ने बताया कि लगभग एक सप्ताह से कोई श्रमिक मनरेगा का कार्य नहीं किया है। जबकि पुराने फोटो को अपलोड कर के प्रतिदिन 70 श्रमिको का कार्य करना दर्शाया गया है। एक सप्ताह पूर्व थोड़ा-बहुत कराये गये कार्यों में भी 15 से 20 श्रमिक कार्य पर लगे थे परन्तु प्रधान सचिव व रोजगार सेवक। ने सांठ गांठ करके 70 श्रमिकों का कार्य। करना दशार्या गया है। इस तरह बड़े पैमाने या कुट रचना करके सरकारी धन को चूना लगा कर वंदर वांट किया जा रहा है। और वह भी तब जब पचपेडेवा विकास खण्ड के ही विशुनपुरटनटनवा गांव के में इसी योजना में गमन के अरोप में प्रधान प्रधान का पुत्र सचिव सहित छः लोग जेल भेज दिये गये। इसके बावजूद भ्रष्टाचार में आकंठ डूबे प्रधानों व अधिकारियों कर्मचारियों की आखें नही खुल रही है।

आज होगा व्यापारी कल्याण दिवस का आयोजन

स्वतंत्र प्रभात

चित्रकूट- राज्य कर उपायुक्त विक्रम अजीत ने बताया कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा दानवीर भामाशाह के जन्म दिवस को व्यापारी कल्याण दिवस के रूप में मनाये जाने का निर्णय लिया गया है। जिसका आयोजन 28 जून शनिवार को जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन की अध्यक्षता में कलेक्टरेट सभागार में किया जायेगा। जिसमें जनपद चित्रकूट के पांच बड़े करदाताओं को राज्य कर विभाग द्वारा मोमेण्टों व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया जायेगा। बताया कि इस कार्यक्रम में मानिकपुर विधायक अविनाश चन्द्र द्विवेदी, जिला पंचायत अध्यक्ष अशोक जाटव, जिला सहकारी बैंक अध्यक्ष पंकज अग्रवाल, भाजपा जिलाध्यक्ष महेन्द्र कोटार्य सहित अन्य जनप्रतिनिधि, अधिकारी मौजूद व व्यापारीगण आदि मौजूद रहेंगे।

नशे से मुक्ति के लिये चलाया गया जागरूकता अभियान

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। बस्ती जिले मेंअंतर्राष्ट्रीय मादक नशा निरोधक दिवस पर नशा मुक्ति केंद्र बस्ती (डी.डी.ए.सी) सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार द्वारा पोषित, कैम्पस राजेन्द्र हॉस्पिटल के कर्मचारियों ने जनपद के मुंडेरवा, जगदीशपुर, मेहारा, ओडवारा, बटेला,कड़र खास गाँव में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। लोगों को मादक नशा निरोधक हेतु ग्राम वासियों को जागरूक किया गया। प्रोजेक्ट डायरेक्ट शिल्पा यादव ने लोगों जागरूक करते हुये कहा कि कहा कि अंतरराष्ट्रीय नशा निरोधक दिवस का उद्देश्य नशीली दवाओं के दुरुपयोग और अवैध व्यापार के खिलाफ जागरूकता बढ़ाना है। यह समाज को नशे के दुष्प्रभावों से बचाने और स्वस्थ जीवन को प्रोत्साहित करने का अवसर प्रदान करता है। शिक्षा, जागरूकता और सामुदायिक सहयोग से हम नशामुक्त विश्व की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं।कार्यक्रम में संस्था त्रिवेणी मानव उद्यमिता विकास संस्थान के अध्यक्ष भारत भूषण श्रीवास्तव ने कहा कि नशा न केवल व्यक्ति के स्वास्थ्य को नष्ट करता है, बल्कि परिवार और समाज को भी प्रभावित करता है। इस दिवस पर हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम नशे से दूर रहकर एक स्वस्थ और सशक्त समाज का निर्माण करेंगे।नशा मुक्ति केंद्र के काउंसलर अमित रंजन ने बताया कि नशा मुक्ति के लिए सरकार और सामाजिक संगठनों को मिलकर प्रभावी कदम उठाने चाहिए। युवाओं को शिक्षा और रोजगार के अवसर प्रदान कर नशे की लत से बचाया जा सकता है।जागरूकता अभियान संचालित करने में नशा मुक्ति केंद्र के सोशल वर्कर उमेश श्रीवास्तव, योगा टीचर सुरेश श्रीवास्तव, काउंसलर शुभम यादव, प्रतिभा द्विवेदी, प्रियंका श्रीवास्तव, अजय कुमार, उर्मिला, शिवानी यादव, मुस्ताक खान, अनिल यादव,विनोद पटेल, संतोष, महेश, प्रदीप, आदि ने योगदान दिया।

अपहरण व लूटकांड का पर्दाफाश, थानाध्यक्ष भानु प्रताप सिंह की नेतृत्व में पुलिस ने 4 और अभियुक्तों को किया गिरफ्तार

● ग्रामीण बैंक के ब्रांच मैनेजर और फील्ड ऑफिसर अपहरण प्रकरण में बड़ी सफलता, लूट के पैसे और वाहन बरामद

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। बस्ती जिले में 21 जून को हुए चर्चित अपहरण और लूटकांड का पुलिस ने सफलतापूर्वक खुलासा कर लिया है। थाना परसरामपुर के थानाध्यक्ष भानु प्रताप सिंह के कुशल नेतृत्व में थाना वाल्टरगंज, स्वाट टीम और परसरामपुर पुलिस की संयुक्त कार्यवाही में इस घटना में शामिल चार और अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लिया गया है। यह गिरफ्तारी 27 जून की सुबह 3:30 बजे परसरामपुर क्षेत्र के कोहरायें इलाके से की गई। पुलिस ने अभियुक्तों के पास से लूट से जुड़ी नकदी, एक चार पहिया वाहन (थार), स्कूटी, सोने की चेन और अन्य सामग्री बरामद की। थानाध्यक्ष भानु प्रताप सिंह की रणनीतिक योजना से बड़ी सफलताइस पूरे ऑपरेशन की कमान संभाले हुए थानाध्यक्ष भानु प्रताप सिंह ने न केवल घटना की तह तक पहुंचने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, बल्कि गुप्त सूचनाओं और अभियुक्तों के नेटवर्क पर गहराई से निगरानी कर एक संगठित लूट व अपहरण गिरोह को पकड़ने में निर्णायक भूमिका निभाई। उनकी टीम की सतर्कता और त्वरित कार्यवाही के कारण ही इस गंभीर प्रकरण में निरंतर सफलता मिल रही है।

गिरफ्तार अभियुक्तों के नाम व विवरण

अभिमन्यु सिंह पुत्र धनंजय सिंह, निवासी लजधटा, थाना छावनी, राज चौधरी पुत्र ओमप्रकाश चौधरी, निवासी ककरहिया, थाना हरैया, राजकुमार यादव उर्फ निशोक यादव पुत्र रामउजागिर यादव, निवासी लोहरौली (जीतीपुर), थाना पैकोलिया, मनीष तिवारी उर्फ श्याम तिवारी पुत्र ओमप्रकाश तिवारी, निवासी रेवरादास, थाना हरैया

बरामदगी का ब्यौरा

लूट की नकदी 54,900, पीली धातु की चेन, काले रंग की थार कार, लाल रंग की स्कूटी (P 43 BC 2579)

घटना का पृष्ठभूमि

21 जून को ग्रामीण बैंक जीतीपुर के ब्रांच मैनेजर रवि तिवारी और उनके सहकर्मी फील्ड ऑफिसर रसिक भारती को बदमाशों ने बंदूक की नोंक पर अगवा कर लिया था। उन्हें सुनसान स्थान पर ले जाकर मारपीट, धमकी, लूटपाट की गई और सुबह 22 जून को उन्हें छोड़ा गया। घटना के संबंध में थाना परसरामपुर पर मु0अ0सं0 188/25, बीएनएस की धाराओं में मुकदमा पंजीकृत किया गया था।

पहले भी दो आरोपी पकड़े जा चुके हैं

इस मामले में पुलिस पहले ही 23 जून को दो आरोपियों को पुलिस मुठभेड़ में गिरफ्तार कर जेल भेज चुकी है।

गिरफ्तार अभियुक्तों का आपराधिक इतिहास

अभियुक्त मनीष तिवारी, राजकुमार यादव और अभिमन्यु सिंह के विरुद्ध बस्ती, अयोध्या और गोंडा जनपदों के विभिन्न थानों में गंभीर धाराओं में अनेक मुकदमे दर्ज हैं। इनमें अपहरण, हत्या का प्रयास, धोखाधड़ी, गैंगस्टर एक्ट और आबकारी अधिनियम शामिल हैं।

संयुक्त टीम में शामिल अधिकारी

थानाध्यक्ष परसरामपुर- भानु प्रताप सिंह, थानाध्यक्ष वाल्टरगंज- उमाशंकर तिवारी, स्वाट टीम प्रभारी- संतोष कुमार

अन्य पुलिसकर्मी- पवन तिवारी, रमेश कुमार, किशन सिंह, अभिलाष सिंह, सुभेन्द्र तिवारी, राघवेन्द्र दूबे, आनंद यादव, पंकज कुशवाहा, लवकुश सिंह, रोहित यादव, विद्यासागर यादव

निष्कर्ष

इस घटना में पुलिस की द्रुत, सटीक और रणनीतिक कार्यवाही ने यह साबित कर दिया कि अपराधियों को कानून के शिकंजे से बच निकलना आसान नहीं है। थानाध्यक्ष भानु प्रताप सिंह की नेतृत्व क्षमता और टीमवर्क की सराहना क्षेत्र में व्यापक रूप से हो रही है। पुलिस की यह मुहिम आने वाले समय में अपराधियों के मन में भय और आम जनता में विश्वास उत्पन्न करने का कार्य करेगी।

सोनभद्र के ओबरा में श्री अरुणेश्वर महादेव मंदिर तपस्वी भूमि पर भोलेनाथ की कृपा

स्वतंत्र प्रभात

सोनभद्र, उत्तर प्रदेश। सोनभद्र जिले के ओबरा में स्थित बाबा भूतेश्वर दरबार पंचमुखी गुफा में श्री अरुणेश्वर महादेव मंदिर भक्तों की आस्था का एक प्रमुख केंद्र है। यह पावन भूमि, जिसे तपस्वी भूमि के नाम से जाना जाता है, कई वर्षों से भगवान शिव की कृपा और शांतिपूर्ण आध्यात्मिक वातावरण के लिए प्रसिद्ध है। यहां आने वाले भक्तों को ऐसा प्रतीत होता है मानो स्वयं बाबा भोलेनाथ विश्राम कर रहे हों और सभी को अपनी कृपा शक्ति से आशीर्वाद दे रहे हों। स्थानीय किंवदंतियों और पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, श्री अरुणेश्वर महादेव मंदिर का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। यह वह स्थान माना जाता है जहाँ पुराने समय में कई साधु-संत और ऋषि-मुनियों ने कठोर तपस्या की थी। इन्हीं तपस्याओं के कारण यह भूमि एक अद्वितीय सकारात्मक ऊर्जा से ओत-प्रोत हो गई। झनकारों की मानें तो पहले यहां साधु संत भोलेनाथ की पूजा-आराधना करने के लिए गुप्तकाशी की तरह की गुफाओं में निवास करते थे। इसी पवित्रता और ऊर्जा के कारण भगवान शिव ने स्वयं इस स्थान को अपना निवास बनाया। जो इसके ऐतिहासिक महत्व को और भी बढ़ा देती है। भक्तों का अटूट विश्वास है कि श्री अरुणेश्वर महादेव बाबा भोलेनाथ साक्षात यहाँ विराजमान हैं और अपने भक्तों की हर मनोकामना पूरी करते हैं। मंदिर में प्रवेश करते ही श्रद्धालुओं को एक अद्भुत शांति और सकारात्मक ऊर्जा का अनुभव होता है। चाहे वह शारीरिक कष्ट हों, मानसिक तनाव हों या जीवन की कोई अन्य बाधा, भक्त मानते हैं कि बाबा की कृपा से सभी मुश्किलें दूर हो जाती हैं। विशेष रूप से सोमवार और महाशिवरात्रि जैसे पावन पर्वों पर यहां भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ता है, जो श्रद्धापूर्वक बाबा का जलाभिषेक कर उनका आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

श्री अरुणेश्वर महादेव मंदिर का वातावरण अत्यंत शांत और आध्यात्मिक है। यह शहरी कोलाहल से दूर एक आदर्श स्थान है, जहां आत्म-चिंतन और ध्यान किया जा सकता है। मंदिर परिसर में फैले हरे-भरे वृक्ष और फूलों के पौधे इस स्थान की सुंदरता में चार चांद लगाते हैं, जिससे भक्तों को प्रकृति के सान्निध्य में ईश्वर से जुड़ने का अवसर मिलता है। यहां आने वाला हर व्यक्ति मन की शांति और आंतरिक संतोष का अनुभव करता है।यह मंदिर केवल पूजा-अर्चना का स्थान ही नहीं, बल्कि सामुदायिक सद्भाव और एकजुटता का भी एक महत्वपूर्ण प्रतीक है। विभिन्न धर्मों और समुदायों के लोग यहां एक साथ आकर बाबा के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हैं। मंदिर प्रबंधन और स्थानीय समुदाय के लोग मिलकर इस पवित्र स्थान की देखरेख करते हैं और त्योहारों तथा विशेष आयोजनों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। यह आपसी सहयोग और भक्ति का एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करता है। निश्चित रूप से, श्री अरुणेश्वर महादेव मंदिर सोनभद्र के ओबरा में एक ऐसा दिव्य स्थान है जहाँ भगवान शिव की अनवरत कृपा बरसती है। यह तपस्वी भूमि आज भी अपनी दिव्य ऊर्जा और आध्यात्मिक महत्व के लिए जानी जाती है, जहाँ भक्तों को जीवन की आपाधापी से दूर एक शांत और पवित्र आश्रय मिलता है। क्या आपने कभी इस पवित्र स्थान का दर्शन किया है?

सोनभद्र ओबरा के ऐतिहासिक मनोरंजन क्लब बदहाली का शिकार, अब नशेड़ियों का अड्डा, जीर्णोद्धार की मांग तेज

स्वतंत्र प्रभात

सोनभद्र, उत्तर प्रदेश। अपनी पहचान, ऊर्जा की राजधानी और उत्तर प्रदेश की दूसरी सबसे बड़ी नगर पंचायत के रूप में विख्यात ओबरा, जहाँ सिंचाई विभाग, वन विभाग, तहसील और एक विश्वविद्यालय समेत कई इंग्लिश मीडियम स्कूल भी स्थित हैं, अब अपने बदहाल मनोरंजन क्लबों के कारण चर्चा में है। ओबरा परियोजना द्वारा विशेष रूप से शादी-विवाह और पार्टियों जैसे सामाजिक आयोजनों के लिए बनाए गए ये क्लब अब अपनी रौनक खो चुके हैं, और स्थानीय लोग इनके रखरखाव और सौंदर्यीकरण की जोरदार मांग कर रहे हैं।ओबरा परियोजना के तहत बनाए गए क्लब नंबर एक, दो, तीन और चार में से कुछ तो पूरी तरह से ध्वस्त हो चुके हैं। जो बचे हैं, उनकी हालत भी बेहद खराब है। इन क्लबों को कभी पंखे, साफ-सुथरे शौचालय और कुर्सियां जैसी सुविधाओं से लैस किया गया था ताकि यहाँ होने वाले आयोजनों में कोई कमी न रहे। हालाँकि, आज की तारीख में ये सभी सुविधाएँ नदारद हैं, और स्वच्छता के नाम पर तो यहाँ कुछ भी नहीं है। विशेष रूप से, क्लब नंबर चार, जिसे अवर अभियंता मनोरंजन केंद्र के रूप में भी जाना जाता है, की स्थिति सबसे खराब है। इसके शौचालय इतनी गंदगी से भरे हैं कि कोई भी व्यक्ति अंदर जाने से कतराएगा। न तो पंखे की सुविधा है और न ही साफ-सफाई का कोई इंतजाम। यह जर्जर हालत में पड़ा क्लब अपनी पुरानी पहचान को धुंधला कर रहा है। आपको बता दें कि ये क्लब अब नशेड़ी तत्वों का अड्डा बन चुके हैं। क्लब के आसपास के क्षेत्रों में शराब की खाली बोतलें बिखरी पड़ी मिलती हैं, जो यहाँ नशे के सेवन की पुष्टि करती हैं। स्थानीय निवासियों का कहना है कि ओबरा परियोजना नई सुविधाओं के विकास पर ध्यान दे रही है, लेकिन पुराने और ऐतिहासिक महत्व वाले इन क्लबों की अनदेखी की जा रही है। इन क्लबों को देखने या उनकी मरम्मत कराने वाला कोई नहीं है। पहले यहां बैठने की उचित व्यवस्था थी, पंखे काम करते थे और शौचालय भी स्वच्छ रहते थे। अब तो शौचालयों के अंदर पौधे उग आए हैं, दरवाजे टूट चुके हैं, और न तो डेंटिंग-पेंटिंग हुई है और न ही कोई नियमित रखरखाव।इन क्लबों ने अतीत में कई अधिकारियों और कर्मचारियों के बच्चों की शादियों के साथ-साथ अन्य महत्वपूर्ण सामाजिक और सामुदायिक कार्यक्रमों की मेजबानी की है। मंत्री से लेकर संतरी तक, कई गणमान्य व्यक्ति इन क्लबों में आयोजनों में शामिल हो चुके हैं। यह दर्शाता है कि इनका सामाजिक महत्व काफी अधिक रहा है। लाखों रुपये की लागत से बने ये क्लब अब रखरखाव के अभाव में जर्जर हो रहे हैं।स्थानीय लोगों और विभिन्न सामाजिक संगठनों ने एकजुट होकर इन क्लबों को नया रूप देने और फिर से विकसित करने की मांग की है। उनका तर्क है कि इन क्लबों के पुराने ढांचे अभी भी मजबूत हैं, बस उन्हें उचित रखरखाव और मरम्मत की आवश्यकता है। मेंटेनेंस के नाम पर कोई काम नहीं हो रहा है, जिससे दरवाजे और खिड़कियां भी जर्जर होती जा रही हैं। यह भी बताया गया कि इस क्लब में इतनी जगह है कि एक साथ 500 से अधिक लोगों को बिठाकर खाना खिलाया जा सकता है। स्थानीय लोगों का मानना है कि यदि इन क्लबों का उचित रखरखाव किया जाए, तो वे आज भी 50 वर्ष से भी अधिक समय तक चल सकते हैं। स्थानीय लोगों ने सवाल उठाया है कि जब 13,500 करोड़ रुपये की लागत से नई परियोजनाएँ तैयार की जा सकती हैं, तो क्या कुछ लाख रुपये खर्च करके इन क्लबों का सौंदर्यीकरण नहीं किया जा सकता? सामाजिक और स्थानीय लोगों की यह प्रबल इच्छा है कि इन क्लबों को एक सुंदर और सुसज्जित मनोरंजन केंद्र के रूप में परियोजना में शामिल किया जाए। उनका मानना है कि इनके सौंदर्यीकरण और विकास से ओबरा अपनी पुरानी चमक और सुविधाओं को फिर से हासिल कर सकेगा, जिससे स्थानीय निवासियों और आगंतुकों दोनों को लाभ होगा।

संक्षिप्त खबरें

मोहनलालगंज में हुई बीजेपी बूथ अध्यक्षों की बैठक

ब्लॉक प्रमुख ने आगामी कार्यक्रमों को लेकर तैयार की रणनीति, किया वृक्षारोपण

लखनऊ शुक्रवार को विधानसभा मोहनलालगंज में मंडल नगराम के ग्राम पंचायत बालसिंहखेडा में बीजेपी की बूथ संख्या 342,343 व 345 की बैठक हुई। बैठक में मुख्य अतिथि के तौर पर मोहनलालगंज के ब्लॉक प्रमुख व भाजपा लखनऊ के जिला उपाध्यक्ष ओम प्रकाश शुक्ला विन्धेश्वरी ने सभी बूथ अध्यक्षों को आगामी कार्यक्रम को लेकर विस्तृत चर्चा की साथ ही एक पेड़ माँ के नाम पर वृक्षारोपण कियो। बैठक में मंडल उपाध्यक्ष मान सिंह वर्मा, सेक्टर संयोजक रमेश कुमार वर्मा मंडल अध्यक्ष ओबीसी मोर्चा अनुपम वर्मा बूथ अध्यक्ष अनिल कुमार मिश्रा बूथ अध्यक्ष रमेश कुमार रावत सहित बूथ के सम्मानित ग्राम वासी उपस्थित रहे।

निर्माणाधीन योग मुद्रा का जिलाधिकारी ने किया निरीक्षण

सिद्धार्थनगर। नगर पालिका परिषद, सिद्धार्थनगर के अन्तर्गत साड़ी तिराहा पर निर्माणाधीन योग मुद्रा का जिलाधिकारी डा0 राजा गणपति आर0 द्वारा शुक्रवार को निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी डा0 राजा गणपति आर0 द्वारा देखा गया। जिलाधिकारी ने 05 जुलाई 2025 तक समस्त कार्य गुणवत्तापूर्ण कराने का निर्देश दिया। इसके साथ ही अशोक मार्ग पर लगे लाइट को 30 जून तक चालू कराने का निर्देश दिया।

आज होगा व्यापारी कल्याण दिवस का आयोजन

चित्रकूट: राज्य कर उपायुक्त विक्रम अजीत ने बताया कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा दानवीर भामाशाह के जन्म दिवस को व्यापारी कल्याण दिवस के रूप में मनाये जाने का निर्णय लिया गया है। जिसका आयोजन 28 जून शनिवार को जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन की अध्यक्षता में कलेक्टरेट सभागार में किया जायेगा। जिसमें जनपद चित्रकूट के पांच बड़े करदाताओं को राज्य कर विभाग द्वारा मोमेण्टों व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया जायेगा। बताया कि इस कार्यक्रम में मानिकपुर विधायक अविनाश चन्द्र द्विवेदी, जिला पंचायत अध्यक्ष अशोक जाटव, जिला सहकारी बैंक अध्यक्ष पंकज अग्रवाल, भाजपा जिलाध्यक्ष महेन्द्र कोटार्य सहित अन्य जनप्रतिनिधि, अधिकारी मौजूद व व्यापारीगण आदि मौजूद रहेंगे।

ओ-लेवल व ट्रिपल-सी कम्प्यूटर कोर्स के लिए 14 जुलाई तक करें आवेदन

चित्रकूट ब्यूरो: जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी रजनीश कुमार पांडेय ने बताया कि 12वीं पास बेरोजगार अभ्यर्थियों के लिए पिछड़ा वर्ग विभाग ओ-लेवल और ट्रिपल-सी कंप्यूटर कोर्स कराने जा रहा है। उन्होंने बताया कि 12वी पास पिछड़ा वर्ग के शिक्षित बेरोजगार युवक और युवतियों के हितों को ध्यान में रखते हुए विभाग की तरफसे ओ-लेवल और ट्रिपल-सी कंप्यूटर कोर्स के लिए आवेदन पत्र मांगे गए है, जिसकी अंतिम तिथि 14 जुलाई है। इन कंप्यूटर कोर्स का उद्देश्य बेरोजगार युवक-युवतियों को स्वरोजगार उपलब्ध कराना है। बताया कि अभ्यर्थी को अपने आवेदन के साथ सभी आवश्यक दस्तावेज ऑनलाइन अपलोड करने होंगे। इसके बाद आवेदन की दो प्रतिया डाउनलोड कर उसे समस्त अभिलेखों सहित 14 जुलाई की तक जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण कार्यालय विकास भवन में जमा करना होगा। जिसके बाद पात्र आवेदकों के आवेदन सत्यापित कर लॉक किए जाएंगे और त्रुटिपूर्ण अथवा अपात्र आवेदनों को अस्वीकृत किया जाएगा। इसके बाद प्रशिक्षणार्थियों की सूची तैयार कर संस्थावार एवं पाठ्यक्रमवार आवंटित लक्ष्य के अनुसार जनपद स्तर से अनुमोदन के बाद चयनित लाभार्थियों के नाम डिजिटली लॉक किए जाएंगे। इसके साथ ही चयनित आवेदकों की प्रतीक्षा सूची भी तैयार की जाएगी, जिसे जिला स्तरीय चयन समिति का अनुमोदन प्राप्त होगा।

बेटी को पीटते रहे दबंग, मां-बहन भी बनीं शिकार गांव में दहशत, न्याय की गुहार

स्वतंत्र प्रभात

मोहनलालगंज, लखनऊ। मोहनलालगंज थाना क्षेत्र के कनकहा गांव में बीते बुधवार की दोपहर एक युवती के साथ हुई मारपीट की घटना ने न केवल ग्रामीणों को झकझोर कर रख दिया, बल्कि महिलाओं की सुरक्षा को लेकर गहरे सवाल भी खड़े कर दिए हैं। गांव की बेटी को दिनदहाड़े पीटा गया और जब मां-बेटी बीच-बचाव करने पहुंचीं तो उन्हें भी बेरहमी से मारा गया। दबंगों ने जाते-जाते जान से मारने की धमकी भी दी।प्राप्त जानकारी के अनुसार, मोहनलालगंज थाना क्षेत्र कनकहा गांव की रहने वाली शालू पत्नी सुनील कुमार की पुत्री कु.राखी रावत बुधवार की दोपहर गांव के फहीम जनसेवा केंद्र के पास स्थित सरकारी इंडिया मार्का-2 हैंडपंप से पानी भर रही थी। तभी गांव के ही दबंग युवक शोएब और जोएब, पुत्रगण चाँद बाबू उर्फ कालिया, वहां पहुंचे और बिना किसी कारणवश राखी पर गालियां बरसाते हुए लात-घूंसों से हमला कर दिया।चीख-पुकार सुनकर राखी की मां शालू और बहन रुचि दौड़ीं तो हमलावरों ने उन दोनों को भी बुरी तरह पीट डाला। तीनों महिलाओं को गंभीर चोटें आई हैं। जब आसपास के ग्रामीण दौड़कर मौके पर पहुंचे तो आरोपी जान से मारने की धमकी देते हुए फरार हो गए।

घटना से आहत मां शालू का कहना है कि,हमने अपनी बेटियों को हिम्मत और भरोसे के साथ जीना सिखाया, लेकिन जब सार्वजनिक स्थल पर भी बेटियां सुरक्षित न हों, तो यह समाज की सबसे बड़ी हार है।इस घटना के बाद कनकहा गांव में आरोपियों के प्रति आक्रोश है। ग्रामीणों का कहना है कि अगर समय रहते पुलिस सक्रिय होती और आरोपितों पर सख्त कार्रवाई होती, तो ऐसी घटनाएं नहीं होतीं। ग्रामीणों ने एक स्वर में कहा कि गांव की बहन-बेटियां आज भयभीत हैं।मोहनलालगंज कोतवाली प्रभारी दिलेश कुमार सिंह का कहना है कि पीड़िता द्वारा लिखित शिकायत मिली है मामले की जांच की जा रही है। शीघ्र ही आवश्यक कार्रवाई की जाएगी। इस घटना को केवल एक व्यक्तिगत रंजिश या आपसी झगड़ा मानना आंख मूंद लेना होगा। यह मामला ग्रामीण महिलाओं की सार्वजनिक सुरक्षा, बेटियों की सामाजिक आज़ादी और प्रशासनिक तत्परता की कसौटी है। सवाल यह नहीं है कि पानी भर रही लड़की पर हमला क्यों हुआ, सवाल यह है कि ऐसा करने की किसी की हिम्मत कैसे हुई।

पति की गैरमौजूदगी में महिला पर हमला, धमकी देकर दबाव बनाने की कोशिश

● .....ग्रामीण परिवेश में महिला उत्पीड़न की एक और तस्वीर, थाने में दी गई तहरीर.....

स्वतंत्र प्रभात

नगराम। लखनऊ, ग्रामीण समाज में महिला सुरक्षा को लेकर चल रहे सवालों को एक बार फिर नगराम क्षेत्र की एक घटना ने उजागर कर दिया है। छंगा खेड़ा देवती गांव की रहने वाली लक्ष्मी देवी ने अपने पड़ोसी द्वारा घर में घुसकर मारपीट और जान से मारने की धमकी देने का आरोप लगाते हुए नगराम पुलिस तहरीर देते हुए कार्यवाही की मांग की है। बीते गुरुवार की शाम करीब जब लक्ष्मी देवी का पति राजेन्द्र घर पर नहीं था। इसी दौरान मोहल्ले के ही युवक नन्द किशोर ने महिला के घर में घुसकर गाली-गलौज शुरू कर दी। विरोध करने पर युवक ने महिला का मोबाइल छीनकर तोड़ दिया और फिर जमीन पर गिराकर बेरहमी से लात-घूंसे मारे। हमले में महिला का हाथ बुरी तरह जख्मी हुआ और पूरे शरीर पर गंभीर चोटें आई। इस घटना ने एक बार फिर यह साबित कर दिया कि ग्रामीण इलाकों में महिलाओं की सुरक्षा अब भी गंभीर सवालों के घेरे में है। पीड़िता के अनुसार जब वह आरोपित के घर शिकायत करने गई तो न केवल उसे डराया-धमकाया गया, बल्कि यह चेतावनी भी दी गई कि थाने गई तो तुम्हारे पति के हाथ-पैर तोड़ दिए जाएंगे।

यह सिर्फ एक महिला पर हमला नहीं, बल्कि पूरे समाज पर एक सवाल है क्या महिलाएं अपने ही घर में सुरक्षित हैं।क्या ग्रामीण क्षेत्रों में दबंग मानसिकता और जातिगत अहंकार के आगे कानून का डर शेष है।पीड़िता लक्ष्मी देवी की तहरीर पर नगराम पुलिस ने मुकदमा सुसंगत धाराओं में मामला दर्ज किया गया है।अब देखना यह है कि पुलिस इस मामले में कितनी तत्परता दिखाती है और क्या महिला को समय रहते न्याय मिल पाता है। इस घटना के बहाने यह भी जरूरी हो गया है कि ग्रामीण समाज में महिलाओं के प्रति सम्मान और सुरक्षा की भावना को मजबूत किया जाए। परिवार, समाज, पंचायत और प्रशासन को मिलकर यह सुनिश्चित करना होगा कि महिलाएं खुलकर अपनी बात कह सकें, बिना किसी डर के।

निगोहां में बैंक ऑफ बड़ौदा में एसी में लगी आग

स्वतंत्र प्रभात

निगोहां। लखनऊ, निगोहां कस्बे के मुख्य बाजार स्थित बैंक ऑफ बड़ौदा शाखा निगोहां में मंगलवार सुबह उस समय हड़कंप मच गया, जब बैंक परिसर में लगे एयर कंडीशनर एसी में अचानक शॉर्ट सर्किट के चलते आग लग गई। देखते ही देखते आग की लपटें उठने लगीं और पूरे बैंक में अफरा-तफरी का माहौल बन गया। मौके पर मौजूद बैंक कर्मियों और ग्राहकों ने तुरंत फायर सिलेंडर से आग पर काबू पाने की कोशिश शुरू कर दी।

घटना के समय बैंक में काफी संख्या में ग्राहक मौजूद थे। जैसे ही एसी से धुआं और आग की लपटें निकलती दिखीं, लोग घबरा कर बाहर की ओर दौड़ पड़े। बैंक के अंदर मौजूद बैंक मैनेजर अमित कुमार सहित अन्य स्टाफ ने तुरंत फायर सिलेंडर उठाकर आग बुझाने का प्रयास शुरू किया। वहीं, आस-पास के दुकानदारों और कुछ ग्राहकों ने भी बाल्टी में पानी और धूल फेंककर आग बुझाने में मदद की।करीब 20 मिनट की मशक्कत के बाद आग पर पूरी तरह से काबू पा लिया गया। गनीमत रही कि आग बैंक के अंदर तक नहीं पहुंची और समय रहते ही उसे रोक लिया गया, जिससे कोई बड़ा नुकसान नहीं हुआ।बैंक मैनेजर अमित कुमार ने बताया कि, बिजली के शॉर्ट सर्किट की वजह से बैंक परिसर के बाहर लगे एसी में आग लग गई थी। हमारी टीम ने तुरंत फायर सिलेंडर से आग बुझा ली। सौभाग्य से किसी प्रकार की जनहानि या संपत्ति को नुकसान नहीं हुआ है। इस घटना ने एक बार फिर से बैंक और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर अग्निशमन यंत्रों की उपयोगिता और तत्परता को साबित किया है। यदि समय रहते सूझबूझ न दिखाई जाती, तो बड़ा हादसा हो सकता था।

निगोहां थाने की संदिग्ध भूमिका फिर आई सामने, एसडीएम के आदेश के बाद भी पीड़िता को न्याय के पड़ रहा भटकना

स्वतंत्र प्रभात

निगोहां, लखनऊ। निगोहा क्षेत्र में पुलिस प्रशासन की भूमिका एक बार फिर सवालों के घेरे में है। पूरा मामला निगोहां थाना क्षेत्र के गांव नटोली का है, जहां की निवासी कृष्णावती पत्नी सत्रोहन लाल ने अपने देवर बुद्धिलाल पुत्र रामस्वरूप पर ज़मीन पर जबरन बोरिंग कराने और बंटवारे से इनकार करने का आरोप लगाया है।पीड़िता ने बताया कि जमीन संबंधी विवाद उपजिलाधिकारी न्यायालय में राजस्व संहिता की धारा 116 के तहत विचाराधीन है। बुद्धिलाल बनाम श्रीमती कृष्णावती आदि शीर्षक से मामला न्यायिक प्रक्रिया में है। ऐसे में किसी भी प्रकार की ज़मीन पर कार्यवाही कानून की अवहेलना मानी जाएगी।पीड़िता का कहना है कि जब उनके देवर द्वारा ज़बरदस्ती भूमि पर बोरिंग कराई जा रही थी, तब उन्होंने इसकी शिकायत उपजिलाधिकारी से की। एसडीएम ने निगोहां थाना को स्पष्ट निर्देश दिए कि विवादित भूमि पर किसी भी प्रकार की जबरन कार्यवाही को रोका जाए और शांति व्यवस्था बनाए रखी जाए।एसडीएम के स्पष्ट आदेश के बावजूद निगोहां थानाध्यक्ष अनुज कुमार तिवारी की भूमिका पीड़िता के लिए राहत भरी नहीं रही। पीड़िता का आरोप है कि थाने पर पहुंचने के बावजूद उनकी कोई सुनवाई नहीं की गई। पुलिस ने मौके पर जाकर न तो बोरिंग रुकवाई और न ही मामले की निष्पक्ष जांच की।

स्थानीय ग्रामीणों का कहना है कि निगोहां पुलिस प्रायः ज़मीन संबंधी विवादों में निष्पक्ष भूमिका नहीं निभाती। ऐसे मामलों में अक्सर फरियादी को थाने के चक्कर काटने पड़ते हैं और प्रभावशाली पक्ष की बात को ही तरजीह दी जाती है। कानूनी रूप से जब कोई भूमि विवाद न्यायालय में लंबित हो, तब किसी भी पक्ष द्वारा ज़बरन उस भूमि पर कोई निर्माण या बदलाव करना अवैध माना जाता है। ऐसे में पुलिस की यह जिम्मेदारी बनती है कि वह शांति व्यवस्था बनाए रखने के साथ- साथ न्यायिक प्रक्रिया का सम्मान करे।फिलहाल पीड़िता को उम्मीद है कि उच्चाधिकारियों द्वारा मामले की गंभीरता को समझते हुए उचित कार्यवाही की जाएगी और उन्हें न्याय मिलेगा। सवाल यह भी उठ रहा है कि एसडीएम के आदेशों की अवहेलना पर निगोहां थाने पर कोई प्रशासनिक कार्यवाही होगी या नहीं।

जन चौपाल का आयोजन कर डीएम व जनप्रतिनिधियों ने सुनी ग्रामीणों की समस्याएं

स्वतंत्र प्रभात

चित्रकूट ब्यूरो: दीनदयाल शोध संस्थान कृषि विज्ञान केन्द्र गनींवा के परमानंद आश्रम पद्धति विद्यालय के सभागार में शुक्रवार को जन चौपाल का आयोजन किया गया। जिसका शुभारंभ जनप्रतिनिधियों व अधिकारियों ने माता सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्ज्वलित कर किया। कार्यशाला में जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन ने कहा कि भारत रत्न नानाजी देशमुख द्वारा स्थापित दीन दयाल शोध संस्थान के कृषि विज्ञान केंद्र ने राष्ट्रीय स्तर पर कृषि के क्षेत्र में पहचान बनाई है। नानाजी ने कृषि सहित अन्य क्षेत्रों पर बहुत ही सराहनीय कार्य कराया है।

ग्रामीणों से कहा कि चौपाल में विभागों द्वारा जो कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी गई है, उनका लाभ लें। बताया कि विद्यालयों द्वारा एक जुलाई से स्कूल चलो अभियान चलाया जाएगा, इस अभियान के तहत सभी लोग अपने बच्चों को स्कूल पढ़ने अवश्य भेजें। बच्चे अगर शिक्षा ग्रहण करके आगे बढ़ेंगे तो परिवार सुखमय जीवन व्यतीत करेगा। कहा कि विभागों द्वारा लगाए गए स्टाल में ग्रामीण अपनी समस्याओं का निस्तारण कराएं। जिला स्तरीय अधिकारियों को निर्देश दिए कि स्टालों में ग्रामीणा द्वारा जो समस्याएं बताई गई है, उनका समय से निस्तारण कर समस्याग्रस्त व्यक्ति को जानकारी दें। दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव अभय महाजन ने कहा कि सभी ग्रामीण चौपाल में अपनी समस्याओं का समाधान करा लें। बताया कि परमानंद आश्रम पद्धति विद्यालय का निर्माण 1998-99 में उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री स्व कल्याण सिंह ने नानाजी के आग्रह पर अनुदान देकर कराया था। इस विद्यालय के कक्षा एक से पांच तक के बच्चे गांव में प्रशिक्षण देने जाते हैं। बताया कि इस विद्यालय को दसवीं कक्षा तक किया जा रहा है। बताया कि नानाजी देशमुख ने इस जगह का नाम गोस्वामी तुलसीदास परिसर रखा था, जिसके तहत यहां पर तुलसीदास की मूर्ति की भी स्थापना की जाएगी।

मुख्य विकास अधिकारी अमृतपाल कौर ने ग्रामीणों से कहा कि विभिन्न विभागों द्वारा संचालित योजनाओं का लाभ उठाएं। बताया कि आंगनवाड़ी केंद्र में जो धात्री महिलाएं, गर्भवती महिलाएं, किशोरियां तथा बच्चे पंजीकृत हैं, वह सभी लोग पोषण ट्रैकर एप पर फीडिंग अवश्य करा ले अन्यथा पोषाहार प्राप्त नहीं होगा। इसके साथ ही सीडीओं ने सभी को फैमिली आईडी बनवाने तथा किसान सम्मान निधि प्राप्त करने के लिए किसानों को भूलेख का अंकन करवाने को कहा।

इसके बाद जिलाधिकारी सहित सभी अधिकारियों ने तुलसी कृषि विज्ञान केंद्र गनींवा के विभिन्न प्रकल्पों का अवलोकन भी किया। इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष अशोक जाटव, ब्लॉक प्रमुख पहाड़ी सुशील द्विवेदी, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ भूपेश द्विवेदी, उप जिलाधिकारी राजापुर आरआर रमन, जिला विकास अधिकारी सत्यराम यादव, डीसी एनआरएलएम ओम प्रकाश मिश्रा, उपनिदेशक कृषि राजकुमार, जिला बेसिक शिक्षाधिकारी बीके शर्मा, जिला समाज कल्याण अधिकारी डॉ वैभव त्रिपाठी, जिला कार्यक्रम अधिकारी पीड़ी विश्वकर्मा, खंड विकास अधिकारी पहाड़ी संजय कुमार पांडेय, ग्राम प्रधान सत्येंद्र सिंह, सचिव नरेंद्र सिंह आदि मौजूद रहे।

समस्याओं का समाधान- सेल्स टैक्स बार एसोसिएशन की राज्यकर अधिकारियों के साथ सफल बैठक

स्वतंत्र प्रभात

लखनऊ। लखनऊ में सेल्स टैक्स बार एसोसिएशन के पदाधिकारियों और अधिवक्ताओं ने राज्यकर भवन में अतिरिक्त आयुक्त धनंजय शुक्ला और बृजेश कुमार मिश्रा से मुलाकात की। इस बैठक में एसपीएल-02 और वैट रिकवरी से जुड़ी समस्याओं के बारे में विस्तार से चर्चा की गई। अधिवक्ताओं ने अपनी समस्याओं को विस्तार से रखा और हर महीने अधिवक्ताओं की समस्याओं के समाधान के लिए बैठक आयोजित करने का सुझाव दिया। अतिरिक्त आयुक्त ने समस्याओं का समाधान करने का आश्वासन दिया और अधिवक्ताओं की मांगों को सुना।

इस बैठक में संघ के अध्यक्ष संजय मिश्र, महामंत्री शिव कुमार पांडेय और कई वरिष्ठ अधिवक्ता मौजूद थे। इनमें महेंद्र अवस्थी, अशोक राय, परितोष शर्मा, आनंद अवस्थी, अवधेश श्रीवास्तव, अजय अवस्थी, अखिलेश श्रीवास्तव, सुमित वर्मा और अखिलेश शुक्ला शामिल थे। सभी अधिवक्ताओं ने इस बैठक को सकारात्मक और फलदायी बताया। इस सफल बैठक से अधिवक्ताओं को अपनी समस्याओं के समाधान की उम्मीद जगी है और वे अपने कार्यों को और भी प्रभावी ढंग से करने के लिए प्रेरित हुए हैं। बैठक के बाद अधिवक्ताओं ने कहा कि राज्यकर अधिकारियों के साथ इस तरह की बैठक से समस्याओं का समाधान होने की संभावना बढ़ जाती है। इससे अधिवक्ताओं और राज्यकर अधिकारियों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित होगा और समस्याओं का समाधान तेजी से होगा। इस बैठक के बाद अधिवक्ताओं में एक सकारात्मक संदेश गया है और वे अपने कार्यों को और भी उत्साह से करने के लिए तैयार हैं।

बोरीवली एमएचबी पुलिस का धमाका- मात्र 72 घंटे में 13 किलो सोना बरामद, पिता-पुत्र समेत तीन गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात

रिपोर्ट रामकृष्ण मिश्रा

मुंबई- मुंबई पुलिस ने एक बार फिर अपनी चुस्त कार्रवाई और तकनीकी दक्षता का परिचय देते हुए एक बड़ी चोरी की वारदात को बेनकाब कर दिया है। बोरीवली स्थित एमएचबी कॉलोनी पुलिस ने महज 72 घंटे में 13 किलो सोने की चोरी की गुत्थी सुलझाते हुए तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। जब्त सोने की कीमत लगभग 13 करोड़ रुपये आंकी गई है। इस सनसनीखेज मामले में गिरफ्तार किए गए आरोपियों की पहचान जिग्नेश कुचड़िया (19), उसके पिता नाथाभाई कुचड़िया और दोस्त यश जीवाभाई के रूप में हुई है। तीनों आरोपी गुजरात के रहने वाले हैं और चोरी के बाद वहीं फरार हो गए थे।

कैसे हुई चोरी?

जांच में सामने आया है कि जिग्नेश राजस्थान की एक ज्वेलरी कंपनी में कार्यरत था और 20 जून को मुंबई आया था। जब उसका सहकर्मी किसी कारणवश फ्लैट से बाहर गया हुआ था, तब जिग्नेश ने मौके का फायदा उठाते हुए वहां से बड़ी मात्रा में सोना पार कर दिया। चोरी के बाद उसने अपने पिता की मदद ली और महिंद्रा थार गाड़ी से बोरीवली के संजय गांधी नेशनल पार्क क्षेत्र से सीधे गुजरात की ओर रवाना हो गया।

पुलिस की तेजी और तकनीक का कमाल

पुलिस उपायुक्त आनंद भोइते के मार्गदर्शन में, एमएचबी पुलिस स्टेशन के वरिष्ठ निरीक्षक गणेश पवार व उनकी टीम ने त्वरित कार्रवाई करते हुए सीसीटीवी फुटेज, तकनीकी साक्ष्य और मोबाइल ट्रैकिंग के जरिये आरोपियों की लोकेशन का पता लगाया और गुजरात में दबिश देकर उन्हें धर-दबोचा। तीनों आरोपियों ने पूछताछ में अपराध स्वीकार कर लिया है। फिलहाल पुलिस चोरी किए गए 13 किलो सोने को पूरी तरह बरामद करने की प्रक्रिया में लगी है।

पुलिस को मिली बड़ी सफलता

इस कामयाबी पर पुलिस विभाग ने एमएचबी पुलिस टीम की सराहना की है। मुंबई जैसे महानगर में इस प्रकार की त्वरित कार्रवाई से पुलिस की सक्रियता और तकनीकी क्षमताओं पर एक बार फिर मुहर लग गई है। इस घटना ने न केवल मुंबई पुलिस की कार्यकुशलता को उजागर किया है, बल्कि यह भी साबित कर दिया है कि अपराध कितना भी बड़ा क्यों न हो, कानून से बचना नामुमकिन है।

मोहर्रम को लेकर मोहनलालगंज पुलिस सतर्क संवेदनशील क्षेत्रों में फ्लैग मार्च, ड्रोन कैमरे से रखी जा रही निगरानी

● .....पुलिस का सख्त संदेश अमन में खलल बर्दाश्त नहीं, ड्रोन से निगरानी, हर गतिविधि पर पैनी नजर।

.....चेयरमैन प्रतिनिधि सत्यम ने कहा पुलिस की तैयारी सराहनीय।

स्वतंत्र प्रभात

मोहनलालगंज। लखनऊ, मोहर्रम पर्व के दृष्टिगत क्षेत्र में अमन-चैन व शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए मोहनलालगंज पुलिस पूरी तरह मुस्तैद है। रविवार को कोतवाली प्रभारी दिलेश सिंह के नेतृत्व में पुलिस बल ने संवेदनशील मऊ गांव में फ्लैग मार्च किया। इस दौरान सुरक्षा व्यवस्था को और अधिक पुख्ता बनाने के लिए ड्रोन कैमरे से पूरे क्षेत्र की निगरानी की गई।फ्लैग मार्च के दौरान पुलिस ने मऊ गांव के भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों और प्रमुख मार्गों पर पैदल गश्त करते हुए हर गतिविधि पर नजर रखी।

कोतवाली प्रभारी ने स्थानीय नागरिकों से शांति, सौहार्द और सहयोग बनाए रखने की अपील करते हुए चेताया कि "किसी भी प्रकार की अफवाह, झगड़ा या उपद्रव की स्थिति को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। कानून तोड़ने वालों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी।स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने भी की सराहना नगर पंचायत मोहनलालगंज के चेयरमैन प्रतिनिधि व व्यापार मंडल अध्यक्ष अजय पांडेय 'सत्यम' ने फ्लैग मार्च के दौरान पुलिस की तैयारी को लेकर प्रसन्नता जताई। उन्होंने कहा पुलिस प्रशासन की यह सतर्कता प्रशंसनीय है। ड्रोन कैमरे से निगरानी और फ्लैग मार्च से आम नागरिकों को सुरक्षा और भरोसे का अहसास हुआ है। मोहर्रम के दौरान सभी नागरिकों को प्रशासन का पूर्ण सहयोग करना चाहिए।"

शिल्पकारों को दी गई आधुनिक पैकेजिंग तकनीक की जानकारी

चित्रकूट ब्यूरो: उत्तर प्रदेश सरकार के एक जनपद एक उत्पाद (ओडीओपी) परियोजना के अंतर्गत धर्मनगरी स्थित सीतापुर वुडन टॉयज क्लस्टर में शुक्रवार को दो दिवसीय पैकेजिंग कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। जिसमें शिल्पकारों को आधुनिक पैकजिंग तकनीकों के बारे में बताया गया। कार्यशाला में भारतीय पैकेजिंग संस्थान (आईआईपी) के विशेषज्ञ सौरभ त्रिपाठी ने शिल्पकारों को आधुनिक एवं टिकाऊ पैकेजिंग तकनीकों, ब्रांडिंग के महत्त्व और बाजार में प्रतिस्पर्धात्मक लाभ के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। बताया कि कार्यशाला का उद्देश्य स्थानीय उद्यमियों को वैश्विक स्तर की पैकेजिंग तकनीकों से अवगत कराना एवं उनके उत्पादों को राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय बाजारों के लिए अधिक उपयुक्त बनाना है। ओडीओपी कंसल्टेंट साकेत चौधरी ने बताया कि इस प्रकार की कार्यशालाएं शिल्पकारों के लिए तकनीकी उन्नयन, बाजार की समझ और उद्यमिता विकास में अत्यंत सहायक सिद्ध हो रही हैं। यह पहल ओडीओपी योजना को जमीनी स्तर पर सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। बताया गया कि कार्यशाला के दूसरे दिन हैंड्स-ऑन डेमो, प्रोटोटाइप पैकेजिंग डिजाइन और फीडबैक सत्र आयोजित किए जाएंगे।

स्वतंत्र प्रभात
ब्रेकिंग न्यूज़

ट्रम्प शांति दूत हैं या युद्ध दूत ?

इस साल जनवरी के महीने में डोनाल्ड ट्रम्प खुद को 'शांति दूत' बताकर सत्ता में लौटे थे लेकिन अब उन्होंने ईरान और इजराइल के बीच जटिल संघर्ष में अमेरिका को शामिल करने का कदम उठाया है। पद संभालने के बाद से ट्रम्प मध्य पूर्व में शांति लाने में सफल नहीं हो पाए हैं। अब वह एक ऐसे क्षेत्र की अगुआई कर रहे हैं जो और बड़े युद्ध की कगार पर है और इसमें अमेरिका एक सक्रिय भागीदार है। पाकिस्तान के कुछ नेताओं और प्रमुख हस्तियों ने ईरान के तीन परमाणु केंद्रों पर अमेरिका के हमले के बाद सरकार से 2026 के नोबेल शांति पुरस्कार के लिए राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के नाम की सिफारिश करने के अपने फैसले पर पुनर्विचार करने को कहा है। सरकार ने शुक्रवार को एक आश्चर्यजनक कदम उठाते हुए घोषणा की थी कि वह हाल में भारत-पाकिस्तान संघर्ष के दौरान शांति प्रयासों के लिए ट्रम्प के नाम की सिफारिश इस प्रतिष्ठित पुरस्कार के लिए करेगी। उप प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री इशाक डार के हस्ताक्षर वाला अनुशंसा-पत्र नॉर्वे में नोबेल शांति पुरस्कार समिति को भेजा जा चुका है लेकिन अमेरिका द्वारा ईरान के फोर्दो, इस्फहान और नतांज परमाणु केन्द्रों पर हमले किए जाने के बाद इस फैसले को लेकर आपत्तियां आने लगी हैं। ट्रम्प की हाल में पाकिस्तान के सेना प्रमुख फील्ड मार्शल आसिम मुनीर के साथ बैठक और दोनों के साथ में भोजन करने से 'पाकिस्तानी शासकों को इतनी खुशी हुई' कि उन्होंने अमेरिकी राष्ट्रपति को नोबेल पुरस्कार के लिए नामित करने की सिफारिश कर दी। 'चूंकि ट्रम्प अब संभावित शांति दूत नहीं रह गए हैं, बल्कि एक ऐसे नेता हैं जिन्होंने जानबूझकर एक अवैध युद्ध छेड़ दिया है, इसलिए पाकिस्तान सरकार को अब नोबेल पुरस्कार के लिए उनके नाम की सिफारिश पर पुनर्विचार करना चाहिए, उसे रद्द करना चाहिए।÷ ट्रम्प ने दावा किया है कि उन्होंने भारत-पाकिस्तान युद्ध को रोकने में अहम भूमिका निभाई, वहीं भारत ने आधिकारिक रूप से इस बात को खारिज कर दिया। भारत सरकार का कहना था कि पाकिस्तान और भारत के बीच कोई भी महत्वपूर्ण शांति प्रयास भारतीय कूटनीति और अन्तर्राष्ट्रीय दबावों के कारण हुए थे, न कि यह ट्रम्प की पहल से हुए। वहीं पाकिस्तान ने तो ट्रम्प को नोबेल पुरस्कार देने का प्रस्ताव तक रख दिया जो एक राजनीतिक मज़ाक जैसा प्रतीत होता है क्योंकि ट्रम्प की भूमिका को लेकर कोई ठोस तथ्य मौजूद नहीं थे। यदि राष्ट्रपति ट्रम्प वाकई 'शांति दूत' हैं तो फलस्तीन के गाजा में हमले अब भी जारी क्यों हैं? वह रूस-यूक्रेन युद्ध समाप्त क्यों नहीं करवा पाए? यह तो ट्रम्प का मुख्य चुनावी मुद्दा था। इराक, सीरिया, लीबिया, लेबनान, यमन, अफगानिस्तान आदि देशों में अमरीका की युद्धबाज के तौर पर और खुद राष्ट्रपति ट्रम्प की क्या भूमिका रही है? मौजूदा इजराइल-ईरान युद्ध को ही लें। बीते 10 दिन से भीषण हमले जारी हैं। करीब 700 मौतें हो चुकी हैं। ईरान के 12 से अधिक सैन्य जनरल मार दिए गए हैं। परमाणु वैज्ञानिक भी मारे गए हैं। कितनी इमारतें और प्रतिष्ठान खंडहर कर दिए गए हैं, उनका डाटा अभी उपलब्ध नहीं है। राष्ट्रपति ट्रम्प कहते हैं कि वह इजराइल को युद्ध छोड़ने को नहीं कहेंगे। यह कौनसा शांतिकर्म है? ट्रम्प बार-बार बयान बदल रहे हैं। अमरीका युद्ध में संलिप्त भी है और राष्ट्रपति ट्रम्प ने दो सप्ताह के बाद कोई फैसला लेने की बात कही है। वह दावा करते रहे हैं कि ईरान परमाणु बम बना रहा है, जबकि उनकी सरकार में राष्ट्रीय खुफिया निदेशक तुलसी गबार्ड ने कहा है कि ईरान का परमाणु कार्यक्रम 2003 में ही बंद करा दिया गया था, लिहाजा ईरान परमाणु बम कैसे बना सकता है? ट्रम्प ने उनके बयान को खारिज कर दिया, तो तुलसी को भी सफाई देनी पड़ी। यदि ट्रम्प वाकई 'शांति दूत' हैं तो उनका परमाणु बम से क्या लेना-देना? उनके प्रयास होने चाहिए कि युद्ध अविलंब खत्म हो लेकिन अमरीका की नीयत के मद्देनजर रूस और चीन को चेतावनी देनी पड़ रही है कि अमरीका युद्ध में घुसने की कोशिश न करे। ट्रम्प ने फिलिस्तीन के मुद्दे पर इज़राइल के पक्ष में कई फैसले लिए, जिसमें यरूशलम को इज़राइल की राजधानी के रूप में मान्यता देना और फिलिस्तीनियों के खिलाफ आर्थिक प्रतिबंध लागू करना शामिल था। इससे मध्य पूर्व में और तनाव बढ़ा। जबकि मानवता कहती है कि उन्हें फिलिस्तीनी निर्दोषों के नरसंहार पर बोलना था, वे निष्पक्ष नहीं रहे और फिलिस्तीन को धमकाते रहे। 2011 में लीबिया में सैन्य हस्तक्षेप किया गया जिससे वहां की सरकार गिर गई और देश अस्थिर हो गया। यह कार्रवाई भी उनकी शांति की नीति के खिलाफ मानी जा सकती है। ट्रम्प के शासन में कई देशों के साथ संघर्ष हुए, जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण उदाहरण ये हैं - ट्रम्प ने चीन के खिलाफ ट्रेड वार शुरू किया जिससे वैश्विक अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक असर पड़ा। उन्हीं ने कई देशों, विशेषकर यूरोपीय देशों, जापान और कनाडा पर उच्च टैरिफ्स लगाए। इस नीति से वैश्विक व्यापार में अस्थिरता बढ़ी। राष्ट्रपति ट्रम्प का नोबेल पुरस्कार के लिए दर्द बार-बार बयां हो रहा है कि वह कितना, कुछ भी कर लें लेकिन उन्हें नोबेल शांति पुरस्कार नहीं मिलेगा। उनकी यह छटपटाहट इसलिए भी घनीभूत होती है, क्योंकि 2009 में तत्कालीन अमरीकी राष्ट्रपति बराक ओबामा को नोबेल शांति पुरस्कार दिया गया था। डोनाल्ड ट्रम्प की नोबेल शांति पुरस्कार पाने की इच्छा पर दुनियाभर के राजनयिक हलकों और मानवाधिकार संगठनों में मिश्रित लेकिन अधिकतर नकारात्मक प्रतिक्रियाएं आई हैं। ब्रिटेन, जर्मनी और कनाडा जैसे देशों के विश्लेषकों का मानना है कि ट्रम्प का ट्रैक रिकॉर्ड संघर्ष और टकराव से भरा हुआ है। मानवाधिकार कार्यकर्ताओं ने ट्रम्प की "नोबेल चाहत" को "अन्तर्राष्ट्रीय शांति के साथ मज़ाक" कहा है। भारत में सोशल मीडिया पर भी इस पर मीम्स और तंज की बाढ़ आ गई है, जहां यूजर्स ने ट्रम्प के भारत-पाक शांति दावों को 'राजनीतिक नौटंकी' करार दिया।

छत्तीसगढ़ी भाषा-साहित्य के वैश्विक पर्याय थे पद्मश्री डॉक्टर सुरेंद्र दुबे, नमन

गुदगुदाता हुआ हास्य, तीक्ष्ण व्यंग्य, अद्भुत रचनात्मक शैली के धनी अंतर्राष्ट्रीय हास्य कवि पद्मश्री डॉक्टर सुरेंद्र दुबे सबको रोता, बिलखता और आंसुओं से भीगता हुआ छोड़ गए। उनका आसामयिक निधन संपूर्ण साहित्य जगत के लिए अपूर्णीय क्षति है। अपनी स्वयं की मृत्यु पर हास्य पैदा करने वाले और हास्य व्यंग में टाइगर अभी जिंदा है कहने वाले हास्य के शिखर पुरुष व्यंग्य के पुरोधा, छत्तीसगढ़ी भाषा-साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर पद्मश्री डॉ सुरेंद्र दुबे जी के निधन से साहित्य जगत स्तब्ध है। उनकी जीवन शैली ऊर्जा और साहित्य के प्रति जिजीविषा सदैव प्रेरणा का स्रोत रहेगी। उन्होंने छत्तीसगढ़ी भाषा साहित्य और बोली को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गगनचुंबी ख्याति प्रदान की है। डॉ सुरेंद्र दुबे जितने उच्च कोटि के कवि थे उतने ही संवेदनशील, सीधे, स्वाभिमानी और गरीब तबके के व्यक्तियों के बड़े हिमायती भी थे। मुझे उनके साथ 15 से 20 मंचों में काव्य पाठ का प्रदेश और देश के विभिन्न स्थानों में सानिध्य प्राप्त हुआ है। वे मुझसे हमेशा अपने छोटे भाई की तरह ही व्यवहार किया करते थे और पूरे समय हास्, परिहास, व्यंग एवं मजाक ही किया करते थे। उनकी श्रीमती शशि दुबे मेरे मामा जी की सुपुत्री हैं और रिश्ते में मेरी बड़ी बहन लगती है इस तरह मेरा डॉ सुरेंद्र दुबे जी से रिश्ता साले- जीजा का बड़ा नाजुक और मजाक का ही हुआ करता था। वे मंच में संचालन करते हुए भी मुझ पर मेरा पूरा नाम लेकर व्यंग कसा करते थे और उस हास परिहास में श्रोताओं के साथ कवियों को भी काफी आनंद आया करता था, यह मेरा सौभाग्य था कि वह मुझे इस काबिल समझते थे। छत्तीसगढ़ी भाषा के हास्य व्यंग्य के पुरोधा कवि डॉ सुरेंद्र दुबे छत्तीसगढ़ एवं देश के कवि सम्मेलन की आन बान और शान रहे, छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर के कवि सम्मेलनों में डॉक्टर सुरेंद्र दुबे की उपस्थिति अति अनिवार्य होती थी जब भी कोई कवि मंच में दर्शकों द्वारा नापसंद या खारिज किया जाता था तब डॉक्टर सुरेंद्र दुबे ही थे जो मंच को और दर्शकों को पूरी तरह संभाल कर गुदगुदा कर हास्य पैदा कर देते थे जिससे कवि सम्मेलन पूरी तरह सफल हो जाया करता था। व्यक्तिगत तौर पर मैं डॉक्टर सुरेंद्र दुबे जी की कविताओं और उनकी मेहनत लगन तथा ईमानदार व्यक्तित्व का बहुत बड़ा प्रशंसक और अनुयाई रहा हूं। उनका अचानक स्वर्ग सिधार जाना व्यक्तिगत तौर पर मेरे लिए बहुत बड़ी अपूर्णीय क्षति है। छत्तीसगढ़ का हर कवि सम्मेलन उनके बिना अधूरा और अपूर्ण हुआ करता था उनकी हास्य कविताओं से छत्तीसगढ़ प्रदेश का हर नागरिक और देश का हर व्यक्ति बड़ा कायल था। उनकी इस प्रतिभा से प्रभावित होकर उन्हें 2010 में भारत सरकार ने पद्मश्री सम्मान से विभूषित किया था। निश्चित तौर पर वे इस सम्मान के सच्चे और सही हकदार थे। देश और प्रदेश के हर कवि सम्मेलन में उनकी उपस्थिति कवि सम्मेलन की सफलता की गारंटी और पर्यायवाची थी। 72 वर्षीय हास्य सम्राट कवि डॉक्टर सुरेंद्र दुबे ने 26 जून को शाम 4:00 बजे अपनी अंतिम सांसें ली और स्वर्ग में देवताओं को हंसाने के लिए स्वर्ग सिधार गए। 27 जून 25 को दोपहर बहुत बड़ी संख्या में उनके प्रशंसको की उपस्थिति में उनका अंतिम संस्कार किया गया। उनके निधन पर छत्तीसगढ़ के राज्यपाल माननीय रामेन डेका जी ने श्रद्धांजलि अर्पित की है साथ ही माननीय मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने गहरा शोक व्यक्त करते हुए दिवंगत डॉक्टर सुरेंद्र दुबे की आत्मा की शांति तथा शोक संतृप्त परिजनों को दुख सहने के लिए शक्ति और संबल की प्रार्थना की। उन्होंने पद्मश्री डॉक्टर सुरेंद्र दुबे के निधन को साहित्य जगत की अपूर्णीय क्षति बताया उन्होंने आगे कहा डॉ दुबे जी की जीवंतता, ऊर्जा और साहित्य के प्रति समर्पण सदैव प्रेरणा का स्त्रोत रहेगा। प्रख्यात अंतरराष्ट्रीय कवि डॉ कुमार विश्वास ने भी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स में डॉक्टर सुरेंद्र दुबे के साथ अपनी तस्वीर साझा करते हुए लिखा कि छत्तीसगढ़ की बौद्धिक साहित्य का सांस्कृतिक धरोहर के स्थापित पर्याय कुशल मंच संचालक एवं शब्दों के हुनर से दर्शकों श्रोताओं में जान फूंकने के सिद्ध कवि छत्तीसगढ़ के माटी पुत्र पद्मश्री डॉ सुरेंद्र दुबे के निधन से संपूर्ण साहित्य जगत अपूर्व क्षति की मनोदशा में है। कविवर आप सदैव हमारे मुस्कुराहटों में सजीव रहेंगे। अशेष श्रद्धा प्रणाम। पेशे से आयुर्वेदिक चिकित्सक डॉक्टर सुरेंद्र दुबे व्यंग्य शैली के राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर के बड़े कवि और लेखक थे। उनका जन्म 8 जनवरी 1953 को छत्तीसगढ़ के बेमेतरा में हुआ था। डॉ सुरेंद्र दुबे मंच तथा टेलीविजन के भी प्रख्यात कवि थे। उन्होंने चार किताबें भी लिखी हैं। उन्हें राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न देशों में सम्मानित तथा पुरस्कृत किया गया था। कवि सम्मेलन में अक्सर जाते समय कार या ट्रेन में बातों के दौरान सदैव भावुक होकर मेरा नाम लेकर कहा करते थे यार इतने छोटे व्यक्ति को इतना सम्मान मिलना बहुत बड़ी बात है, वे अपने आप को अंतरराष्ट्रीय स्तर के बड़े कवि होने के बावजूद बहुत सामान्य आदमी समझते यह उनका बहुत बड़ा बड़प्पन ही था और कहते मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं मेरे मृत्यु पर्यंत यह सम्मान बना रहे और मेरी कविताएं दर्शकों को श्रोताओं को इसी तरह गुदगुदाती रहें, हँसाती रहें। शायद उन्हें पूर्व में भान हो गया था कि वे पृथ्वी लोक में श्रोताओं दर्शकों को हंसाते हुए देवताओं को भी हंसाने स्वर्ग लोक सिधार जाएंगे। हास्य सम्राट, छत्तीसगढ़ भाषा के अंतरराष्ट्रीय पर्याय पद्मश्री डॉक्टर सुरेंद्र दुबे को मेरी व्यक्तिगत एवं छत्तीसगढ़ काव्य संस्थान, उत्तरायण सामाजिक सांस्कृतिक साहित्यिक संस्थान एवं नव-छत्तीसगढ़ साहित्य संस्कृत संस्थान रायपुर की तरफ से श्रद्धांजलि, नमन। ईश्वर उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान प्रदान करें एवं शोक संतप्त मेरी बड़ी बहन आदरणीया शशि दुबे जी को और उनके संपूर्ण परिवार को इस गहरे दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। ओम नमः शिवाय।

संजीव ठाकुर

डा मोहन यादव के नेतृत्व में स्वावलंबन से समृद्धि की ओर मध्यप्रदेश

कभी संसाधनों की कमी से पिछड़ा समझा जाने वाला मध्यप्रदेश आज नए आत्मविश्वास, नवदृष्टि और निर्णायक नेतृत्व के साथ आत्मनिर्भर भारत के अग्रदूत राज्यों में अपनी स्पष्ट भूमिका गढ़ रहा है। इस परिवर्तन के केंद्र में हैं प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, जिनकी कार्यशैली में दृष्टि भी है, दिशा भी और दृढ़ता भी। डॉ. यादव ने मध्यप्रदेश के पुनर्निर्माण की जो रूपरेखा रची है और जिस पर वह काम कर रहे हैं, वह केवल योजनाओं का समुच्चय नहीं, बल्कि जन-भावनाओं की संकल्पशक्ति का प्रतिबिंब है। मेरी दृष्टि में उनके नेतृत्व में प्रदेश की नीतियों की बुनियाद तीन आधारों पर टिकी है - "युवा को कौशल, परिवार को आजीविका और जिले को औद्योगिक पहचान।" माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी की विकास-नीति में कौशल केवल तकनीकी योग्यता नहीं, बल्कि आत्मविश्वास का नया नाम है। वे मानते हैं कि यदि हम युवाओं को उनके गांव-शहर में ही नवाचार, तकनीक और उद्यम के अवसर दे सकें, तो वे न केवल रोज़गार पाने वाले बनेंगे, बल्कि रोज़गार देने वाले भी बन सकते हैं। आपका मानना है कि "भारत की बुद्धि, कौशल और युवा शक्ति से विश्व में हमारी अलग पहचान है।" इसी दृष्टि से मध्यप्रदेश में आईटीआई संस्थानों का आधुनिकीकरण, सीएम स्किल हब, डिजिटल रोजगार पोर्टल, और उद्योग-संलग्न इंटर्नशिप कार्यक्रमों को प्राथमिकता दी जा रही है। माननीय मुख्यमंत्री जी स्वयं युवाओं से संवाद करते हुए कहते हैं कि "पढ़ाई के साथ टैलेंट का औद्योगिक उपयोग हो, यही आत्मनिर्भरता की असली शुरुआत है।" आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश की कल्पना तभी साकार होगी जब हर परिवार आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो। यही सोच है उस नीति के पीछे, जिसमें डॉ. यादव ने कहा कि "हमारा लक्ष्य है – हर परिवार में एक रोजगार, एक उद्यम, एक आशा।" इसी के अनुरूप सरकार द्वारा मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना, स्टार्टअप नीति, महिला स्व-सहायता समूहों के लिए सशक्तिकरण मिशन, और ग्रामोद्योग को पुनर्जीवित करने की पहल लागू की गई है। मिलेट आधारित प्रसंस्करण, हथकरघा व हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग, और मछली पालन से लेकर मधुमक्खी पालन तक की योजनाएं ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नया आधार दे रही हैं। यह प्रयास न केवल आजीविका सृजन का माध्यम है, बल्कि सामाजिक समरसता का भी आधार बन रहा है। माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का एक स्पष्ट और दीर्घदर्शी लक्ष्य है कि हर जिले को उसकी भौगोलिक और सांस्कृतिक विशेषताओं के अनुरूप औद्योगिक पहचान मिले। आपका स्पष्ट मानना है कि "यह 'मेक इन इंडिया' का युग है, और मध्यप्रदेश उसका नेतृत्व करेगा।" इसी दृष्टि से इंदौर, भोपाल सहित प्रदेश के कई ज़िलों को स्पेशल इकोनॉमिक ज़ोन, औद्योगिक पार्क और क्लस्टर मॉडल के ज़रिए विकसित किया जा रहा है। ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2025 में 10 लाख करोड़ रुपये से अधिक के निवेश प्रस्ताव इस बात का स्पष्ट संकेत हैं कि अब मध्यप्रदेश निवेशकों की पहली पसंद बन चुका है। यह औद्योगिक विकास केवल निवेश तक सीमित नहीं, बल्कि उससे जुड़े स्थानीय रोज़गार, शिक्षा-प्रशिक्षण और बुनियादी ढांचे के निर्माण को भी गति दे रहा है। संक्षिप्त में कहा जाए तो मध्यप्रदेश की सरकार विकास के जन-आधारित मॉडल पर कार्य कर रही है। वर्तमान सरकार में - महज़ योजनाओं की श्रृंखला नहीं, बल्कि एक जनकेंद्रित विकास-दर्शन है, जिसमें शिक्षा, स्वावलंबन और संप्रभुता तीनों का समन्वय है। यह एक ऐसा मॉडल है, जो हर नागरिक को विकास का भागीदार बनाता है। जहाँ युवा रोजगार खोजता नहीं, सृजित करता है; जहाँ परिवार शासन पर निर्भर नहीं, अपने प्रयासों से आत्मनिर्भर बनता है; और जहाँ जिले केवल नक्शे पर सीमाएँ नहीं, बल्कि नवाचार और समृद्धि के केंद्र बनते हैं। उपनिषदों के शब्दों में कहें तो - "तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा" - अर्थात 'सहभागिता से ही सच्चा उपभोग संभव है'। डॉ. यादव की सरकार यही सिखा रही है – कि सरकार जब मार्गदर्शक बनती है, जन-शक्ति जग जाती है, और जब नीति में नैतिकता जुड़ती है, तब ही राज्य, राष्ट्र की आत्मा बनकर उभरता है।

डॉ मनमोहन प्रकाश

दैनिक राशिफल

ज्योतिष सेवा केन्द्र लखनऊ
डॉ.कौशलेन्द्र पाण्डेय जी

मेष–आज भूमि व भवन संबंधी कार्य लाभ देंगे। रोजगार मिलेगा। शत्रु भय रहेगा। निवेश व नौकरी लाभ देंगे। व्यापार अच्छा चलेगा। कार्य के विस्तार की योजनाएँ बनेंगी। रोजगार में उन्नति एवं लाभ की संभावना है। पठन-पाठन में रुचि बढ़ेगी। लाभदायक समाचार मिलेंगे।

वृष–आज कोर्ट-कचहरी में अनुकूलता रहेगी। पूजा-पाठ में मन लगेगा। व्यवसाय ठीक चलेगा। झंझटों में न पड़ें। उधार दिया धन मिलने से राहत हो सकती है। जीवनसाथी का सहयोग उलझे मामले सुलझाने में सहायक हो सकेगा। वाहन सावधानी से चलाएँ।

मिथुन–आज बेरोजगारी दूर होगी। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। भेंट व उपहार की प्राप्ति होगी। जोखिम न लें। क्रोध एवं उत्तेजना पर संयम रखें। सत्कार्य में रुचि बढ़ेगी। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। व्यावसायिक चिंताएँ दूर होंगी। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी।

कर्क–आज नई योजना बनेगी। कार्यप्रणाली में सुधार होगा। मान-सम्मान मिलेगा। व्यवसाय ठीक चलेगा। स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखें। कार्यक्षमता एवं कार्यकुशलता बढ़ेगी। कर्म के प्रति पूर्ण समर्पण व उत्साह रखें। व्यापार में नई योजनाओं से लाभ होगा।

सिंह–उत्तेजना पर नियंत्रण रखें। शत्रु सक्रिय रहेंगे। शोक समाचार मिल सकता है। थकान महसूस होगी। व्यावसायिक चिंता रहेगी। संतान के व्यवहार से कष्ट होगा। सहयोगी मदद नहीं करेंगे। व्ययों में कटौती करने का प्रयास करें। वाहन चलाते समय सावधानी रखें।

कन्या–अतिथियों का आवागमन रहेगा। उत्साहवर्धक सूचना मिलेगी। स्वाभिमान बना रहेगा। नई योजनाओं की शुरुआत होगी। संतान की प्रगति संभव है। भूमि व संपत्ति संबंधी कार्य होंगे। पूर्व कर्म फलीभूत होंगे। परिवार में सुखद वातावरण रहेगा। व्यापार में इच्छित लाभ होगा।

तुला–चोट, चोरी व विवाद से हानि संभव है। जोखिम व जमानत के कार्य टालें। कुसंगति से हानि होगी। अपने काम से काम रखें। स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न करें। आवास संबंधी समस्या हल होगी। आलस्य न करें। सोचे काम समय पर नहीं हो पाएँगे।

वृश्चिक–राजकीय बाधा दूर होकर लाभ होगा। प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता रहेगी। क्रोध पर नियंत्रण रखें। लाभ होगा। रुके हुए काम समय पर पूरे होने से आत्मविश्वास बढ़ेगा। परिवार की समस्याओं का समाधान हो सकेगा। व्यापार में नई योजनाएँ बनेंगी। व्यापार अच्छा चलेगा।

धनु–रोमांस में समय बीतेगा। मेहनत का फल मिलेगा। कार्यसिद्धि से प्रसन्नता रहेगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में प्रसन्नता का वातावरण रहेगा। व्यापार के कार्य से बाहर जाना पड़ सकता है। कार्यपद्धति में विश्वसनीयता बनाएँ रखें। धनार्जन होगा।

मकर–दिन प्रेमभरा गुजरेगा। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। रुका हुआ धन मिलेगा। प्रसन्नता रहेगी। जल्दबाजी न करें। प्रियजनों से पूरी मदद मिलेगी। धन प्राप्ति के योग हैं। स्वयं के सामर्थ्य से ही भाग्योन्नति के अवसर आएँगे। संतान के कार्यों में उन्नति के योग हैं।

कुंभ–रचनात्मक कार्य सफल रहेंगे। पार्टी व पिकनिक का आनंद मिलेगा। व्यवसाय ठीक चलेगा। विवाद न करें। सामाजिक एवं राजकीय ख्याति में अभिवृद्धि होगी। आर्थिक अनुकूलता रहेगी। रुका धन मिलने से धन संग्रह होगा। राज्यपक्ष से लाभ के योग हैं।

मीन–आज कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। व्ययवृद्धि होगी। तनाव रहेगा। अपरिचितों पर विश्वास न करें। प्रयास में आलस्य व विलंब नहीं करना चाहिए। रुके हुए काम समय पर होने की संभावना है। विरोधी परास्त होंगे। यात्रा कष्टप्रद हो सकती है। धैर्य एवं संयम बना रहेगा।

संपादकीय

इमरजेंसी के वे काले दिन !

स्वतन्त्र भारत के इतिहास में 21 महीने का इमरजेंसी काल ऐसा कलंक है जिसकी याद समय-समय पर करके हम अपने लोकतन्त्र को मजबूत बनाये रख सकते हैं। यह समय 25 जून, 1975 से लेकर मार्च 1977 तक का था जब तत्कालीन प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी ने अपनी गद्दी बचाये रखने के लिए पूरे देश पर आन्तरिक इमरजेंसी लागू कर दी थी और नागरिकों के मौलिक या मूलभूत अधिकारों को समाप्त कर दिया था। उस समय पूरे देश पर ऐसा काला घना अंधेरा छाया था जिसका कोई दूसरा उदाहरण भारत के इतिहास में नहीं था। यह इमरजेंसी समय कांग्रेस पार्टी के इतिहास पर भी कलंक के समान था क्योंकि कांग्रेस पार्टी ने ही आजादी की लड़ाई लड़ते हुए भारत के नागरिकों को मूलभूत अधिकार प्रदान करने का आश्वासन दिया था। इस दौरान देश के सभी संवैधानिक संस्थानों को अधिकार विहीन व दन्त विहीन कर दिया गया और यहां तक कि स्वतन्त्र न्यायपालिका के अधिकार भी छीन लिये गये।

इस दौरान न कोई दलील थी और न कोई अपील थी और न कोई वकील था। पूरे देश को जेलखाने में तब्दील कर दिया था। सभी विपक्षी राजनेताओं व कार्यकर्ताओं तक को जेलों में ठूंस दिया गया था। इनमें मजदूर नेता तक शामिल थे। किसी भी नागरिक के पास अपनी जायज मांग उठाने का कोई जरिया नहीं था और आवाज उठाने पर उसे जेल में डाल दिया जाता था। आजाद भारत ऐसा नजारा पहली बार देख रहा था। अखबारों पर सेंसरशिप लागू कर दी गई थी। पत्रकारों की आजादी पूरी तरह छीन ली गई थी। अखबारों में वही छपता था जिस पर सरकार की सहमति होती थी। यह सब केवल एक व्यक्ति श्रीमती इन्दिरा गांधी की सत्ता को कायम रखने के लिए किया गया था क्योंकि इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने 12 जून, 1975 को उनका रायबरेली सीट से लड़ा गया लोकसभा चुनाव अवैध घोषित कर दिया था। इसके बाद इन्दिरा गांधी को सर्वोच्च न्यायालय में अपील दायर करने के लिए 40 दिन का समय दिया गया था। मगर इस दौरान वह लोकसभा या संसद में किसी मतदान में भाग नहीं ले सकती थीं। इसकी वजह यह थी कि उनकी लोकसभा सदस्यता खत्म कर दी गई थी। इन्दिरा गांधी के पास उस समय कई विकल्प थे। लोकसभा में कांग्रेस पार्टी के पास भारी बहुमत था। वह कांग्रेस के ही किसी अन्य नेता को प्रधानमन्त्री बना सकती थी। इसमें सबसे ऊपर नाम उस समय दलित नेता बाबू जगजीवनराम का चल रहा था क्योंकि वह सबसे वरिष्ठ नेता थे और नेहरू काल से ही मन्त्रिमंडल में शामिल थे। परन्तु इन्दिरा गांधी ने यह उचित नहीं समझा और इमरजेंसी लगाने का ठीकरा जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन पर फोड़ते हुए देश में तानाशाही लागू कर दी। इसके लिए संविधान का प्रावधान ढूंढने में तत्कालीन कांग्रेस नेता स्व. सिद्धार्थ शंकर राय ने बहुत मेहनत की, जिसे इन्दिरा जी के छोटे बेटे स्व. संजय गांधी ने पूरा समर्थन दिया। इस प्रकार पूरे देश में इमरजेंसी लागू कर दी गई और सभी आन्दोलनकारी नेताओं को जेलों में ठूंस दिया गया। अब आज की मोदी सरकार यदि इस दिन की याद को ताजा रखने के लिए पूरे साल भर कार्यक्रम आयोजित करना चाहती है तो इसमें कोई बुराई नहीं है क्योंकि ऐसा करने से देशवासी लोकतान्त्रिक अधिकारों के प्रति सजग होंगे और लोकतन्त्र बचाये रखने का जज्बा उनमें जागृत रहेगा। परन्तु कांग्रेस अध्यक्ष श्री मल्लिकार्जुन खड़गे को इस पर ऐतराज है। उनका कहना है कि ऐसा करके मोदी सरकार अपनी पिछले 11 साल की विफलताओं को छिपाना चाहती है और आम लोगों को गफलत में रखना चाहती है। श्री खड़गे का तर्क है कि यदि इमरजेंसी लगाने का फैसला इन्दिरा गांधी ने लिया था तो इसे 21 महीने बाद हटाने और निष्पक्ष व स्वतन्त्र चुनाव कराने का फैसला भी उन्होंने लिया था। ये चुनाव 1977 की पहली तिमाही में हुए थे जिसमें कांग्रेस पार्टी बुरी तरह परास्त हो गई थी और पूरे उत्तर भारत में उसका सफाया हो गया था। केवल दक्षिण भारत के चार राज्यों व अन्य छिटपुट सीटों से कांग्रेस को सफलता मिली थी और इसकी 153 सीटें आयी थीं। यहां तक कि रायबरेली से ही इन्दिरा गांधी अपना चुनाव तक हार गई थीं और उनके पुत्र संजय गांधी भी चुनाव में परास्त रहे थे। श्री खड़गे का तर्क है कि 1977 में जब केन्द्र में कांग्रेस को हराकर जनता पार्टी की सरकार बनी तो वह अधिक समय तक नहीं चल सकी और 1980 में पुनः लोकसभा चुनाव हुए जिसमें इन्दिरा गांधी पुनः भारी बहुमत से विजयी हुई और कांग्रेस पार्टी को दो तिहाई बहुमत से कुछ ही कम सीटें ?मिलीं।

इसका मतलब उनकी नजर में यह निकलता है कि इमरजेंसी की गलती के लिए भारत के लोगों ने इन्दिरा गांधी को केवल तीन साल बाद ही माफ कर दिया था और उनके नेतृत्व में पूर्ण विश्वास व्यक्त किया था। बेशक श्री खड़गे के तर्क को लोकतन्त्र में हार-जीत की तराजू पर रखकर देखा जा सकता है मगर इमरजेंसी को किसी भी तरह जायज नहीं ठहराया जा सकता। इमरजेंसी भारत के इतिहास का एक काला अध्याय ही रहेगा जिसे किसी भी तर्क से सफेद नहीं किया जा सकता है। इसमें कोई दो राय नहीं हैं कि लोकतन्त्र में आम जनता ही इस व्यवस्था की सजग प्रहरी होती है अतः यदि मोदी सरकार जनता को इस ओर सजग बनाये रखना चाहती है तो इसका विरोध किस प्रकार किया जा सकता है।

विवाह, विश्वास और विघटन- जब प्रेम के नाम पर साजिश रची जाती है

भारतीय समाज में विवाह को सदा से एक पवित्र संस्था माना गया है एक ऐसा बंधन जिसे सात जन्मों का संकल्प समझकर निभाया जाता रहा है। परंतु बीते कुछ वर्षों में और विशेषकर हालिया दिनों में जो घटनाएँ समाचार माध्यमों और सोशल मीडिया के ज़रिए हमारे सामने आई हैं, वे न केवल इस संस्था की स्थिरता पर सवाल खड़े करती हैं, बल्कि यह भी दर्शाती हैं कि भावनाओं, रिश्तों और विश्वास को किस भयावह तरीके से छलनी किया जा सकता है। मेघालय में हनीमून पर गए दंपति की घटना को ही लें राजा रघुवंशी की गला रेत कर हत्या कर दी गई और इसका ताना-बाना बुनने वाली कोई और नहीं, स्वयं उसकी पत्नी थी। यह हत्या महज़ एक क्षणिक आवेग नहीं थी, बल्कि सुनियोजित साजिश थी, जिसमें प्रेमी और किराए के हत्यारे भी शामिल थे। विवाह के नाम पर विश्वास की हत्या, और प्रेम के नाम पर जीवन का अंत इससे ज़्यादा क्रूर विडंबना क्या हो सकती है? इसी कड़ी में आंध्र-तेलंगाना से लेकर उत्तर प्रदेश और राजस्थान तक की घटनाओं की जब श्रृंखला देखी जाती है तो साफ़ प्रतीत होता है कि यह कोई अपवाद नहीं, बल्कि एक चिंताजनक सामाजिक प्रवृत्ति का संकेत है। युवा महिलाएँ जिन पर समाज भरोसे और आस्था की मूर्ति का बोझ डालता रहा है, अब वे भी कुछ मामलों में इस व्यवस्था से निकलने के लिए हिंसा और अपराध के रास्ते चुन रही हैं। प्रेम, स्वायत्तता और निजी स्वतंत्रता की मांग कोई अपराध नहीं है। नारी स्वतंत्रता के युग में यह अपेक्षित भी है कि महिलाएँ अपने जीवन के निर्णय स्वयं लें। पर जब ये निर्णय हिंसा, छल और हत्या का रूप ले लेते हैं, तो वे न केवल कानून की सीमाओं को लांघते हैं, बल्कि पूरे स्त्री-स्वतंत्रता विमर्श को कलंकित कर जाते हैं। यह स्त्री-मुक्ति नहीं, अपकीर्ति है। यह समझना आवश्यक है कि इन हत्याओं के पीछे केवल प्रेम या बदले की भावना ही नहीं, कई बार गहरे सामाजिक, आर्थिक और मानसिक कारण भी होते हैं। विवाह, जिसमें दो परिवारों के बीच सामाजिक अनुबंध जुड़ा होता है, जब भीतर ही भीतर घुटन, अविश्वास और असमानता की बुनियाद पर टिकता है, तो उसका परिणाम अक्सर ऐसा ही विस्फोटक होता है।

समाज की त्रासदी यह है कि वह संबंधों को निभाने की नैतिकता तो सिखाता है, परंतु उन्हें तोड़ने की गरिमा नहीं। जब कोई स्त्री विवाह में फँसी होती है पर उसका मन किसी और से जुड़ चुका होता है, या जब कोई पुरुष अपनी पत्नी को मात्र एक वस्तु समझता है, तब उस संबंध में अपराध की गुंजाइश पैदा हो जाती है। फर्क सिर्फ इतना है कि पहले महिलाएँ ऐसे संबंधों से चुपचाप पीड़ित होती थीं, अब वे प्रतिकार कर रही हैं कभी क़ानून के ज़रिए, तो कभी अपराध के ज़रिए। मगर अपराध कभी भी प्रतिशोध का उचित माध्यम नहीं हो सकता। न ही विवाह को एक ऐसा मंच बनाना उचित है जहाँ विश्वास की आड़ में हत्या की योजना रची जाए। आज हमें एक नए सामाजिक अनुबंध की आवश्यकता है एक ऐसा अनुबंध जो पारदर्शी हो, जिसमें विवाह एक बंधन से ज़्यादा एक सहमति बने। हमें विवाह और संबंधों के स्वरूप को पुनः परिभाषित करने की आवश्यकता है। विवाह में जबरन टिके रहना अब आधुनिक समाज की पहचान नहीं हो सकती। उसी तरह विवाह के भीतर हिंसा और हत्या को सामान्य मान लेना, किसी भी सभ्य समाज की आत्मा पर कलंक है। इस भयावह स्थिति से निपटने के लिए दो मोर्चों पर काम करना होगा। एक ओर क़ानून को और सख़्त तथा सजग बनाना होगा कि विवाह की आड़ में किए गए अपराधों को घरेलू मामला कहकर अनदेखा न किया जाए। दूसरी ओर समाज को भी यह स्वीकार करना होगा कि रिश्तों में पारदर्शिता, विकल्प और गरिमामय अलगाव की अनुमति देना, संबंधों को हिंसक बनने से रोक सकता है। शादी अब केवल रस्म नहीं, एक जीवंत सामाजिक अनुबंध है जहाँ दो आत्माएँ समानता, स्वतंत्रता और विश्वास के आधार पर जुड़ती हैं। यदि इन मूल्यों का गला घोंटा जाएगा, तो वह विवाह नहीं, एक यंत्रणागृह बन जाएगा, जिसका अंत या तो आत्महत्या होगा, या फिर हत्या। यह समय है कि हम विवाह, प्रेम और स्वतंत्रता की परिभाषाओं की पुनर्समीक्षा करें। वरना विवाह की सेज पर विश्वास की हत्या की ये घटनाएँ, हमारे पूरे समाज को अपराध के दलदल में डुबो देंगी।

हंसराज चौरसिया

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक रवि कुमार अवस्थी द्वारा अनवर ऑफसेट एम्- 58, 59 बेसमेंट विकासदीप बिल्डिंग स्टेशन रोड लखनऊ से मुद्रित ई-4 सेक्टर-एम/29 अपोजिट उष्मान एन्क्लेव अलीगंज लखनऊ 226024 से प्रकाशित **संपादक-राजीव कुमार शुक्ल**, मो0- 7499472288
E-Mail: news@swatantraprabhat.com, RNI No: UPHIN/2019/79073 इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारो के चयन एवं संपादन हेतु पी आर बी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा न्यायलय जनपद लखनऊ ही होगा।

संक्षिप्त खबरें

किराए के मकान से बेदखली पर महिला ने खाया जहर मकान मालिक पर उत्पीड़िन का आरोप

सीतापुर- जनपद सीतापुर के नई बस्ती मोहल्ले में किराए के मकान से बेदखली के विवाद ने एक महिला की जान ले ली मृतका संध्या अग्रवाल अपने पति सुनील कुमार अग्रवाल के साथ पिछले एक साल से रिंकू गुप्ता के मकान में किरायेदार थीं मकान मालिक रिंकू गुप्ता और उनकी पत्नी प्रिया गुप्ता लंबे समय से मकान खाली करने का दबाव बना रहे थे। इस विवाद में रिंकू के भाई पंकज ने मध्यस्थता की उनकी मध्यस्थता में 10 जुलाई तक मकान खाली करने की सहमति बनी थी 25 जून की रात करीब 9 बजे की घटना है सुनील और संध्या अपनी परचून की दुकान पर थे तभी मकान मालिक दंपति वहां पहुंचे आरोप है कि उन्होंने गाली-गलौज की दुकान का सामान बिखेर दिया और कीमती सामान भी ले गए। इस घटना से व्यथित संध्या ने रात करीब 1 बजे जहरीला पदार्थ खा लिया पति का आरोप है कि मकान मालिक दंपति ने करीब दो घंटे तक जीना नहीं खोला गंभीर हालत में संध्या को पहले जिला अस्पताल और फिर लखनऊ मेडिकल कॉलेज ले जाया गया। गुरुवार को डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया परिजनों ने मकान मालिक दंपती पर मानसिक उत्पीड़न और आत्महत्या के लिए उकसाने का आरोप लगाया है पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और मामले की जांच कर रही है!!

जलभराव से परेशान लोगों का फूटा गुस्सा किया प्रदर्शन सड़क जाम कर अधिकारियों के खिलाफ जमकर नारेबाज़ी

सीतापुर- जनपद सीतापुर के नगर क्षेत्र के मुंशीगंज से बड़ागांव जाने वाली मुख्य सड़क पर सालों से जलभराव की समस्या से जूझ रहे लोगों का सब्र शुक्रवार को टूट गया गैस एजेंसी के पास लगातार कई महीनों से सड़क पर पानी जमा रहने से मोहल्लेवासी बेहद परेशान थे इसी को लेकर आज सैकड़ों की संख्या में लोग इकट्ठे होकर उग्र प्रदर्शन करने लगे गुस्साए लोगों ने लोहे के पाइप और लकड़ियां डालकर बड़ागांव रोड को पूरी तरह अवरुद्ध कर दिया जिससे दोनों तरफ वाहनों की लंबी कतारें लग गईं और आवागमन पूरी तरह ठप हो गया। प्रदर्शनकारी महिलाओं और युवाओं ने जोरदार नारेबाजी करते हुए अधिकारियों को तत्काल मौके पर बुलाने की मांग की मोहल्लेवासियों ने बताया कि जलनिकासी की कोई व्यवस्था न होने से गंदा पानी महीनों से सड़कों पर जमा है जिससे राहगीरों को दिक्कतें हो रही हैं और कई बार दुर्घटनाएं भी हो चुकी हैं स्थानीय दुकानदारों का कहना है कि जलभराव से व्यापार भी बुरी तरह प्रभावित हो रहा है बदा दें कि पिछले सप्ताह भी मोहल्लेवासियों ने इसी समस्या को लेकर रोड जाम किया था इस वक्त नायब तहसीलदार सदर ने मौके पर पहुंचकर जल्द जलभराव से निजात दिलाने का आश्वासन दिया था लेकिन एक सप्ताह बीतने के बावजूद कोई ठोस कार्रवाई न होने से लोग फिर भड़क उठे प्रदर्शनकारियों ने चेतावनी दी कि यदि अधिकारियों ने समस्या का स्थायी समाधान नहीं कराया तो आंदोलन को और व्यापक किया जाएगा मौके पर पुलिस बल तैनात है और प्रशासनिक अधिकारी भी पहुंचने की तैयारी में है पुलिस प्रदर्शनकारियों को समझाने में जुटी हुई है!!

कच्ची शराब के साथ महिला पकड़ी

अलीगढ़। थाना दादों पुलिस टीम ने अवैध शराब भट्टी का भण्डाफोड़ करते हुये महिला आरोपी को गिरफ्तार कर दस लीटर कच्ची शराब बरामद की है। पुलिस टीम ने ग्राम सांकरा में महिला शारदा पत्नी स्व0 प्रेम निवासी ग्राम सांकरा थाना दादों को एक शराब की भट्टी व 10 लीटर कच्ची शराब सहित गिरफ्तार किया गया । बरामदगी व गिरफ्तारी के आधार पर थाना दादों पर आबकारी अधिनियम के तहत मुकद्दमा पंजीकृत किया गया है।

गोरखपुर के गोला में गौशाला घोटाला! वायरल वीडियो ने खोली पोल, प्रधान की उलझन भरी सफाई

स्वतंत्र प्रभात

गोलाबाजार, गोरखपुर - गोरखपुर के गोला तहसील के बडैला ग्राम सभा की गौशाला से गायों की तस्करी का सनसनीखेज वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है। इस वीडियो ने न सिर्फ प्रशासन को हिलाकर रख दिया, बल्कि गांव के प्रधान की बदलती-बदलती बातों ने भी लोगों के कान खड़े कर दिए। आइए, जानते हैं पूरा माजरा! वायरल वीडियो- गाय ले जाते पकड़े गए युवकवीडियो में दो युवक गौशाला से गाय को एक पिकअप वैन में लादते दिख रहे हैं। वीडियो शूट करने वाले ने जब उनसे सवाल किया, तो जवाब आया, "रिश्तेदारी में नेवादा भेज रहे हैं।"लेकिन मजेदार ट्विस्ट ये है कि पिकअप का नंबर प्लेट किसी दूसरे जिले का था! सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल होते ही लोग सवाल उठाने लगे - क्या ये तस्करी का खेल है?

प्रशासन की हड़बड़ाहट- कागजों में सब ठीक?

वीडियो के वायरल होने के बाद प्रशासन में खलबली मच गई। कागजों में तो गौशाला में सब कुछ "ऑल इज वेल" था, लेकिन हकीकत कुछ और निकली। आनन-फानन में पशु चिकित्सकों की टीम गौशाला पहुंची। गायों की गिनती शुरू हुई और उन्हें टैग करने की कवायद छेड़ दी गई ताकि कोई कमी न पकड़ी जाए। लेकिन सवाल ये है - क्या ये सिर्फ आंखों में धूल झोंकने की कोशिश है?

प्रधान के तीन-तीन बयान, बढ़ी शंका

गांव के प्रधान नन्हे यादव की सफाई ने और सस्पेंस पैदा कर दिया। पहले बोले- "गाय भेजी थी, लेकिन वापस मंगा लिया।"फिर बात बदली- "गायों की नीलामी तो होती रहती है।"और तीसरे बयान में पलट गए- "ये सब विरोधियों की साजिश है, हमें फंसाया जा रहा है!"प्रधान जी की ये उलट-पुलट बातें सुनकर जनता का माथा ठनक रहा है।

आखिर सच क्या है?

एसडीएम की दलील- नीलामी नहीं, सुपुर्दगी !एसडीएम अमित कुमार जायसवाल ने मामले को साफ करने की कोशिश की। उनका कहना है- "गायों की नीलामी नहीं होती, बल्कि विकासखंड और पशुपालन विभाग की निगरानी में सुपुर्दगी होती है।" लेकिन जनता पूछ रही है - अगर सब कुछ पारदर्शी है, तो वीडियो में गायें रात के अंधेरे में क्यों ले जाई जा रही थीं?

डीएम ने राजनैतिक दलों के साथ वीवीपैट एवं ईवीएम वेयरहाउस का किया निरीक्षण

प्रतापगढ़। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशों के क्रम में जिला निर्वाचन अधिकारी/जिलाधिकारी शिव सहाय अवस्थी ने पूरेकेशवराय स्थित ईवीएम एवं वीवीपैट वेयर हाउस का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान राजनैतिक दलों के प्रतिनिधि भी मौजूद रहे। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने ईवीएम एवं वीपीपैट वेयरहाउस में साफ-सफाई व्यवस्था और अग्निशमन यंत्रों की कार्यप्रणाली की जांच की। उन्होंने सीसीटीवी कैमरों के संचालन की भी जानकारी प्राप्त की। उन्होने निर्देशित किया कि भारत निर्वाचन आयोग के दिशा निर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित करायें। उन्होने ईवीएम एवं वीवीपैट के सम्बन्ध में सम्बन्धित अधिकारी से आवश्यक जानकारी प्राप्त कर आवश्यक दिशा निर्देश दिये। इस दौरान सुरक्षा कर्मियों को निर्देशित किया गया कि वीवीपैट एवं ईवीएम वेयरहाउस की निगरानी मुस्तैदी के साथ करते रहे।

एसपी ने किया विट्ठलपुर का दौरा,गांव में एहतियातन पीएसी तैनात

● -मृतक गोलू के परिजनों को न्याय का आश्वासन

स्वतंत्र प्रभात

रूद्रपुर, देवरिया। देवरिया के एसपी विक्रांत वीर ने शुक्रवार को रुद्रपुर कोतवाली के विट्ठलपुर गांव का दौरा किया व परिजनों से मुलाकात कर उन्हें दोषियों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई करने व न्याय दिलाने का आश्वासन दिया। गांव में एहतियातन शांति बनाए रखने के लिए पीएसी तैनात कर दिया गया है। वहीं नवागत थाना अध्यक्ष विनोद कुमार सिंह को शेष बचे दो आरोपियों को शीघ्र गिरफ्तार करने के निर्देश दिए गए। गिरफ्तारी के लिए एसओजी सहित अन्य टीमें बनाई गई हैं। पुलिस अधीक्षक ने विवेचक को घटना के साक्ष्य संकलन का निर्देश दिया। रुद्रपुर कोतवाली अंतर्गत घटी हाई प्रोफाइल घटना में लापरवाही बरतने के आरोप में प्रभारी निरीक्षक रणजीत सिंह

भदोरिया को निलंबित करने के बाद पुलिस कप्तान अलर्ट मोड में हैं। सीओ हरिराम यादव को विट्ठलपुर गांव पर नजर बनाए रखने का आदेश दिया गया है। विदित हो कि बीते 13 जून को तीन आरोपियों ने मामूली बात पर हरिभजन ऊर्फ गोलू को तालिबानी अंदाज में पीटा था जिससे 21 जून को उसकी मौत हो गई थी। इस बीच भाजपा विधायक जयप्रकाश निषाद के पुत्र विश्व विजय निषाद ने घटनास्थल का दौरा कर पीड़ितों को हर संभव न्याय दिलाने का आश्वासन दिया।

खजनी में नशेड़ी के हाथ तमंचा, ग्राम प्रधान पर तानी गोली, बाल-बाल बचे!

स्वतंत्र प्रभात

खजनी। गुरुवार देर शाम खजनी थाना क्षेत्र के विशुनपुरा गांव में उस समय हड़कंप मच गया जब एक नशेड़ी खुलेआम लहराता असलहा लेकर गांव की सड़कों पर घूमता नजर आया। घटना ने तब और सनसनी फैला दी जब उसी दौरान ग्राम प्रधान खुशहाल यादव बाइक से मौके पर पहुंच गए और नशेड़ी ने फिल्मी अंदाज़ में सीधे प्रधान पर तमंचा तान दिया। डाइनामाइट न्यूज़ रिपोर्ट व प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक नशेड़ी ने प्रधान को गोली मारने की धमकी दी। लेकिन संयोग अच्छा रहा – प्रधान ने न केवल साहस दिखाया बल्कि पूरे विवेक से काम लेते हुए नशेड़ी के हाथ से असलहा छीनने की कोशिश की लेकिन सफल नही हुआ , यह पल गांव वासियों के लिए किसी थ्रिलर सीन से कम नहीं था।

इस दौरान सड़क पर आते-जाते कुछ राहगीर भी रुक गए और जब तक वे कुछ समझ पाते, नशेड़ी बाइक लेकर मौके से

फरार हो गया। प्रधान ने तुरंत खजनी पुलिस को घटना की जानकारी दी। सूचना मिलते ही इलाके में भारी पुलिस बल पहुंचा और कुछ ही समय में आरोपी नशेड़ी को धर दबोचा गया। पकड़े गए आरोपी की पहचान विशुनपुरा निवासी प्रसिद्ध पाठक पुत्र कृष्ण मुरारी पाठक के रूप में हुई है। खास बात यह रही कि घटना का किसी ने छिपकर वीडियो बना लिया, जो अब सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। वीडियो देखकर हर कोई दंग है कि गांव की सड़कों पर इस तरह एक नशेड़ी बेखौफ होकर असलहा कैसे लहरा सकता है।

अब सबसे बड़ा सवाल यह है कि इस नशेड़ी को असलहा आखिर मिला कहां से? क्या इसके पीछे किसी असलहा तस्कर का हाथ है या गांव में ही कोई नेटवर्क काम कर रहा है? फिलहाल खजनी क्षेत्र में सुरक्षा को लेकर बहस छिड़ गई है। लोग डरे हुए हैं, प्रशासन से जवाब मांग रहे हैं और पुलिस अब पूरे नेटवर्क की तह तक जाने में जुट गई है। यह घटना न सिर्फ सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़े करती है, बल्कि यह भी बताती है कि गांवों में अवैध हथियारों की मौजूदगी कितनी बड़ी चिंता बन चुकी है। उक्त मामले में थानाध्यक्ष अनूप सिंह ने बताया देर रात सूचना मिली आरोपी को हिरासत में ले लिया गया है ,कहाँ से असलहा मिला कौन दिया ,किसे लेकर घूम रहा था जांच पड़ताल पूछ ताछ की जा रही है ,फ़िरहाल रात में नशे में था इसलिये कुछ पूछना उचित नही था ,प्रधान के तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर करीवाई की जाएगी । फ़िरहाल नशेड़ी के पास से कोई असलहा नही मिला ,असलहा कहाँ गया किसने लिया जांच की जा रही है ।

संचारी रोग की रोकथाम के लिए नपा प्रशासन तैयार

स्वतंत्र प्रभात

कुशीनगर। वर्षा ऋतु के आगमन के साथ ही संचारी रोगों के बढ़ते खतरे को देखते हुए शुक्रवार को नगरपालिका परिषद पडरौना के जल कल भवन में नगरपालिका अध्यक्ष विनय जायसवाल के निर्देशन व उनके प्रतिनिधि मनीष बुलबुल जायसवाल के नेतृत्व में एक विशेष एवं महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया गया। बैठक का उद्देश्य नगर क्षेत्र में संचारी रोग नियंत्रण तथा दस्तक अभियान को प्रभावी ढंग से संचालित करने हेतु समन्वित रणनीति बनाना था। पालिकाध्यक्ष प्रतिनिधि जायसवाल ने अपने संबोधन में स्पष्ट रूप से कहा कि यह समय सजगता और संवेदनशीलता के साथ कार्य करने का है। उन्होंने नगर के प्रत्येक वार्ड में फॉगिंग, एंटी लार्वा छिड़काव, नालियों की सफाई, जलभराव से मुक्ति तथा व्यापक

जन जागरूकता कार्यक्रमों को प्राथमिकता से लागू करने के निर्देश दिए। जायसवाल ने आगे कहा कि दस्तक अभियान के तहत स्वास्थ्यकर्मी घर-घर जाकर लोगों को मच्छर जनित बीमारियों जैसे डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया आदि से बचाव के उपायों की जानकारी दी जाएगी। उन्होंने जोर देकर कहा कि इस अभियान को जनसहयोग एवं प्रशासनिक प्रतिबद्धता के माध्यम से ही सफल बनाया जा सकता है। सभी सम्बंधित कर्मियों को निर्देशित करते हुए कहा कि अभियान की निगरानी सतत रूप से की जाए। साथ ही जोर देते हुए कहा कि नगर की स्वच्छता नगरवासियों के स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति नपा प्रशासन की प्रतिबद्धता का जीवंत प्रमाण भी है।

इस दौरान मुख्य रूप से अधिशासी अधिकारी संतराम सरोज जिला मलेरिया अधिकारी डॉ संजीव सिंह, डॉ विवेक चौरसिया, डॉ गुरु प्रसाद, सुमित श्रीवास्तव, प्रमोद कुमार, दीपक पाण्डेय, रेनू, सभासदगण प्रमोद श्रीवास्तव श्याम साहा, बबलू खरवार, रामाश्रय गौतम, अरुण कुशवाहा, संतोष मद्धेशिया,विश्वनाथ प्रताप सिंह, नईमुद्दीन, कयामुद्दीन, प्रभारी सफाई निरीक्षक रियाजुद्दीन, विपिन जायसवाल, अरुण कुमार, घनश्याम यादव बबलू मद्धेशिया सहित सभी सफाई सेवक उपस्थित रहे।

कृषि यंत्रों पर अनुदान के लिए 12 जुलाई तक जनरेट होंगे टोकन

● - ई-लॉटरी के माध्यम से चयनित होंगे किसान

स्वतंत्र प्रभात

चित्रकूट- जनपद के किसानों के लिए अच्छी खबर है। कृषि विभाग द्वारा संचालित सब मिशन ऑन एग्रीकल्चर मैकेनाइजेशन योजना, प्रमोशन ऑफ एग्रीकल्चर मैकेनाइजेशन फॉर इन-सीटू मैनेजमेंट ऑफ क्रॉप रेजड्यू, एनएफएसएम, नेशनल मिशन ऑन एडिबल ऑयल (तिलहन योजना) तथा त्वरित मक्का विकास कार्यक्रम योजना के अंतर्गत कृषि यंत्र, किसान ड्रोन, थ्रेसिंग फ्लोर, स्मॉल गोदाम, कस्टम हायरिंग सेंटर, हाईटेक हब फॉर कस्टम हायरिंग व फॉर मशीनरी बैंक की स्थापना, फसल अवशेष प्रबंधन के कृषि यंत्र एवं अन्य कृषि रक्षा उपकरण आदि पर किसानों को 10 हजार से एक लाख रुपए तक का अनुदान दिया जाएगा। अनुदान प्राप्त करने को बुकिंग प्रक्रिया 27 जून दोपहर 12 बजे से 12 जुलाई को रात 12 बजे तक

होगी। जिसमें हैरो, कल्टीवेटर, पॉवर चेप कटर, स्ट्रारीपर, रोटावेटर, कंबाइन हार्वेस्टर विथ सुपर एसएमएस फॉर्म मशीनरी बैंक, कस्टम हायरिंग सेंटर व हाईटेक हब फॉर कस्टम हायरिंग आदि यंत्रों की बुकिंग विभागीय पोर्टल की वेबसाइट पर ब्लॉक वार की जाएगी। यंत्र बुकिंग किए जाने के लिए विभागीय पोर्टल पर पूर्व से उपलब्ध मोबाइल नंबर पर ओटीपी प्राप्त करने का विकल्प होगा। यदि पोर्टल पर उपलब्ध मोबाइल नंबर बंद होगा, तो लाभार्थी के नए मोबाइल नंबर पर ओटीपी प्राप्त कर आगे की प्रक्रिया पूर्ण करने का विकल्प दिया जाएगा। आवेदन के समय ही किसान को यंत्रवार निर्धारित बुकिंग धनराशि ऑनलाइन जमा करना होगा। लक्ष्य अवशेष न रहने पर व ई-लॉटरी में चयनित न होने वाले संबंधित किसानों को बुकिंग धनराशि वापस कर दी जाएगी। उप कृषि निदेशक राजकुमार ने बताया कि ई-लॉटरी के माध्यम से जिलाधिकारी की अध्यक्षता में गठित समिति द्वारा किसानों का चयन किया जाएगा। उन्होंने किसानों से योजना का लाभ उठाने की अपील की है।

एक लाख तक के कृषि यंत्रों के लिए जमा करने होंगे 2500 रूपये

बताय कि योजना के तहत 10 हजार से एक लाख रुपए तक अनुदान के कृषि यंत्रों की बुकिंग के लिए 2500 रूपये व एक लाख से अधिक के कृषि यंत्रों की बुकिंग के लिए 5000 रुपए की धनराशि टोकन मनी के तौर पर जमा करनी होगी। आवेदक द्वारा एक मोबाइल नंबर अपना अथवा अपने परिवार के रक्त संबंधी सदस्य माता-पिता, भाई-बहन, पुत्र-पुत्री व पुत्रवधू के मोबाइल नंबर से ही आवेदन किया जा सकेगा। सत्यापन के समय इसकी पुष्टि की जाएगी।

खलिहान की भूमि पर अवैध निर्माण होता रहा खजनी तहसील प्रसासन बेखबर

●पूर्व प्रधान ने खड़ी की दीवार वर्तमान ने लगवाई छत कार्यवाही से कतरा रहे हैं जिम्मेदार अधिकारी

मुख्यमंत्री के गृह जनपद के अधिकारी कितने जिम्मेदार हैं ,सरकारी भवन निर्माण पूर्ण होने के पहले सरकारी धन का का हुआ बंदर बाट

स्वतंत्र प्रभात

खजनी- गोरखपुर शासन का सख्त निर्देश है कि खाद गढ्ढा, तालाब, पोखरा, खलिहान पर कोई भी व्यक्ति पक्का निर्माण नहीं करवा सकता है। लेकिन शासन के निर्देश को ताख पर रख पूर्व प्रधान एवं तत्कालीन ग्राम पंचायत अधिकारी ने खलिहान की भूमि आराजी संख्या 10/255 पर बिना एनोसी लिए ग्राम

सचिवालय का निर्माण कार्य शुरू करवा दिया। भवन की दीवारें भी खड़ी हो गई , लेकिन छत नहीं लग पाई। प्रधान का कार्यकाल पूरा हो गया और गांव की सरकार बदल गई। प्रधान व नये ग्राम पंचायत अधिकारी ने कार्य भार ग्रहण कर लिया। सूत्र बताते हैं कि सरकार जाने से पहले पूर्व प्रधान व ग्राम पंचायत अधिकारी ने पंचायत भवन के लिए आये धन को खर्च कर दिया। मजे की बात यह है सब कुछ जानते हुए नये प्रधान से ग्राम पंचायत अधिकारी ने छत डलवा दिया और सामने बाउंड्री वाल भी बनवा दी। वर्तमान प्रधान के भी चार साल बीत गये, लेकिन ग्राम सचिवालय न ही पूरा हुआ और न ही खलिहान की भूमि पर पंचायत भवन का निर्माण करवाने वाले प्रधान व ग्राम पंचायत अधिकारी पर कोई कार्रवाई हुई। ग्रामीणों का कहना है बिना अनुमति लिए खलिहान की भूमि पर पंचायत भवन आधा अधूरा निर्माण एवं सरकारी धन का दुरुपयोग करने वाले जनप्रतिनिधि व अधिकारी पर विभागीय अधिकारी पता नहीं क्यों कार्रवाई करने से कतरा रहे हैं।? बताते चलें कि खजनी विकास खंड क्षेत्र की ग्राम पंचायत आशापार के रमपुरवा में खलिहान की भूमि पर हो रहा है पंचायत भवन निर्माण अभी तक पूरा नहीं हुआ है। जबकि दूसरा सत्र ग्राम प्रधान के कार्यकाल का समापन होने को है। इस सम्बन्ध में पूछे जाने पर डीपीआरओ निलेश प्रताप सिंह ने बताया कि पंचायत भवन की भूमि मे कुछ लफड़ा है एसडीएम से बात चल रही है जल्दी ही निपट जायेगा।

खजनी तहसील में राजस्व विभाग का खेल, तहसीलदार की जांच करने पहुँचा लेखपाल !

स्वतंत्र प्रभात

गोरखपुर- खजनी तहसील में राजस्व विभाग का एक अजीबोगरीब कारनामा सामने आया है, जो निष्पक्षता और पारदर्शिता पर सवाल उठाता है। भलुआ निवासी शत्रुघ्न दुबे की शिकायत पर तहसीलदार नरेंद्र कुमार के खिलाफ जांच का आदेश तो हुआ, लेकिन जांच का जिम्मा सौंपा गया है हल्का लेखपाल को! सवाल यह है कि क्या तहसीलदार का मातहत कर्मचारी निष्पक्ष जांच कर पाएगा?

क्या है पूरा मामला?

शत्रुघ्न दुबे ने अपनी पत्नी रंजना दुबे के नाम जमीन का बैनामा कराया था। इस बीच विक्रेता की मृत्यु हो गई, और उनके वारिसों का नाम पूर्व तहसीलदार ने रिकॉर्ड में दर्ज कर दिया। लेकिन तहसीलदार नरेंद्र कुमार ने कथित तौर पर न्यायिक प्रक्रिया का दुरुपयोग करते हुए वारिसों का प्रतिस्थापन निरस्त कर दिया। इसकी शिकायत शत्रुघ्न दुबे ने राजस्व परिषद के शिकायती प्रकोष्ठ में की।आश्चर्य की बात यह है कि राजस्व परिषद ने तहसीलदार की जांच का जिम्मा हल्का लेखपाल को सौंप दिया। शत्रुघ्न का कहना है, ÷लेखपाल तो तहसीलदार के अधीन है, वह

भला कैसे निष्पक्ष जांच करेगा?

नेट पर खारिज, हकीकत में चल रहा मुकदमा!

शत्रुघ्न ने गंभीर आरोप लगाया कि उनका मुकदमा ऑनलाइन पोर्टल पर खारिज दिखाया गया, लेकिन हकीकत में अदालत में तारीखें चल रही हैं। उन्होंने सवाल उठाया, ÷अगर मुकदमा खारिज है, तो तारीखें और आदेश कैसे जारी हो रहे हैं? यह शिकायतकर्ताओं और राजस्व परिषद को गुमराह करने का तरीका है।÷ उनका दावा है कि ऐसे सैकड़ों मामले हैं, जहां कागजों में निस्तारण दिखाकर हकीकत को छिपाया जा रहा है

राजस्व विभाग की कार्यशैली पर सवाल

खजनी तहसील में तहसीलदार और एसडीएम के खिलाफ शिकायतों का ढेर लगा है, लेकिन ज्यादातर मामलों का कागजी निस्तारण कर दिया जाता है। इससे न केवल राजस्व विभाग की निष्पक्षता पर सवाल उठ रहे हैं, बल्कि शासन-प्रशासन की साख भी दांव पर लग रही है।

शत्रुघ्न दुबे का अल्टीमेटम

न्याय की उम्मीद खो चुके शत्रुघ्न दुबे ने चेतावनी दी, "अगर यहां न्याय नहीं मिला, तो मैं हाईकोर्ट जाऊंगा।"क्या होगा अंजाम? अब सवाल यह है कि राजस्व विभाग की यह 'लीपापोती' कब तक चलेगी? क्या जिम्मेदार अधिकारियों पर कार्रवाई होगी, या फिर सब कुछ फाइलों में दबकर रह जाएगा? जनता की नजर इस मामले पर टिकी है।

समाजहित में अयूब व फैजुल्लाह ने लिया ऐतिहासिक निर्णय नगरवासियों मे खुशी की लहर

● कीमती निजी भूमि से सार्वजनिक रास्ता देना यह उदारता का परिचय है नगर पंचायत अध्यक्ष उनवल एडवोकेट महेश दुबे

स्वतंत्र प्रभात

खजनी गोरखपुर उनवल-किसी की पहचान उसके रुपये के दम पर समाज मे महज चन्द पल के लिए तो हो सकती है पर लोगो के दिलो-दिमाक पर राज करने के लिए समाज के हित में त्याग करना पड़ता है जिसकी वजह से लोग उन्हें पीढ़ी दर पीढ़ी याद रखते हैं।ऐसी ही नगरपंचायत उनवल के वार्ड नम्बर 9 में अयूब खान पुत्र मुन्नन खान चाचा,व फजीउल्लाह अंसारी के सहयोग से दर्जनों परिवार के लोगो के लिए अपनी खुद की बौलीयहवा के पास की जमीन दे कर वर्षो से चले आ रहे रास्ते के विवाद को खत्म कर जनहित में बहुत बड़ा योगदान दिया है जिसके लिए उनकी पूरी नगरपंचायत आभारी हैं। बताते चले कि नगरपंचायत उनवल के वार्ड नम्बर 9 में बौलियहवा के पास रास्ते को लेकर सन 1992 से विवाद चल रहा था जो आज भी दौरान मुकदमा है जन समस्या को देखते हुए उनवल नगरपंचायत अध्यक्ष श्री महेश कुमार दुबे व वार्ड सभासद प्रतिनिधि मनोज यादव सहित नगरपंचायत की पूरी टीम के साथ अन्य जिम्मेदार लोगो के निवेदन पर अयूब खान और फैजुल्लाह अंसारी ने अपनी दरिया दिली दिखाते हुए आपसी समझ बुझ से अपनी मर्जी से दर्जनों परिवार के हित में रास्ते के लिए जमीन देकर एक ऐतिहासिक निर्णय लिया। जिसकी पूरे उनवल में सराहना हो रही हैं साथ ही लोगो ने कहा की समाज के हित मे अन्य लोगो को भी इनसे सीख लेनी चाहिए ताकी विकास की कड़ी में नगरपंचायत उनवल का प्रत्येक व्यक्ति लाभान्वित हो सके। जिससे मानवता(सम्वेदना)जीवित रहे।

शिल्पकारों को दी गई आधुनिक पैकेजिंग तकनीक की जानकारी

चित्रकूट- उत्तर प्रदेश सरकार के एक जनपद एक उत्पाद (ओडीओपी) परियोजना के अंतर्गत धर्मनगरी स्थित सीतापुर वुडन टॉयज क्लस्टर में शुक्रवार को दो दिवसीय पैकेजिंग कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। जिसमें शिल्पकारों को आधुनिक पैकजिंग तकनीकों के बारे में बताया गया। कार्यशाला में भारतीय पैकेजिंग संस्थान (आईआईपी) के विशेषज्ञ सौरभ त्रिपाठी ने शिल्पकारों को आधुनिक एवं टिकाऊ पैकेजिंग तकनीकों, ब्रांडिंग के महत्त्व और बाजार में प्रतिस्पर्धात्मक लाभ के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। बताया कि कार्यशाला का उद्देश्य स्थानीय उद्यमियों को वैश्विक स्तर की पैकेजिंग तकनीकों से अवगत कराना एवं उनके उत्पादों को राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय बाजारों के लिए अधिक उपयुक्त बनाना है। ओडीओपी कंसल्टेंट साकेत चौधरी ने बताया कि इस प्रकार की कार्यशालाएं शिल्पकारों के लिए तकनीकी उन्नयन, बाजार की समझ और उद्यमिता विकास में अत्यंत सहायक सिद्ध हो रही हैं। यह पहल ओडीओपी योजना को जमीनी स्तर पर सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। बताया गया कि कार्यशाला के दूसरे दिन हैंड्स-ऑन डेमो, प्रोटोटाइप पैकेजिंग डिजाइन और फीडबैक सत्र आयोजित किए जाएंगे।

संक्षिप्त खबरें

मोहर्रम को लेकर प्रशासन सतर्क

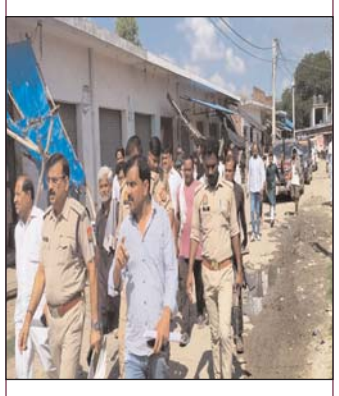

औरंगाबाद खीरी औरंगाबाद क्षेत्र में शांति व्यवस्था के मद्देनजर क्षेत्राधिकार मितौली व स्थानीय पुलिस बल के द्वारा औरंगाबाद क्षेत्र में मोहर्रम को लेकर मार्च निकाला गया।आगामी मोहर्रम को लेकर क्षेत्र में अमन चैन व शांति को लेकर क्षेत्राधिकारी मितौली व इंस्पेक्टर रविंद्र पांडे के द्वारा औरंगाबाद कस्बे में मार्च निकालकर जुलूस के रास्तों आदि का निरीक्षण किया गया तथा ताजिया दारों को यह बताया गया की ताजिया की लंबाई आदि का ध्यान रखें। किसी भी प्रकार की अव्यवस्था न फैले इसके लिए लोगों को जागरूक किया। किसी को किसी प्रकार की अराजकता या अराजकतत्व जैसी जानकारी मिलती है तो तत्काल प्रशासन को अवगत कारण। इस दौरान नवाब कल्वे हसन, रिजवान हैदर, अजीम अब्बास के साथ-साथ तमाम लोग मौजूद रहे।

पुलिस अधीक्षक ने रिजर्व पुलिस लाइन में परेड का किया निरीक्षण

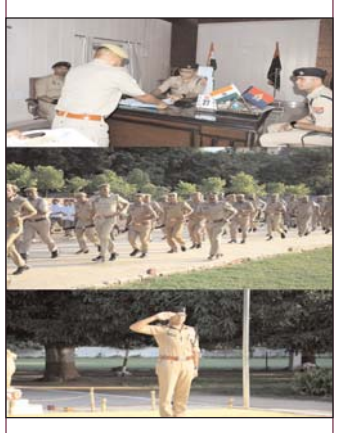

पुलिस लाइन में स्थित कार्यालयों के रजिस्टरों का अवलोकन किया गया

लखीमपुर खीरी दिनांक 27.06.2025 को पुलिस अधीक्षक संकल्प शर्मा द्वारा रिजर्व पुलिस लाइन खीरी के परेड ग्राउंड में शुक्रवार की साप्ताहिक परेड का निरीक्षण किया गया। इस दौरान पुलिस बल के शारीरिक व मानसिक रूप से फिट रहने के लिए समस्त पुलिसकर्मियों से दौड़ लगवायी गयी एवं अनुशासन व एकरूपता बनाए रखने के लिए ड्रिल करवाया गया। परेड में पुलिस लाइन का पुलिस बल तथा विभिन्न कार्यालयों में नियुक्त समस्त पुलिसकर्मी सम्मिलित हुए। निरीक्षण के पश्चात महोदय द्वारा परेड में शामिल समस्त पुलिसकर्मियों को साफ-सुथरी एवं स्वच्छ वर्दी धारण करने तथा नियमानुसार टर्नआउट मेंटेन करने हेतु निर्देशित किया गया।परेड के दौरान पुलिस अधीक्षक द्वारा प्रशिक्षु रिक्रूट आरक्षियों को शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ, तत्पर और अनुशासित बनाए रखने के लिए दौड़ लगवायी गयी व विभिन्न प्रकार के शारीरिक व्यायाम कराए गए।

सदियों बाद पाकुड़िया में हुआ रथ यात्रा का भव्य आयोजन

सुदूर ग्रामीण अंचलों से उमड़ा जनसैलाब, क्षेत्र में दिखा उल्लास और श्रद्धा का संगम

पाकुड़िया, पाकुड़, झारखंड– पाकुड़िया प्रखंड ने इस वर्ष एक ऐतिहासिक क्षण का साक्षी बनते हुए सदियों बाद रथ यात्रा महोत्सव का भव्य आयोजन किया। इस आयोजन ने न केवल धार्मिक आस्था को जीवंत किया, बल्कि क्षेत्रीय सांस्कृतिक विरासत को भी एक नई पहचान दी। भारतवर्ष अपनी आध्यात्मिक और धार्मिक चेतना के लिए विश्वविख्यात रहा है। यहां पर्व-त्योहार केवल धार्मिक अनुष्ठान भर नहीं, बल्कि जनमानस की सांस्कृतिक जीवंतता के प्रतीक होते हैं। जैसे महाराष्ट्र में गणेश उत्सव, ओडिशा में रथ यात्रा, बंगाल में दुर्गा पूजा तथा बिहार और उत्तर प्रदेश में छठ पर्व विशेष महत्व रखते हैं, वैसे ही पाकुड़िया में रथ यात्रा की परंपरा ऐतिहासिक रूप से समृद्ध रही है। पूर्वकाल में पाकुड़िया में रथ यात्रा के अवसर पर विशाल मेला लगता था, जिसमें प्रखंड सहित आसपास के सुदूर गांवों से भारी संख्या में श्रद्धालु जुटते थे। वर्षों के अंतराल के बाद इस परंपरा को पुनर्जीवित करते हुए इस वर्ष आयोजन को अत्यंत भव्यता के साथ संपन्न किया गया। श्रद्धालुओं ने पूरे उत्साह, आस्था और पारिवारिक सहभागिता के साथ इसमें भाग लिया। इस पुनरारंभ ने न केवल धार्मिक भावनाओं को अभिव्यक्ति दी, बल्कि क्षेत्र में सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक चेतना और पर्यटन की संभावनाओं को भी गति प्रदान की है। निसंदेह, यह आयोजन पाकुड़िया प्रखंड के गौरवपूर्ण इतिहास में एक अविस्मरणीय अध्याय के रूप में दर्ज हो गया है।

चोरों ने रायपुर बुजुर्ग गांव में एक रात में चटकाए 5 घरों के ताले,सोना-चांदी के साथ नगदी भी ले उड़े अज्ञात चोर।

● फॉरेंसिक टीम ने वैज्ञानिक साक्ष्य जुटाएं हैं

स्वतंत्र प्रभात

लखीमपुर खीरी। जिले के शहरी क्षेत्र में बड़ी वारदातें नहीं हो रही हैं, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में बड़ी चोरी की वारदातों को चोर अंजाम दे रहे हैं। लखीमपुर खीरी जिले के नीमगांव थाना क्षेत्र के ग्राम रायपुर बुजुर्ग में लाखों की नगदी समेत कीमती जेवरात चोरी होने का मामला सामने आए है, जिसमें चोरों ने एक रात में 5 घरों के ताले तोड़कर करीब 1 लाख की नगदी समेत बेशकीमती गहने व बर्तनों की चोरी की वारदात को अंजाम दिया है। इस चोरी की वारदात से पुलिस सुरक्षा पर सवाल खड़े हो गए हैं। चोरी की वारदात के बाद पीड़ित ग्रामीणों ने इस मामले की शिकायत नीमगांव थाने में दर्ज कराई है। करीब 1 लाख से अधिक रुपए की नगदी समेत करीब 12 लाख गहने चोरी। नीमगांव में चोर मस्त ! खूब खाए रसीले आम...पांच घरों के तालों भी चटकाए थाना नीमगांव पुलिस पर भारी पड़ रहे चोर क्षेत्र में लगातार चोरियों का जारी है,चोरों के आगे नीमगांव पुलिस पूरी तरह से पस्त हो गई है। गुलौला गांव में एक घरों में चोरी की वारदात हुए 48 घंटे भी नहीं बीत पाए थे कि चोरों ने गांव रायपुर बुजुर्ग के पांच घरों को निशाना बना लिया। करीब चोर 46,500 की नकदी और करीब दस लाख रुपये के जेवर चोरी कर ले गए थे।एसपी संकल्प शर्मा ने करीब डेढ़ महीने पहले लूट की घटना चोरी में दर्ज करने और घटनाओं का खुलासा न होने पर पर एसओ नीमगांव सुनीता कुशवाहा को हटा दिया था और फूलबेहड़ प्रभारी निरीक्षक आलोक कुमार धीमान पर भरोसा जताते हुए उन्हें थाना नीमगांव का प्रभारी निरीक्षक की कमान दे दी गई थी। आलोक धीमान के कार्यभार ग्रहण करने के बाद लोगों में उम्मीद जगी थी कि थाना क्षेत्र में बिगड़ी कानून व्यवस्था पटरी पर आने के साथ ही लूट और चोरी की बढ़ी वारदातों पर भी अंकुश लगेगा, लेकिन उनके प्रभार संभालने के बाद थाना क्षेत्र में चोरियों का सिलसिला निरंतर जारी है। गुरुवार की रात चोरों ने गांव रायपुर के पांच घरों पर धावा बोल दिया। चोर रमाकांत मौर्य के घर के उत्तर गैराज में खड़े ट्रेक्टर की फ्यूल पाइप काट दी और सारा डीजल जमीन पर गिरा दिया उसके बाद वहीं से दीवार पर चढ़ घर में प्रवेश कर 22 हजार रुपये की नगदी,दो लाख के जेवर उठा ले गए, जबकि जनार्दन भार्गव के घर से करीब 10 हजार रुपये की नकदी, पौने दो लाख के जेवर, राजेंद्र भार्गव के घर से अलमारी व बक्सों के ताले काटकर 10 हजार रुपये की नगदी और करीब तीन लाख के जेवर, व रामलोटन के घर से 2000 रुपये की नकदी और करीब पांच लाख के सोने-चांदी के गहने चोरी कर ले गए। गांव के श्रीकांत मौर्य के घर में घुसे चोरों ने वहां रखे करीब दो किलोग्राम आम खाए और बक्से में रखे 2500 रुपये की नकदी,दो लाख के जेवर, बर्तन,आदि सामान चोरी कर भाग निकले।

सरकार शिक्षा को पारदर्शी बनाकर युवाओं को बना रही आत्मनिर्भर- अवनीश सिंह

स्वतंत्र प्रभात

गोला गोकर्णनाथ-खीरी। क्षेत्र के भ्रमण पर निकले लखनऊ स्नातक खंड क्षेत्र से भाजपा के स्नातक एमएलसी इंजीनियर पटेल अवनीश कुमार सिंह नें क्षेत्र के विकास एवं जनसंवाद के कार्यक्रमों में प्रतिभाग किया है।एमएलसी गोला विधायक अमन गिरि के आवास पहुंचने पर उनका फूल मालाओं से स्वागत हुआ। क्षेत्र के विकास से सम्बंधित विभिन्न मूलभूत सुविधाओं को बेहतर बनाने एवं शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान पर संवाद स्थापित करते हुए क्षात्र-छात्राओं की कार्यशाला के संबोधन में कहा कि सरकार शिक्षा को पारदर्शी बनाकर युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने का काम कर रही है। धांधली रोककर नकल विहीन प्रतियोगी परीक्षाएं कराई गई हैं। परीक्षाओं का रोस्टर बनाने, प्रतियोगी छात्रों की अनिश्चित खत्म करने एवं लोकतंत्र में उनकी भागीदारी सुनिश्चित कराने पर काम किया जा रहा है। संचालक पटेल सुशील वर्मा ने स्मृति चिन्ह भेंट किया।भेखराम वर्मा, शिक्षक नरेंद्र वर्मा,विजयपाल , चंद्रशेखर, राकेश कुमार,रमन वर्मा मौजूद रहे। शहर के भारत डायग्नोस्टिक सेंटर पर पहुंचकर संचालक विक्रम वर्मा का मार्गदर्शन कर स्नातक साथियों से रूबरू हुए। सनशाइन हॉस्पिटल पर डॉक्टर कौशल वर्मा की टीम ने उनका फूल मालाओं से स्वागत कर स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया।अद नेता अभिजय सिंह पटेल,मुस्तफा बाद के संत प्रवीण दास,अनुज सिंह, प्रतीक मिश्रा, पारस वर्मा, ज्ञानचंद,लखपति राम वर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर अंकुर वर्मा, हरीश पटेल,रवि प्रकाश अग्रवाल, सौरभ शुक्ला,इंजी0अभिषेक, लालाराम,आनन्द एड0,अजय आदि मौजूद रहे।

हत्या का प्रयास करने वाला वांछित अभियुक्त बांका सहित गिरफ्तार,

● विवेचक उप निरीक्षक कलाम सस्पेंड

स्वतंत्र प्रभात

गोला गोकर्णनाथ-खीरी। थाना हैदराबाद क्षेत्र में हत्या के प्रयास के मामले में फरार चल रहे वांछित अभियुक्त विपिन कुमार को पुलिस ने एक बांका (धारदार हथियार) के साथ गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। यह कार्रवाई 27 जून 2025 को की गई। मालूम होकि मामला 18 मई का है जब ग्राम भरतपुर में अजीत कुमार और विपिन कुमार के बीच किसी बात को लेकर कहासुनी हो गई थी, जो बाद में हिंसक झड़प में बदल गई। इस मारपीट में अजीत कुमार को गंभीर चोटें आई थीं। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच उप निरीक्षक मोहम्मद कलाम को सौंपी थी। आरोप है कि विवेचक उप निरीक्षक कलाम ने गंभीर धाराएं हटा दीं, जिससे मामले की गंभीरता कम हो गई। अजीत कुमार व उसके परिजनों ने एसपी संकल्प शर्मा से शिकायत कर आरोप लगाया कि पैसों के लेनदेन के चलते ऐसा किया गया। जांच के बाद एसपी खीरी संकल्प शर्मा ने उप निरीक्षक कलाम को सस्पेंड कर दिया।इसके बाद हैदराबाद पुलिस ने तेजी दिखाते हुए मुकदमा संख्या 0138/2025, धारा 115(2)/352/351(2)/118(1) /109 बीएनएस के तहत वांछित चल रहे विपिन कुमार पुत्र श्री चन्द्र निवासी ग्राम भरतपुर, थाना हैदराबाद को एक बांका के साथ गिरफ्तार कर न्यायालय के समक्ष पेश किया गया। आगे की पुलिस जांच जारी है।

अनाथालय व 10 रूपए में भरपेट भोजन की दुकान पर दबंगई से कब्जा दबंगों का कब्जा

● प्रशासन ले संज्ञान गरीबों के पेट पर लात मारने वालो पर हो कार्रवाई

स्वतंत्र प्रभात

लखीमपुर खीरी। दिनांक 26-6-2025 को मेला रोड पर अतिक्रमण के संबंध में खबर छापी थी शुक्रवार को हमारे संवाददाता को जानकारी करने पर यह पता चला की अनाथालय पर लोगों का अनेक रूप से कब्जा है तथा गोविंद गुप्ता जो की गोविंद डेरी के मालिक हैं के द्वारा महेवा स्टेट से मिलकर अनाथालय की भूमि पर षड्यंत्र के तहत अपने नाम कर लिया गया है और जिस दुकान में गोविंद डेरी चल रही है वह जगह का बैनामा भी मेरा स्टेट से करा लिया गया है बगैर नक्शा पास किए हुए इतनी बड़ी बिल्डिंग बना ली गई तथा अतिक्रमण होने के नाम पर भी उसे बिल्डिंग पर से अतिक्रमण नहीं हटाया जा रहा है इसकी अतिरिक्त लेनदेन करके अनाथालय में अनाधिकृत रह रहे स्थानीय सभासद कुमदेश शंकर शुक्ला की मदद से अनाथालय पर कब्जा करने की तैयारी कर रहे हैं अनाथालय में वर्षों से कब्जा जमाए बैठे कुमदेश शंकर शुक्ला और उनके परिवार के लोग अनुज शुक्ला पुनित शुक्ला अनारकली बेवा कुबेर शंकर शुक्ला और उनके परिवार अनाथालय को बंद करके बाहरी दुकानों का किराया खा रहे हैं यह भी पता चला है कि उसमें चल रही 10 रूपए के खाने वाली दुकान पर जिससे गरीबों को भरपेट भोजन दिया जा रहा था कब्जा कर लिया गया है तथा दुकान बंद कर दी गई है इसी तरह से पूर्व में जो ट्रांसपोर्ट चल रहा था उसको बंद कर दिया गया है तथा अनासालय द्वारा और गोविंद गुप्ता द्वारा मिलकर उसे पर ताला लगा दिया गया प्रशासन संज्ञान ले और लखीमपुर में जो चल रहा है अनाथालय उसको खुर्द बर्द करने और बेचने के जिम्मेदार लोगों के प्रति कठोर कार्रवाई करते हुए अनाथालय को अपने कब्जे में लेकर चलाए की अनाथालय के अध्यक्ष और महामंत्री कभी वहां नहीं आते हैं क्योंकि कमेटी को समाप्त कर दिया गया है और उनको घुसने नहीं दिया जाता है।

बैंक ऑफ़ महाराष्ट्र शाखा गोला का उद्घाटन बालिका अध्यक्ष द्वारा किया गया

स्वतंत्र प्रभात

गोला गोकर्णनाथ-खीरी। बैंक आफ महाराष्ट्र की नगर गोला में स्थापित 52 वीं शाखा का उद्घाटन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित नगर पालिका अध्यक्ष विजय शुक्ला रिंकू द्वारा फीता काटकर किया गया। मुख्य अतिथि विजय शुक्ला ने बैंक का उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि बैंक ऑफ़ महाराष्ट्र की नीतियों को अपनाते हुए जनकल्याण का कार्य करें तथा बैंक का विकास बहुत अच्छा है और सरकार की विकास नीतियो को आम जन तक पहुंचने की भूमिका निभाएं। उत्तर प्रदेश तेजी से बढ़ता हुआ राज्य होने के नाते व्यापार विस्तार योजना में सबसे आगे है।

इस अवसर पर अंचल प्रबंधक अमित गोयल ने बताया कि बैंक 22 मानदंडों में 18 मानदंडो मैं सबसे आगे है तथा सरकारी योजनाओं के प्रचार प्रसार व सरकारी योजनाओं से राज्य के लोगों को सर्वोत्तम सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि बैंक ऑफ़ महाराष्ट्र को उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा स्वयं सहायता समूह के लिए किए गए कार्यों के लिए सम्मानित किया जा चुका है। बैंक उद्घाटन के अवसर पर महेंद्र त्रिपाठी शाखा प्रमुख मोनार्कगुप्ता सहित नगर के तमाम संभ्रांत नागरिक और पत्रकार बंधु उपस्थित थे।

धूमधाम से मनाया गया पंचपीर रह0 का उर्स मुबारक महफिलेंसमा, कुलशरीफ की नियाज़ कराई गई

● मेहमाने खुसूसी रहे देवा शरीफ के खादिम बाबा निराला शाह

स्वतंत्र प्रभात

लखीमपुर खीरी पंचपीर रह0 का सालाना उर्स मुबारक आक़िदत के साथ मनाया गया जिसमें मेहमाने खुसूसीकी हैसियत से देवां शरीफ़ के खादिम बाबा निराला शाह ने शिरकत की।इस मौके पर बाबा निराला शाह ने कहा कि इन बुजुर्गों के आस्तानो पर मजहब की दूरियां खत्म होती हैं और यहां से आपसी भाईचारे और राष्ट्रीय एकता का संदेश मिलता है। बाबा ने खानकाही तालीम पर रौशनी डालते हुई कहा खानकाह की तालीम मुहब्बत है सारी दुनिया एक अल्लाह की मखलूक है सबसे मुहब्बत करो, यही वारसी पैगाम है। सरकार आलम पनाह वारिस पाक ने फरमाया मुहब्बत करो मुहब्बत में खुदा है। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सब एक अल्लाह के बंदे हैं 7 उर्स के मौके पर आस्ताने पर सैकड़ों की संख्या में हिन्दू, मुस्लिम, सिख धर्म के लोग अकीदत के फूल चढ़ाते है। इस दौरान बाबा निराले शाह वारसी ने संदल पेश किया, परंपरागत तरीके से गागर उठाई गई, चादर पेश की गई और फातिहा ख्वानी के बाद महफिले समा हुई जिसमे रफ़ीक़ सहित कई क़ौवालों ने कलाम पेश किया। इस दौरान मौलाना नियाज़ वारसी मस्तान शाह वारसी तमन्ना शाह वारसी अन्नू शाह शकील खान सागर सरपरस्त आक़िदत खान, फाउंडेशन के अध्यक्ष हाजी इल्यास, उपाध्यक्ष सय्यद आमीन हाश्मी, राहुल वर्मा, दिवाकर तिवारी, अनुराग सिंह, कोषाध्यक्ष इक़बाल अकरम वारसी, आमिर रज़ा पम्मी, सपा नेता शारिब अंसारी, मुराद, सभासद प्रतिनिध अदनान अंसारी सहित सैकड़ो लोगों ने हिस्सा लिया।

अंबेडकर की प्रतिमा पर थोड़ा चलाने के बाद उत्पन्न हुआ तनाव गांव में पुलिस तैयनाथ

स्वतंत्र प्रभात

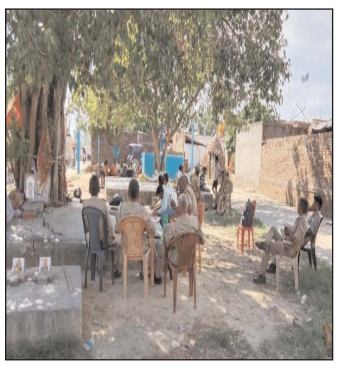

बरेली/नवाबगंज थाना क्षेत्र के गांव गंगापुर में खुरापतियों द्वारा गांव में स्थापित भारत रत्न बाबा साहब भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा है इस को लेकर कई महापूर्व से विवाद चल आ रहा है जिसके चलते कई बार अधिकारियों ने गांव पहुंचकर मामले को शांत करने का प्रयास किया । परंतु सफलता नहीं मिली बीती रात खुरापातियों द्वारा गांव में लगी अंबेडकर की प्रतिमा को हथोड़ा वर्षा कर खंडित किया गया यह तस्वीर सीसीटीवी कैमरे में कैद होने से स्पष्ट हुआ उपद्रवियों द्वारा प्रतिमा पर पड़ी फूलों की माला को पहले उतारकर फेंका गया इस के बाद उसे पर हथौड़ा बरसाए गए यह पूरा खेल पुलिस को । सीसीटीवी फुटेज के अनुसार मिला है पुलिस ने खुराफातियों की धर पकड़तेज कर दी है जिसके अनुसार पुलिस ने अब तक 7 लोगों को गिरफ्तार किया है परंतु गांव में तनाव की स्थिति बरकरार होने के कारण गांव में पुलिस फोर्स तैयनाथ कर दिया गया है गांव में पुलिस नवाबगंज क्यों लड़िया हाफिजगंज आदि थानों का पुलिस बल तैयनाथ कर दिया गया है। ताकि गांव में खुरापतियो के अपने मंसूबे में कामयाब ना हो सके यह विवाद विकासखंड भदपुरा की ग्राम पंचायत बड़ागांव के मजरा ग्राम गंगापुर में कई महा सेचल रहा था जिसे अब गंभीर रूप धारण कर लिया है इधर प्रशासन ने भी खुरापतियों पर शिकंजा कसना शुरू कर दिया है ताकि विवाद को और तूलना दिया जा सके।

क्या चभाल कृषि समिति के बैंक खाते में भी हेरा फेरी

स्वतंत्र प्रभात

लखीमपुर खीरी। चभाल सहकारी समिति के 258 एकड़ जमीन की भूमाफियाओं ने फर्जी तरीके से खरीद फरोख्त की थी जो कि जांच में सही पाई गई। मामले में उच्चाधिकारियों के आदेश निर्देश पर सहकारिता विभाग के अधिकारियों की एक जांच समिति गहन छानबीन कर जांच कर रही है। बताया जाता है कि चभाल सहकारी समिति का जिला सहकारी बैंक सुंदरवल में खाता नंबर 24 एक अर्से से बंद पड़ा था। जैसा कि क्षेत्र में चर्चा व सूत्रों से जानकारी मिली है कि भू माफियाओं ने शाखा प्रबंधक से मिलकर कुछ फर्जी कागजातों के आधार पर लेनदेन करने हेतु खाता चालू करवा दिया और कुछ भी पेमेंट का भी लेन देन हुआ ताकि खाता संचालन जारी रहे। बताते हैं कि सहकारिता विभाग को जब इसकी जानकारी मिली तो जांच कमेटी ने जिला सहकारी बैंक सुंदरवल में स्थित इस खाते पर कथित रूप से रोक लगा दी। जांच कमेटी के अध्यक्ष जसवंत सिंह को खाता संचालन के संबंध में जानकारी लेने के लिए फोन लगाया गया परंतु उनका फोन नहीं उठा। मामले में शाखा प्रबंधक अनुज पुरी द्वारा इस खाते को चालू करने के कारण लोगों में उनकी भूमिका पर भी सवालिया निशान लगा रहे हैं। बहरहाल जांच पड़ताल अभी जारी है वास्तविकता का पता तो जांच पूरी होने के बाद ही चलेगा।

महेशपुर प्रखंड में उर्वरक विक्रेताओं के प्रतिष्ठानों का औचक निरीक्षण

● खरीफ सीजन को लेकर जिला प्रशासन सख्त, जमाखोरी व मुनाफाखोरी पर होगी कार्रवाई

स्वतंत्र प्रभात

पाकुड़, झारखंड– खरीफ मौसम की शुरुआत और धान, मक्का, जूट जैसी मुख्य फसलों के लिए उर्वरक एवं बीज की मांग में वृद्धि को देखते हुए, जिला प्रशासन ने जमाखोरी और अधिक मूल्य पर बिक्री जैसी गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए महेशपुर प्रखंड में उर्वरक विक्रेताओं के प्रतिष्ठानों का औचक निरीक्षण किया। यह निरीक्षण उपायुक्त पाकुड़ द्वारा गठित विशेष जांच दल के द्वारा किया गया, जिसमें जिला कृषि पदाधिकारी मृत्युंजय कुमार, खाद्य सुरक्षा पदाधिकारी धनेश्वर हेंब्रम एवं पणन सचिव संजय कच्छप शामिल थे। निरीक्षण के दौरान दल द्वारा उर्वरक नियंत्रण आदेश 1985 एवं आवश्यक वस्तु अधिनियम 1955 के तहत विक्रेताओं से विभिन्न दस्तावेजों, मूल्य सूची, स्टॉक रजिस्टर आदि की जांच की गई। जांच के क्रम में नियमों के अनुपालन में पाई गई शिथिलताओं पर संबंधित उर्वरक विक्रेताओं से स्पष्टीकरण तलब किया गया है। अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि यदि स्पष्टीकरण संतोषजनक नहीं पाया गया, तो उनके विरुद्ध उर्वरक नियंत्रण आदेश की सुसंगत धाराओं के तहत कठोर कार्रवाई की जाएगी। जिला कृषि पदाधिकारी ने सभी उर्वरक विक्रेताओं को स्पष्ट चेतावनी देते हुए कहा कि यदि किसी भी विक्रेता के विरुद्ध जमाखोरी या मुनाफाखोरी की शिकायत प्राप्त होती है, तो संबंधित के विरुद्ध कठोर विधिक कार्रवाई की जाएगी। किसानों के हितों के साथ किसी भी प्रकार का समझौता बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। जिला प्रशासन की इस कार्रवाई से स्थानीय किसानों में संतोष का भाव देखा गया है। प्रशासन ने संकेत दिया है कि आगे भी इस प्रकार के औचक निरीक्षण जारी रहेंगे।

चौपारण में तीसरी बार आयोजित रथ महोत्सव में उमड़ा आस्था का जनसैलाब

● सांसद- विधायक सहित कई गणमान्य हुए शामिल, रथ खींचकर भगवान से क्षेत्र की सुख, शांति और समृद्धि की कामना की

स्वतंत्र प्रभात

हजारीबाग शुक्रवार को हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के बरही विधानसभा क्षेत्रांतर्गत चौपारण प्रखंड स्थित श्री जगन्नाथ मंदिर बैजनाथ नगर, सियरकोनी में लगातार तीसरे साल तीसरी पहली बार श्री रथयात्रा महामहोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। इस श्री रथयात्रा महामहोत्सव के भव्य आगाज़ के अवसर पर हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद मनीष जायसवाल बतौर मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथि के रूप में बरही विधायक मनोज कुमार यादव, बरकट्ठा विधायक अमित कुमार यादव, चतरा जिप उपाध्यक्ष बिरजू तिवारी सहित अन्य गणमान्य लोग शामिल हुए और रथ की रस्सी खींचते हुए भगवान जगन्नाथ, बहन सुभद्रा और भाई बलभद्र से क्षेत्र की सुख, शांति और समृद्धि की कामना की। इससे पूर्व यहां पहुंचने पर सांसद मनीष जायसवाल और विधायक मनोज कुमार यादव, विषयक अमित कुमार यादव सहित अन्य अतिथियों का रथ यात्रा आयोजन समिति के लोगों ने पगड़ी और पट्टा पहनाकर अभूतपूर्व स्वागत किया। रथ यात्रा में गाजे-बाजे, ढ़ोल- तासे, घोड़ा गाड़ी, भजन- कीर्तन जत्थे, विदेशी नागरिकों के हरे कीर्तन सहित अन्य प्रकार की अद्भुत झलक के साथ श्रद्धा और ईश्वर आस्था में डुबकी लगाते हुए सनातन श्रद्धालुजन शामिल हुए। यात्रा के संचालन में आरएसएस के स्वयंसेवक सहित कई स्थानीय राजनीतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक और सामाजिक संगठनों के लिए जुटे हुए रहें। मौके पर सांसद मनीष जायसवाल ने कहा की चौपारण में जीटी रोड़ पर प्रचंड गर्मी में भी आस्था का जो जनसैलाब उमड़ा वह अभूतपूर्व, ऐतिहासिक और अद्भुत है। उन्होंने कहा की भारत के प्राचीन संस्कृति की जीवंत झलक यहां दिखी। उन्होंने यह भी कहा की वाकई हमारा देश और समाज बदल रहा है। इस महामहोत्सव के आगाज़ में धार्मिक आस्था का जनसैलाब ईश्वर भक्ति से सराबोर दिखा। हरे कृष्णा हरे राम, जय श्री राम के साथ जय जगन्नाथ, बहन सुभद्रा और भाई बलभद्र पूरा क्षेत्र गुंजायमान दिखा

संक्षिप्त खबरें

ब्रजेश नारायण त्रिपाठी बने खंड विकास कार्यालय सुरियावा के नए खंड विकास अधिकारी

भदोही /सुरियावा 27 जून 2025 शुक्रवार को जनपद स्थित खंड विकास कार्यालय सुरियावा के नए खंड विकास अधिकारी के रूप में बृजेश नारायण तिवारी द्वारा कार्यभार ग्रहण किया गया इस दौरान उन्होंने बताया कि शासन द्वारा चलाए जा रहे विकास योजनाओं को धरातलीय रूप देना प्रथम प्राथमिकता होगी इस मौके पर कार्यालय में तैनात कर्मचारियों द्वारा स्वागत किया गया

विकास खंड स्तर पर आयोजित समर कैंप सम्बन्धी निम्बन्ध व चित्रकला प्रतियोगिता में छात्राओं ने बाजी मारी

ब्लॉक संसाधन केंद्र सुरियावां में आज समर कैम्प से सम्बन्धी निम्बन्ध एवम चित्रकला प्रतियोगिता खंड शिक्षा अधिकारी सुरियावां श्री यशवंत सिंह की देखरेख में सम्पन्न हुआ, इस दौरान निम्बन्ध में 13 एवम चित्रकला 19 छात्र व छात्रओं ने प्रतिभाग किया,प्रतियोगिता में प्रतिभाग करने वाले टॉप 3 स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को मेडल व ट्रॉफी के साथ अन्य विशेष पुरस्कार एवम अन्य समस्त बच्चों के सांत्वना पुरस्कार दिया गया, इस दौरान एसआरजी विनय शंकर पांडेय, एआरपी मनोज प्रभाकर सिंह, भास्करानंद मिश्र के साथ एलएलएफ लालचंद यादव प्रधानाध्यापक सुरेश चंद, वेद प्रकाश रघुवंशी, राजपति मौर्य, सन्तोष शुक्ल, जशवंत राव, संतलाल सोनकर, लाल बहादुर आदि उपस्थित रहें।

बिजली के पंखे में उतरे करंट के प्रवाह के चपेट में आने से महिला की मौत

चुनार, मिर्जापुर। कोतवाली क्षेत्र के ऐबकपुर मोहाना मोहल्ले में शुक्रवार को सुबह घर में रखे पंखे में करंट आ जाने से रेखा सोनकर पत्नी राकेश सोनकर उम्र 35 वर्ष चपेट में आ गई। आनन फानन में परिजन उसे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चुनार ले गए जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया परिजनों ने घटना की जानकारी पुलिस को दी मौके पहुंची पुलिस ने शव को पंचनामा करा कर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है वहीं परिवार में कोहराम मचा हुआ है।

बुंदेलखंडी वार्ड में नपाध्यक्ष श्यामसुंदर केशरी ने किया निरीक्षण

मीरजापुर। नपाध्यक्ष श्यामसुंदर केशरी ने पालिका के अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ बुंदेलखंडी वार्ड में औचक निरीक्षण किया।निरीक्षण के दौरान वार्ड की सफाई व्यवस्था का जायजा लिया और आमजन से मुलाकात कर उनकी समस्याएं भी सुनी।इस दौरान उन्होंने अधिकारियों से वार्ड में स्वच्छता बनाए रखने हेतु की जा रही व्यवस्थाओं की समीक्षा की और उपस्थित अधिकारियों को साफ-सफाई में और अधिक सुधार लाने, नियमित कचरा निस्तारण, सार्वजनिक स्थानों की सफाई सुनिश्चित करने तथा जनभागीदारी बढ़ाने के लिए कड़े शब्दों में स्पष्ट निर्देश दिया। इस मौके पर सभासद अलंकार जायसवाल, हुकुमचंद मौर्या, जटाशंकर सिंह पटेल, आशीष सुदर्शन सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

नपाध्यक्ष श्यामसुंदर केशरी ने लालडिग्गी और घंटाघर में सुनी जनता की समस्याएं

मीरजापुर। नपाध्यक्ष श्यामसुंदर केशरी ने जनता से जुड़ी समस्याओं को लेकर लालडिग्गी और घंटाघर पहुंचकर समस्याओं को सुना और उसके निस्तारण के लिए अधिकारियों से वार्ता भी की।नगर के लालडिग्गी रोड पर जल निगम के द्वारा किए जा रहे कार्यो के कारण आ रही समस्याओं को लेकर स्थलीय निरीक्षण करने पहुंचे।जहा स्थानीय लोगों के शिकायत के बाद नपाध्यक्ष ने जल निगम के अधिकारियों से स्पष्ट और कड़े शब्दों में निर्देश दिया की कार्य को जल्द से जल्द पूर्ण करें,जिससे आम जनमानस को हो रही परेशानियों से राहत मिल सके।इसके साथ ही स्थानीय शिकायत पर नटवा, चंद्रदीपा,बुन्देलखण्डी वार्ड में भी स्थलीय निरीक्षण कर साफ सफाई की व्यवस्थाओं को देखा और जनता से फीडबैक लेकर संबंधित अधिकारियों को साफ सफाई से संबंधित आवश्यक दिशा निर्देश दिया। घंटाघर में भी साप्ताहिक जनता दरबार में भी आए लोगों की समस्याएं को सुनकर अधिकारियों को दिशा निर्देश दिया।

थाना ज्ञानपुर साइबर हेल्प डेस्क टीम द्वारा साइबर फ्रॉड के शिकार पीड़ित के बैंक खाते में 40,000/की धनराशि कराया गया वापस

स्वतंत्र प्रभात

साइबर अपराध प्रभावी की रोकथाम हेतु अभिमन्यु मांगलिकपुलिस अधीक्षक भदोही द्वारा जनपद के समस्त थानों को किसी पीड़ित व्यक्ति के साथ हुए धोखाधड़ी या सोशल साइट के दुरुपयोग पर त्वरित कार्यवाही करने हेतु निर्देशित किया गया है।

दिनांक 11.06.2025 को आवेदक अजय कुमार पाण्डेय निवासी जनपद प्रतापगढ़ द्वारा थाना ज्ञानपुर के साइबर हेल्प डेस्क पर शिकायती पत्र दिया गया था कि उनके साथ किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा 82,000 का साइबर फ्रॉड कर लिया गया है। उक्त प्रार्थना पत्र पर साइबर हेल्प डेस्क टीम थाना ज्ञानपुर द्वारा उक्त शिकायत पत्र का अवलोकन कर त्वरित कार्यवाही करते हुए 40,000/-रु की धनराशि सम्बंधित पीड़ित के बैंक खाते में वापस कराया गया। पीड़ित द्वारा अपने खाते से गयी धनराशि को वापस पाकर पुलिस अधीक्षक भदोही व थाना ज्ञानपुर पुलिस थाना टीम के प्रति आभार व्यक्त करते हुए भूरि- भूरि प्रशंसा की गयी।

साइबर फ्रॉड के बचने के लिए सावधानियां-

1 साइबर फ्राड होते ही तत्काल 1930 पर कॉल कर शिकायत दर्ज करें।

2 किसी अन्जान व्यक्ति के कहने पर कोई एप डाउनलोड़ न करें।

3 वर्क फ्राम होम, शेयर ट्रेडिंग करने से पहले सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त कर ही उपयोग करें।

4 कृपया किसी अनजान व्यक्ति के द्वारा पैसो की मांग किये जाने पर अच्छे से जाँच

ले एवं अपने खाते का बैलेंस चेक कर ले, किसी के बहकावे में न आये।

5 अज्ञात व्यक्ति/अज्ञात मोबाइल नम्बर द्वारा भेजी गयी लिंक को क्लिक न करें।

साइबर हेल्प डेस्क टीम थाना ज्ञानपुर -

1.थानाध्यक्ष ज्ञानपुर मनीष कुमार द्विवेदी

3.कंप्यूटर ऑपरेटर (ग्रेड बी) अमित कुमार यादव

2 का0 कांस्टेबल कौशल कुमार यादव

आज शनिवार को 7घंटे विद्युत आपूर्ति रहेगी बंद

सब स्टेशन-33/11 केवी सुरियावां, मोड़, करियाव
फीडर -33 केवी सुरियावां फीडर
कार्यस्थल- 33 केवी

सुरियावां फीडर कार्य- 33 केवी सुरियावां फीडर का आरडीएसएस योजना के अंतर्गत पोल लगाने एवं तार बदलने का कार्य। दिनांक 28.06.2025 दिन शनिवार को आरडीएसएस के अंतर्गत 132 केवी फत्तूपुर से निकलने वाले 33 केवी सुरियावां फीडर पर mid- span पोल लगाने एवं तार बदलने का कार्य किया जाना है। अतः इन क्षेत्रों में कल दिनाँक 28.06.2025को प्रातः 10:00 बजे से शाम 05:00 बजे तक विद्युत आपूर्ति बाधित रहेगी। उक्त शटडाउन से 33 केवी सुरियावां से चलने वाले तीन उपकेंद्र मोड़, करियाव एवं सुरियावां उपकेंद्र की विद्युत सप्लाई बाधित रहेगी। साथ ही फत्तूपुर उपकेंद्र से निर्गत 11 के वी मोड़ फीडर भी उक्त कार्य के दृष्टिगत उक्त अवधि तक बंद रहेगा।

घर से सिलाई-कढ़ाई का सामना लेने निकली युवती गंगा में छलांग लगा कर दे दी जान

● जान देने का कारण परिजन भी नहीं बता पाए

स्वतंत्र प्रभात

सीखड़, मीरजापुर। शुक्रवार को दोपहर में घर से सिलाई-कढ़ाई का सामना बाजार से लेने बता कर घर से निकली युवती ने चुनार पक्का पुल पर से गंगा में कूद कर अपनी जान दे दी। पास में मछली मार रहे मछुआरों ने गंगा में छलांग लगाकर युवती को बाहर निकाला। और इसकी सूचना चुनार थाना को दी। प्राप्त जानकारी के अनुसार शुक्रवार को शिवांगी सिंह 25वर्ष पुत्री सुरेन्द्र सिंह निवासी कछवा डीह थाना कछवा घर पर मां से सिलाई-कढ़ाई का सामना लेने बाजार जा रही हूं बोल कर निकली थी और जा पहुची बीस किलोमीटर दूर चुनार पक्का पुल पर और वगैर कुछ सोचें समझें पुल से गंगा में छलांग लगा दी। गंगा में मछली पकड़ रहें मछुआरों ने देखा तो पानी में कूद कर युवती को बाहर निकाला। और इसकी सूचना चुनार थाने पर दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने युवती को इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चुनार लें गई जहां डॉक्टरों द्वारा उसे मृत घोषित कर दिया गया। चौकी प्रभारी सुरेश सिंह ने बताया कि सोशल मीडिया के माध्यम से युवती का पता लगा गया तो पता चला कि मृतका शिवांगी सिंह है जो कछवा थाना क्षेत्र के कछवा डीह की रहने वाली है कछवा पुलिस के माध्यम से युवती के घर सूचना दी गई जिस पर युवती की मां अजोरा देवी और बहन जागृति सिंह मौके पर पहुंच कर युवती की पहचान अपनी बेटी के रूप में की। पुलिस शव को कब्जे में लेकर अग्रीम कार्रवाई में जुटी हुई है।

विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान 01 से 31 जुलाई व दस्तक अभियान 11 से 31 जुलाई 2025 के सफल क्रियान्वयन हेतु सीडीओ ने की बैठक

● ग्रामीण स्तर पर संचारी रोगों के नियंत्रण हेतु तालाबों/नालों व नालियों की साफ-सफाई सुनिश्चित कराये-सीडीओ

01 जुलाई से पहले संचारी रोग नियंत्रण के सम्बन्ध में सभी आवश्यक व्यवस्थाएं पूर्ण कराये-सीडीओ

स्वतंत्र प्रभात

भदोही 27 जून 2025:-जिलाधिकारी शैलेष कुमार के कुशल निर्देशन में नवागत मुख्य विकास अधिकारी बाल गोबिन्द शुक्ल ने कलेक्ट्रेट सभागार में 01 से 31 जुलाई 2025 तक चलने वाले विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान तथा 11 से 31 जुलाई 2025 के मध्य दस्तक अभियान को लेकर अंतर्विभागीय समन्वय की बैठक कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। बैठक के दौरान सीडीओ ने संचारी रोगों की रोकथाम एवं नियंत्रण के लिए पूरी तैयारी समयबद्ध ढंग से किए जाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया, डायरिया आदि संचारी रोगों से जुड़े मामलों की आशंका को देखते हुए जनपद में अन्तर्विभागीय समन्वय से युद्धस्तर पर अभियान को आगे बढ़ाया जाए।

मुख्य विकास अधिकारी ने सभी अधिकारियों को निर्देश दिया कि माईक्रोप्लान के अनुसार कार्य सम्पादित कराये। जिस दिन किसी कारण वश कार्य नही हो पाता है, रिपोर्ट स्वास्थ्य विभाग को जरूर दे दे, अगले दिन छूटे कार्य को अवश्य ले ले ताकि कोई स्थान छूटने न पाये। पिछली बार की तरह शीर्ष स्थान पर रहने के लिए बेहतर प्लानिंग करके कार्यक्रम को सम्पादित कराना सुनिश्चित करें। साथ ही 30 जून को समय 04 बजे सभी अधिकारी जूम मिटिंग के माध्यम से समीक्षा विभागवार की जायेगी।

सीडीओ ने बताया कि विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान जनपद में 01 से 31 जुलाई 2025 तक संचालित किया जाएगा। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि आगामी 01 जुलाई से पहले संचारी रोग नियंत्रण के सम्बन्ध में सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित कर लें। साप्ताहिक बन्दी के दौरान स्वच्छता, सैनिटाइजेशन तथा फॉगिंग का विशेष कार्यक्रम संचालित किया जाए। तालाबों, नालों व नालियों में एण्टी लार्वा का छिड़काव तथा कूड़े का निस्तारण ठीक ढंग से किया जाए। सीडीओ ने कहा कि निगरानी समितियां डोर- टू-डोर सर्वे करें और यदि कोई बच्चा बुखार आदि से ग्रसित है, तो उसे मेडिसिन किट उपलब्ध कराएं। साथ ही, महिलाओं तथा कुपोषित बच्चों को पुष्टाहार उपलब्ध कराया जाए। ग्रामीण स्तर पर संचारी रोगों के नियंत्रण हेतु तालाबों/नालों व नालियों की साफ-सफाई सुनिश्चित की जाए।

सीडीओ ने सम्बन्धित विभागों से संचारी रोगों के नियंत्रण व रोकथाम के सम्बन्ध में किए जा रहे कार्यो की जानकारी प्राप्त की। साथ ही उन्होंने चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, नगर विकास, पंचायतीराज, आई0सी0डी0एस0, ग्राम्य विकास, चिकित्सा शिक्षा, शिक्षा, दिव्यांगजन सशक्तीकरण, कृषि, पशुपालन, खाद्य एवं औषधि प्रशासन, सूचना विभाग तथा अन्य सभी सबंधित विभाग को स्वास्थ्य विभाग के साथ समन्वय बनाकर संचारी रोगों की रोकथाम व नियंत्रण की के संबंध में कार्यवाही करें।

मुख्य विकास अधिकारी ने जिला विद्यालय निरीक्षक व जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी को निर्देश दिया कि 01 जुलाई 2025 को स्कूल में छात्र/छात्राओं द्वारा प्रभात फेरी निकालकर, शिक्षकों द्वारा प्रार्थना सभा में बच्चों को संचारी रोग के प्रति जागरूक करना। जिससे वे अपने माता पिता व परिजनों को जागरूक करेंगे। बैठक में सीएमओ, सीएमएस-एमसीएस/एमबीएस, अपर/उप मुख्य चिकित्साधिकारी, समस्त खण्ड विकास अधिकारी/अधिशासी अधिकारी, संबंधित चिकित्साधिकारी सहित अन्य संबंधित अधिकारी तथा एमओआईसी मौजूद रहे।

बैठक कर अपराध नियंत्रण एवं कानून व्यवस्था को सुदृढ़ बनाये रखने हेतु दिये विस्तृत निर्देश

● आगामी त्योहार श्रावण मास, मोहर्रम, गुरु पूर्णिमा आदि को सकुशल सम्पन्न कराये जाने के दृष्टिगत दिए गये आवश्यक दिशा-निर्देश

10 दिवस के अन्दर लम्बित प्रार्थना पत्रों का करें निस्तारण

कानून व्यवस्था के साथ खिलवाड़ करने की मंशा रखने वालों पर रखें सतर्क दृष्टि

गो-तस्करों के विरुद्ध गैंगेस्टर एक्ट के अन्तर्गत प्रभावी कार्यवाही कराते हुए उनके आपराधिक कृत्यों से अर्जित की गयी चल/ अचल सम्पत्ति को जब्त कराये जाने के दिये निर्देश

स्वतंत्र प्रभात

मीरजापुर। पुलिस महानिरीक्षक विंध्याचल परिक्षेत्र मिर्जापुर ''आर0पी0 सिंह'' द्वारा परिक्षेत्र के तीनों जनपदों की अपराध एवं कानून व्यवस्था की समीक्षा करते हुए निर्देशित किया गया कि लम्बित विवेचनाओं के शीघ्र निस्तारण एवं वांछित/पुरस्कार घोषित अभियुक्तों व वारंटियों की गिरफ्तारी करने, शिकायती प्रार्थना पत्रों का 10 दिवस के अंदर निस्तारण, भूमि संबंधी विवादों का सम्पूर्ण समाधान दिवस/समाधान दिवस पर राजस्व विभाग के सहयोग से निस्तारित कराने, रात्रि में चैराहे/तिराहे पर चेकिंग करके अपराधियों के संचरण पर रोक लगाने, पिछले 10 वर्षों में चोरी, लूट, व अन्य अपराधिक गतिविधियों में संलिप्त अपराधियों का भौतिक सत्यापन करने, अवैध शराब एवं अवैध शस्त्र रखने वालों व क्रय विक्रय करने वालों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई करने तथा जनपद के टॉप-10, अपराधियों के विरुद्ध गुंडा, गैंगस्टर, 14(1)के अंतर्गत जब्तीकरण कराते हुए ऐसे अपराधियों का जमानत निरस्तीकरण तथा महिला संबंधी अपराधों में त्वरित गति से कठोरतम कार्यवाही के भी निर्देश दिये तथा गो-तस्करों के विरुद्ध गैंगेस्टर एक्ट के अन्तर्गत प्रभावी कार्यवाही कराते हुए उनके आपराधिक कृत्यों से अर्जित की गयी चल/ अचल सम्पत्ति को जब्त कराये जाने का निर्देश दिये गये साथ ही गो-तस्करी में प्रयुक्त वाहनों को शासनादेश के तहत जब्त कराये जाने हेतु कड़े निर्देश दिये गये । गोवध अधि0, पशु क्रुरता अधि0,आबकरी अधि0,चिन्हित माफिया, महिला सम्बन्धी अपराध,सम्पत्ति सम्बन्धी अपराध में विवेचना समय से पूर्ण करके निरोधात्मक कार्यवाही की जाय। इसके अतिरिक्त निर्देशित किया गया कि पोक्सो एक्ट सम्बन्धी मुकदमों में 02 माह के अन्दर प्रत्येक दशा में विवेचनात्मक कार्यवाही पूर्ण कर अभियुक्तो को मा0 न्यायालय में सशक्त पैरवी करते हुए शीघ्र ही सजा दिलाया जाय। मादक पदार्थ के अभियुक्तों के विरुद्ध निरोधात्मक कार्यवाही कराते हुए अधिक से अधिक बरामदगी कराने के निर्देश दिये गये। इस दौरान निर्देशित किया गया कि अपराध व अपराधियों पर अंकुश लगाने के लिए महिलाओं एंव बच्चियों के साथ घटित होने वाले अपराधों पर प्रभावी रोक-थाम हेतु महिला बीट आरक्षियों द्वारा अपने-2 बीट क्षेत्र मे जाकर जनचैपाल लगाकर महिलाओं एवं बच्चियों को जागरुक करें।

आगामी त्योहार निर्देश- आगामी त्योहार मोहर्रम, गुरु पूर्णिमा, कावड़ यात्रा आदि को सकुशल संपन्न कराए जाने के दृष्टिगत सभी राजपत्रित अधिकारियों एवं थाना प्रभारियों द्वारा थाना क्षेत्र अंतर्गत सभी वर्ग के धर्मगुरूओं के साथ पीस कमेटी की बैठक कर समन्वय स्थापित करते हुए अराजक तत्वों को चिन्हित कर उनके विरुद्ध प्रभावी वैधानिक कार्यवाही

सुनिश्चित करने हेतु निर्देशित किया गया। आगामी पर्वो को संवेदनशीलता के दृष्टिगत छोटी से छोटी घटनाओं पर गम्भीरता पूर्वक कार्यवाही करने हेतु समस्त क्षेत्राधिकारीगण व थाना प्रभारियों को सख्त निर्देश दिए गए। सभी थाना क्षेत्र अंतर्गत पुलिसकर्मियों को मोटर साइकिल व कलस्टर मोबाइल के साथ ड्यूटी लगाकर लगातार भ्रमणशील रखा जाए। ड्यूटीरत पुलिसकर्मियों को अनिवार्य रूप से अपने साथ बॉडी प्रोटेक्टर, हेलमेट व डंडा इत्यादि दंगा नियंत्रण उपकरणों को रखने हेतु सख्त निर्देश दिए गए। यूपी 112 पर प्राप्त सूचनाओं का पीआरवी वाहनों द्वारा तत्काल मौके पर पहुंचकर समयबद्ध निस्तारण हेतु हिदायत दिया गया। सभी पुलिस वाहनों पर लाउड हेलर व पब्लिक एड्रेस सिस्टम को सक्रिय करते हुए त्योहारों को शांति व सौहार्दपूर्ण ढंग से मनाने हेतु आमजन से अपील की जाए।

सोशल मीडिया निर्देश- सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म जैसे ट्वीटर, वाट्सएप, फेसबुक, इंस्टाग्राम आदि पर सतर्क दृष्टि रखी जाये। भ्रामक एवं आपत्तिजनक पोस्ट पर तत्काल संज्ञान लेकर पुलिस द्वारा खण्डन करते हुए भ्रामक पोस्ट फैलाने वाले पर आवश्यक कार्यवाही की जाय। इसके अतिरिक्त स्थानीय अभिसूचना इकाई द्वारा भी गुप्त रुप से विभिन्न गतिविधियों पर सतर्क दृष्टि रखी जाय तथा कानून व्यवस्था के साथ खिलवाड़ करने की मंशा रखने वालों पर तत्काल विधिक कार्यवाही की जाय।

आकांक्षी विकासखंड प्रोग्राम के डेल्टा रैंकिंग में जनपद भदोही के विकासखंड औराई को मिला देश में 22वां एवं उत्तर प्रदेश में प्रथम स्थान

● आंकाक्षी विकास खण्ड औराई को ओवर ऑल डेल्टा रैकिंग में प्रथम स्थान प्राप्त होने पर जिलाधिकारी ने अधिकारियों व कर्मचारियों को दिया बधाई

स्वास्थ्य एवं पोषण, शिक्षा,कृषि व संबद्ध सेवाए, आधारभूत अवसंरचना, सामाजिक विकास सहित अन्य चिन्हित इंडिकेटर्स पर किया गया बेहतर कार्य

आकांक्षी विकासखंड प्रोग्राम में औराई विकासखंड को मिली बड़ी सफलता

स्वतंत्र प्रभात

भदोही 27 जून 2025/ आकांक्षात्मक विकासखंड प्रोग्राम के अंतर्गत देशभर में चयनित 500 विकास खंडों में से उत्तर प्रदेश के जनपद भदोही के औराई विकासखंड को ओवरऑल डेल्टा रैंकिंग में देश में 22 वां स्थान,जबकि उत्तर प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। माह मार्च 2025 को समाप्त तिमाही के लिए आकांक्षी विकासखंड कार्यक्रम डेल्टा रैंकिंग में उत्तर प्रदेश जोन 2 में जनपद भदोही के विकासखंड औराई को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। ध्यातव्य है कि नीति आयोग के द्वारा जनपद भदोही में औराई को आकांक्षी ब्लॉक के रूप में चयनित किया गया था, जिसके तहत औराई ब्लॉक में 5 विषयगत क्षेत्र- स्वास्थ्य एवं पोषण, शिक्षा,कृषि व संबद्ध सेवाए, आधारभूत अवसंरचना, सामाजिक विकास सहित विभिन्न सूचकांकों पर उन्नति के लिए कार्य चल रहा है जिसको लेकर जिलाधिकारी शैलेष कुमार व मुख्य विकास अधिकारी द्वारा औराई ब्लॉक में अपेक्षित प्रगति के लिए कार्यक्रमों की सतत समीक्षा की जाती रही है। जिलाधिकारी शैलेष कुमार ने बताया कि औराई ब्लॉक में शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि समेत विभिन्न सूचकांकों पर विशेष ध्यान देकर जनसामान्य को

लाभान्वित कराने के साथ ही अपेक्षित प्रगति दर्ज कराई गई, जिसका परिणाम रहा की नीति आयोग द्वारा जारी रैंकिंग में उत्तर प्रदेश में औराई ब्लॉक को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। औराई विकासखंड की इस उपलब्धि से जिले के अन्य विकासखंडों को भी प्रेरणा मिलेगी और वे भी अपने क्षेत्र में विकास के कार्यो को गति देने के लिए प्रेरित होंगे। प्रथम स्थान प्राप्त होने पर डीएम शैलेष कुमार व मुख्य विकास अधिकारी ने विकासखंड औराई के सभी अधिकारियों, कर्मचारियों व सीएम फेलो डॉ मधु शास्त्री के कार्यो की सराहना करते हुए बधाई दी है।

ग्राम पंचायत में पैसा प्रधान व सचिव द्वारा अवैध रूप से आहरित करने के संबंध में खंड विकास अधिकारी को दिया गया प्रार्थना पत्र

स्वतंत्र प्रभात

हलिया, मिर्जापुर। शुक्रवार हलिया विकास के बरगढ़ा गांव निवासी नरेंद्र प्रताप सिंह ने खंड विकास अधिकारी हलिया को प्रार्थना पत्र देकर ग्राम पंचायत का पैसा प्रधान व सचिव द्वारा अवैध रूप से आहरित करने के संबंध में देकर कार्रवाई का मांग किया है नरेंद्र प्रताप सिंह ने बताया कि ग्राम पंचायत बरगढ़ा मे नरेंद्र प्रताप के घर से राजा कोल के घर तक नाली निर्माण का कार्य जो की अधूरा बनवाया गया है उस पर 95000 खर्च किया गया है और प्रधानमंत्री आवास का सर्वे किया गया है हर लाभार्थी से प्रधान पति द्वारा व सचिव द्वारा हर लाभार्थी से 500 लेकर सर्वे किया गया प्रधान पति द्वारा अपना ही सरकारी हैंड पंप को दिखाकर कागज में रिवोर कराकर उस पर 359048 खर्च किया गया है विजय कुमार के घर के पास हैंड पंप रिवोर दिखाया गया है लेकिन रिवोर नहीं हुआ है उस पर 69384 रुपये खर्च किया गया है रोड से नरेंद्र प्रताप के घर तक नाली का काम दिखाया गया है और काम अधूरा है

उस पर 77935 रुपए खर्च किया गया है उप स्वास्थ्य केंद्र मे टाइल्स का काम किया गया है उस पर ?179246 रुपए मे किया गया है जो कि कम 50000 तक का हुआ है हैंड पंप मरम्मत का कार्य जो कि गांव में दो-चार हैंडपंप बनवाया गया है और उस पर 69 000 खर्च किया गया है सीएससी सेंटर में मिट्टी का भारी का कार्य दिखाकर उसे पर 41990 रुपए खर्च किया गया है जो की मिट्टी का काम नहीं हुआ है सामुदायिक शौचालय बंद रहता है उसे पर हर महीने 10000 से 15000 रुपए निकाला जाता है हैंड पंप फाउंडेशन और शोपीट निर्माण का कार्य कराया गया है जो की 5 से 7 हैंड पंप पर बनवाया गया है उस पर 300000 खर्च किया गया है पूर्व माध्यमिक विद्यालय कोटा शिव प्रताप सिह का हैड पंप का रिवोर प्रधानाध्यापक द्वारा कराया गया है और प्रधान व सचिव के द्वारा रिवोर का पैसा निकाल लिया गया है नागेंद्र सिंह का खूब जगत का कार्य पूरा हो गया है जिसका कार्य अधूरा है एवं सभी पैसा निकलता है लिया गया है जो की 69900 निकल गया है जिसकी जांच करना अति आवश्यक है।

भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा में उमड़ा जन सैलाब

स्वतंत्र प्रभात

मिर्जापुर। नगर के त्रिमोहानी चौराहा से जगन्नाथ स्वामी की रथयात्रा हर्षोल्लास के साथ निकाली गई। सुबह ही भगवान ठाकुर राम कुमार मन्दिर प्रांगण से निकलकर चौराहा पर विराजमान हुए थे। आकर्षक ढंग फूलों और रंग बिरंगे कपड़ों से सजे 3 रथ पर भगवान जगन्नाथ, बहन सुभद्रा एवं भाई बलदाऊ के साथ विराजमान थे। त्रिमोहानी चौराहा पर श्रद्धालुओं के करीब 10 घंटे दर्शन पूजन किया। सायंकाल भगवान के साथ नगर भ्रमण हेतु रथ को खींचने के लिए भक्तों में होड़ मची रही। यात्रा में ध्वनि विस्तारक यंत्रों के माध्यम से संकीर्तन करते हुए कीर्तन मण्डली चल रही थी। इस्कान मन्दिर के श्री श्याम कृष्ण दास जी द्वारा कृष्ण भक्ति में लीन नृत्य, संगीत किया गया। इलाहाबाद के नगाड़ा पार्टी ने भी धूम मचा रखी थी। सुभद्रा माता के रथ के साथ महिलाओं का हुजूम था। पीछे रथ खीचने वालो की होड़ लगी थी। सभी भगवान के रथ को नंगे पांव खींचकर जीवन धन्य करना चाहते थे। नगर के विभिन्न स्थानों पर स्वागत एवं विशेष पूजन आरती किया गया। खजांची चौराहा पर बजरंग सेवा समिति ने आरती उतारी। श्रीराम सेवा समिति की ओर से गुड़ह?ट्टी में भव्य आरती पूजन किया गया।

रथयात्रा में शामिल श्रद्धालुओं के लिए जगह जगह शर्बत शीतल जल की व्यवस्था किया गया था। शोभायात्रा नगर के बसनई बाजार, घण्टाघर, खजान्ची चौराहा, गिरधर चौराहा, पेहटी चौराहा, तुलसी चौराहा, गुड़ह?ट्टी चौराहा, पानदरीवा, दक्खिन फाटक, पुरानी अंजही, टेढ़ीनीम होते हुए नारघाट होते हुए मन्दिर में लौटी। मन्दिर प्रांगण में विशेष पूजन एवं आरती के साथ प्रसाद वितरण किया गया।

विशिष्ट जनों का स्वागत रथयात्रा प्रभारी बृजेश कुमार गुप्ता रथयात्रा में संयोजक राहुल चन्द्र जैन,ने किया कार्यक्रम में प्रमुख रूप से श्याम बिहारी खण्डेलवाल, विश्वनाथ अग्रवाल, ओम प्रकाश गुप्ता, राकेश चन्द्र श्रीवास्तव, श्याम कृष्ण गुप्ता, ललित मोहन खण्डेलवाल, अनूप खण्डेलवाल, नगर विधायक रत्नाकर मिश्रा, पालिकाध्यक्ष श्याम

सुन्दर केशरी, मड़िहान विधायक माननीय रामशंकर पटेल, विधायक सुष्मिता मौर्य, राष्ट्रवादी मंच के मनोज श्रीवास्तव संरक्षक रवि शंकर साहू,विनोद गुप्ता, डा0 ओम शंकर गुप्ता, मनोज दमकल, राज माहेश्वरी, सुशील मुसद्दी, सुमित अरोरा, अनील कुमार, राहुल, अशोक बिन्द,पंकज टण्डन, मयंक गुप्ता, राकेश गुप्ता, गौरव उमर, रूप नारायण अग्रहरी, अमित श्रीनेत, दीपा उमर, डॉ0 मंजूलता, सुमन यादव, जाहन्वी कसेरा, उमा बरनवाल, डाली अग्रहरी, मधु गुप्ता, सपना, सौम्या, शिप्रा गुप्ता, सीमा खत्री, सीता उमर आदि प्रमुख रुप से शामिल रहे।

बेटी की हत्या कर फांसी पर लटकाने का पिता ने लगाया आरोप, सीएम पोर्टल पर प्रार्थना पत्र देकर कार्रवाई की मांग

स्वतंत्र प्रभात

हलिया मिर्जापुर। ड्रमंडगंज थाना क्षेत्र के इंद्रवार गांव निवासी छोटे लाल कोल ने बेटी की हत्या कर फांसी पर लटकाने का आरोप लगाते हुए युवक के विरुद्ध शुक्रवार को सीएम पोर्टल पर प्रार्थना पत्र देकर कार्रवाई की मांग की है। सीएम पोर्टल पर दिए गए प्रार्थना पत्र में छोटे लाल ने आरोप लगाया कि 28 वर्षीया पुत्री किरन की शादी वर्ष 2015 में संतलाल कोल निवासी करनपुर पथरहवा थाना हलिया के साथ किया था। किरन का पति संतलाल कोल ओडिशा में रहकर मेहनत मजदूरी करता है।सास ससुर की पहले ही मौत हो चुकी है किरन घर पर अपने सात वर्षीय और पांच वर्षीय पुत्र के साथ घर पर अकेली रहती थी। बीते 24 जून को दोपहर में करनपुर पथरहवा गांव निवासी युवक ने फोनकर बताया कि तुम्हारी बेटी किरन ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर लिया है। बेटी की मौत की खबर पाकर पत्नी सती को लेकर बेटी के घर पहुंचा तो उसके दोनों पुत्र बेटी के शव से लिपटकर रो रहे थे। बेटी के गर्दन और माथे पर पर चोट के निशान थे। बेटी किरन के पुत्र सनी और रंजीत उर्फ गौरी ने बताया कि घटना से एक दिन पहले 23 जून की रात पड़ोसी युवक घर पर आया था और मां किरन को किसी बात को लेकर डंडे से मारने पीटने लगा मां के शोरगुल मचाने पर राजा बाबू जान से मारने की धमकी देते हुए भाग निकला। आरोप लगाया कि बेटी के पुत्र सनी ने बताया कि 24 जून को दोपहर में राजाबाबू फिर से घर पर आया टाफी और बिस्कुट खरीदने के लिए हम-दोनों भाइयों को दुकान पर भेज दिया। दुकान से टाफी और बिस्कुट खरीदकर घर पहुंचा तो राजा बाबू मां को गालियां दे रहा था।राजा बाबू ने कहा कि दोनों भाई जाकर नदी से मछली पकड़कर ले आओ। दोनों लोग नदी पर चले गए। दोपहर बाद नदी से घर पहुंचा तो राजा बाबू कोल घर से तेजी से बाहर निकलते हुए बोला कि तुम्हारी मां ने फांसी लगाकर जान दे दिया है। भीतर जाकर दोनों बच्चों ने देखा तो उसकी मां साड़ी के फंदे पर लटकी थी। गांव वालों ने बेटी को फंदे से नीचे उतारकर घटना की सूचना पुलिस को दी। सूचना पर पहुंचे हलिया थाने के एस आई श्याम लाल ने घटना की जांच पड़ताल करते हुए शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। बेटी की मौत की सूचना देने वाला युवक मौके पर नही मिला। मुझे पूर्ण विश्वास है कि किसी बात को लेकर उसी युवक ने पुत्र ने ही बेटी की हत्या कर फांसी के फंदे पर लटका दिया जिससे लोगों को लगे कि बेटी किरन ने आत्महत्या कर लिया है। बेटी के दोनों पुत्रों सनी और रंजीत ने भी रोते-बिलखते हुए बताया था कि पड़ोसी युवक ने मां को मारकर फांसी पर लटका दिया है। शुक्रवार को को इस संबंध में ड्रमंडगंज थाने पर तहरीर देने गया तो पुलिस ने तहरीर लेने से मना कर दिया कहा कि घटना क्षेत्र हलिया का है इसलिए हलिया थाने में जाकर रिपोर्ट लिखवाओ। छोटे लाल ने बेटी की हत्या करने के बाद फांसी पर लटकाने का आरोप लगाते हुए युवक के के विरुद्ध कार्रवाई की गुहार लगाई है।

संक्षिप्त खबरें

प्रयागराज मंडल में नैनी गंगोत्री नगर स्थित कार्यालय पर आयोजित हुआ भव्य सदस्यता अभियान

प्रयागराज। प्रयागराज मंडल के नैनी गंगोत्री नगर स्थित कार्यालय पर भारी मात्रा में पत्रकारों ने राष्ट्रीय पत्रकार महासभा सदस्यता अभियान के तहत सदस्यता ली जिसमें तमाम छेत्र के जुझारू व क्रांतिकारी पत्रकारों ने बढ़-चढ़कर सदस्यता ली व संगठन को मजबूत बनाने का आश्वासन दिया। मुख्य अतिथि के रूप में मोहम्मद हरीश प्रदेश मंत्री जी ,सोमराज वर्मा मंडल अध्यक्ष जी, मंडल महासचिव अभिनव कुमार मिश्रा जी, एवं संगठन मंत्री मोहम्मद कमाल अहमद जी, प्रवक्ता सुरेश सिंह का सभी ने भव्य स्वागत किया। शबीना जी को महिला सभा नगर अध्यक्ष बनाया गया ,एवं विलास गुप्ता जी को नगर पंचायत सदस्य बनाया गया। तमाम पत्रकारों को संगठन में सदस्य बनाने का काम किया गया है एवं सभी पत्रकारों को समस्त मंडल टीम की तरफ से संपूर्ण आश्वासन दिया गया यदि किसी भी पत्रकार के ऊपर कोई भी आपत्ति आती है तो प्रयागराज मंडल टीम सदैव तत्पर मदद के लिए तैयार है* तत्पश्चात सभी को सम्मान पत्र देकर मेडल पहना कर सम्मानित किया गया।

अराजक तत्वों ने डॉ. अंबेडकर की मूर्ति खंडित, ग्रामीणों में आक्रोश

लालगंज (रायबरेली)। कोतवाली क्षेत्र के बेलौली मजरे पलिया वीर सिंहपुर गांव में बुधवार रात अराजक तत्वों ने एक शर्मनाक हरकत को अंजाम दिया। गांव के सार्वजनिक स्थल पर स्थापित भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर की मूर्ति को अज्ञात लोगों ने खंडित कर दिया। घटना के बाद गांव में गुस्से की लहर दौड़ गई है। सूचना मिलते ही एसडीएम व सीओ सहित पुलिस मौके पर पहुंची और जांच-पड़ताल शुरू कर दी। उधर बहुजन समाज पार्टी के नेता बालकुमार गौतम व भीम आर्मी के पदाधिकारियों के नेतृत्व में ग्रामीणों ने प्रभारी निरीक्षक प्रमोद कुमार सिंह को ज्ञापन सौंपा और मामले में एफआईआर दर्ज करने की मांग की। ग्रामीणों ने बताया कि ग्राम सभा की गाटा संख्या 1136 पर स्थित भूमि भू-अभिलेख में डॉ. अंबेडकर के नाम दर्ज है। करीब एक साल पहले ग्रामीणों ने आपसी सहयोग से वहां उनकी मूर्ति स्थापित की थी, जिसे अब खंडित कर दिया गया है। घटना ने गांव का माहौल गर्मा दिया है। ग्रामीणों ने साफ कहा है कि आरोपियों को जल्द गिरफ्तार नहीं किया गया तो आंदोलन का रुख अख्तियार किया जाएगा। फिलहाल पुलिस ने अज्ञात अराजक तत्वों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच तेज कर दी है। प्रभारी निरीक्षक प्रमोद कुमार सिंह ने बताया कि प्रशासन खंडित मूर्ति बदलवा रहा है।

पूर्ति निरीक्षक के विदाई समारोह में उमड़ा कोटेदारों का जन सैलाब

महराजगंज/ रायबरेली। विगत 3 वर्षों से महराजगंज तहसील में तैनात पूर्ति निरीक्षक अविनाश चंद्र पांडे का गैर जनपद हुआ स्थानांतरण के बाद आज दिन शुक्रवार को तहसील सभागार में भव्य विदाई समारोह का आयोजन कोटेदार संघ द्वारा किया गया जिसमें उपस्थित पूर्व में तैनात पूर्ति निरीक्षक अविनाश चंद्र पांडे को प्रतीक चिन्ह व अंग वस्त्र तथा फूल माला पहनाकर विदाई समारोह का कार्यक्रम संपन्न हुआ। बताते चले कि महराजगंज तहसील में तैनात रहे पूर्व निरीक्षक अविनाश चंद्र पांडे की कार्यशैली व कार्य क्षमता ने अपने 3 वर्ष के कार्यकाल में कोटेदारों व राशन कार्ड धारकों व पीड़ित उपभोक्ताओं पर जो अमिट छाप छोड़ी है वह काबिले तारीफ थी और उनकी कार्य कुशलता कार्य क्षमता व कार्य दक्षता के चलते ही महराजगंज क्षेत्र चाहे के वाई सी हो या फिर नए राशन कार्ड बने हो या यूनिट चढ़ाने का कार्य हो सभी कार्य को बखूबी कुशलता के साथ निर्वहन करते हुए निपटाने का कार्य किया जिसके चलते क्षेत्र की जनता व कोटेदार भी अपने मातहत अधिकारी के कार्यों से संतुष्ट रहे। इस मौके पर नवागत पूर्ति निरीक्षक मुकेश पांडे, अवधेश चतुर्वेदी, नमामि शंकर शुक्ला, कन्हैया त्रिपाठी, आशुतोष पांडे, छोटू, कोटेदार संघ अध्यक्ष सुरेश कुमार शुक्ला, राजेंद्र प्रसाद त्रिपाठी, गुलाब सिंह, राजीव सिंह, भयऊ महाराज, सतीश चंद्र सुभाष चंद्र, जमील कोटेदार, शिवराम कोटेदार सहित समस्त कोटेदार मौजूद रहे।

कांग्रेस ने आरएसएस के संविधान प्रस्तावना के शब्दों की समीक्षा के आह्वान पर साधा निशाना

● कहा- संविधान विरोधी है इनकी सोच।

स्वतंत्र प्रभात

प्रयागराज। होसबाले ने संविधान की प्रस्तावना में ''समाजवादी'' और ''धर्मनिरपेक्ष'' शब्दों की समीक्षा करने का आह्वान किया है। कांग्रेस ने कहा कि वह बीजेपी-आरएसएस की 'साजिश' को कभी सफल नहीं होने देगी और ऐसे किसी भी कदम का विरोध करेगी।संविधान की प्रस्तावना में ''समाजवादी'' और ''धर्मनिरपेक्ष'' शब्दों की समीक्षा करने संबंधी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) महासचिव दत्तात्रेय होसबाले के बयान के बाद कांग्रेस ने आरएसएस और बीजेपी पर ''संविधान विरोधी'' होने का आरोप लगाया।

होसबाले ने संविधान की प्रस्तावना में ''समाजवादी'' और ''धर्मनिरपेक्ष'' शब्दों की समीक्षा करने का आह्वान किया है। कांग्रेस ने कहा कि वह बीजेपी-आरएसएस की 'साजिश' को कभी सफल नहीं होने देगी और ऐसे किसी भी कदम का विरोध करेगी। कांग्रेस ने 'एक्स' पर पोस्ट में कहा, ''आरएसएस-बीजेपी की सोच संविधान विरोधी है। अब आरएसएस के महासचिव दत्तात्रेय होसबाले ने संविधान की प्रस्तावना में बदलाव की मांग की है।''विपक्षी दल ने कहा कि होसबाले चाहते हैं कि संविधान की प्रस्तावना से ÷समाजवादी÷ और ÷धर्मनिरपेक्ष÷ शब्द हटा दिए जाएं। कांग्रेस ने कहा, ÷यह बाबा साहब के संविधान को नष्ट करने की साजिश है, जिसे आरएसएस-बीजेपी लंबे समय से रच रही है।÷कांग्रेस ने कहा कि जब संविधान लागू हुआ था तब आरएसएस ने इसका विरोध किया था, इसकी प्रतियां जलाई थी।

कांग्रेस ने कहा, ''लोकसभा चुनाव में तो बीजेपी के नेता खुलकर कह रहे थे कि हमें संविधान बदलने के लिए संसद में 400 से ज्यादा सीट चाहिए। अब एक बार फिर वे अपनी साजिशों में लग गए हैं, लेकिन कांग्रेस किसी कीमत पर इनके मंसूबों को कामयाब नहीं होने देगी।'' आरएसएस महासचिव दत्तात्रेय होसबाले ने संविधान की प्रस्तावना से 'समाजवादी' और 'धर्मनिरपेक्ष' शब्द हटाने की सनसनीखेज मांग उठाकर देश में नई बहस छेड़ दी है। उन्होंने आपातकाल के दौरान जोड़े गए इन शब्दों को ग़ैर-ज़रूरी बताया और भारत की सांस्कृतिक पहचान पर जोर देते हुए कहा कि ये भारत की सभ्यतागत भावना के अनुरूप नहीं हैं। इस बयान ने देश में एक नई राजनीतिक बहस को छेड़ दिया है।

नई दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में होसबाले ने 1975 के आपातकाल का ज़िक्र किया, जब 42वें संशोधन के माध्यम से संविधान की प्रस्तावना में 'समाजवादी' और 'धर्मनिरपेक्ष' शब्द जोड़े गए थे। उन्होंने सवाल उठाया, 'क्या समाजवाद कभी भारत की सभ्यतागत भावना के अनुरूप था? क्या धर्मनिरपेक्षता की परिभाषा हमारे देश की संस्कृति और परंपराओं के साथ मेल खाती है?' उन्होंने तर्क दिया कि ये शब्द उस समय की राजनीतिक हालात का परिणाम थे और इन्हें संविधान में शामिल करना ग़ैर-ज़रूरी था। आरएसएस ने संविधान की प्रस्तावना में 'समाजवादी' और 'धर्मनिरपेक्ष' शब्दों की समीक्षा करने का आह्वान करते हुए बृहस्पतिवार को कहा कि इन्हें आपातकाल के दौरान शामिल किया गया था और ये कभी भी बी आर आंबेडकर द्वारा तैयार संविधान का हिस्सा नहीं थे। आपातकाल पर आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए होसबाले ने कहा, ''बाबा साहेब आंबेडकर ने जो संविधान बनाया, उसकी प्रस्तावना में ये शब्द कभी नहीं थे। आपातकाल के दौरान जब मौलिक अधिकार निलंबित कर दिए गए, संसद काम नहीं कर रही थी, न्यायपालिका पंगु हो गई थी, तब ये शब्द जोड़े गए।" उन्होंने कहा कि इस मुद्दे पर बाद में चर्चा हुई लेकिन प्रस्तावना से उन्हें हटाने का कोई प्रयास नहीं किया गया। होसबाले ने कहा, ''इसलिए उन्हें प्रस्तावना में रहना चाहिए या नहीं, इस पर विचार किया जाना चाहिए।''

उपमुख्यमंत्र लोकतंत्र सेनानियों का सम्मान एवं आपातकाल पर आयोजित संगोष्ठी में हुए सम्मिलित

● लोकतंत्र सेनानियों को किया सम्मानित।

स्वतंत्र प्रभात

प्रयागराज। उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य की अध्यक्षता में बुधवार को जिला पंचायत सभागार में राष्ट्रीय आपातकाल लागू होने की 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर ''आपातकाल दिवस'' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ आपातकाल पर आधारित संगोष्ठी से हुआ, जिसमें आपातकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उसके सामाजिक-राजनीतिक प्रभाव और लोकतंत्र पर उसके नकारात्मक प्रभाव पर विस्तार से चर्चा की गई। इस अवसर पर आपातकाल पर आधारित एक लघु फिल्म का प्रदर्शन किया गया, जिसके माध्यम से उस कालखंड की चुनौतियों और उससे मिले सबक को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया। साथ ही, कार्यक्रम स्थल पर आपातकाल पर आधारित एक संक्षिप्त प्रदर्शनी (एग्जीबिशन) भी लगाई गई, जिसमें उस समय की प्रमुख घटनाओं, संघर्षों, विरोध, समाचारों और दस्तावेजों को चित्रात्मक रूप में प्रदर्शित किया गया। सभी उपस्थित जनों ने इस प्रदर्शनी का अवलोकन किया और प्रदर्शनी से लोकतंत्र में आपातकाल की त्रासदी से सबक लेने हेतु जागरूकता व प्रेरणादायक पहल बताया।

इस अवसरपर उपमुख्यमंत्र कहा कि लोकतंत्र की रक्षा हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है, जिसे हम ईमानदारी और संवेदनशीलता से निभाएं। उन्होंने कहा कि आज का दिन भारत के इतिहास में लोकतंत्र व संविधान के दृष्टि से काला दिन बनकर अंकित है। उन्होंने कहा कि 1975 के आपातकाल में भारतीय लोकतंत्र पर आपातकाल थोप कर संविधान, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और नागरिक अधिकारों का दमन किया गया था और पत्रकारिता को प्रतिबंधित करने, न्यायपालिका के अधिकार सीमित करने एवं विपक्ष के नेताओं को जेल में कैद करने का काम किया गया था। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के आयोजनों के माध्यम से ही लोग अपनी इच्छानुसार स्वार्थवश लगाये गये आपातकाल के दुष्प्रभावों के बारे में जागरूक होंगे और आज की पीढ़ी को इतिहास को जानने का मौका मिलेगा।

उपमुख्यमंत्री ने कहा कि यदि लोकतंत्र सेनानियों ने अपने संघर्ष से संविधान की रक्षा का कार्य नहीं किया होता, तो हमारे पास मताधिकार का भी अधिकार नहीं होता। वर्तमान सरकार संविधान के मूल्यों की रक्षा व मजबूत करने के प्रति दृढ़संकल्पित एवं देश को विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में अग्रसर है। प्रधानमंत्री जी एवं मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में हमारी सरकार द्वारा लोकतांत्रिक मूल्यों की हमेशा रक्षा की गयी है और अब कभी भी भारत के लोकतांत्रिक मूल्यों को कुचलने नहीं दिया जायेगा और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का गला घोटने नहीं दिया जायेगा। इस अवसर पर कार्यक्रम में उपमुख्यमंत्री ने लोकतंत्र सेनानियों को अंगवस्त्र एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर सांसद फूलपुर प्रवीण पटेल, महापौर उमेश चन्द्र गणेश केसरवानी, जिला पंचायत अध्यक्ष डॉ0 वी0के0 सिंह, विधायक फूलपुर श दीपक पटेल, विधायक फाफामऊ गुरू प्रसाद मौर्य, भाजपा महानगर अध्यक्ष संजय गुप्ता, गंगापार अध्यक्ष श्रीमती निर्मला पासवान, यमुनापार अध्यक्ष राजेश शुक्ला सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण, लोकतंत्र सेनानियों के अतिरिक्त बड़ी संख्या में लोक उपस्थित रहे।

दिल्ली पुलिस ने 'नशा मुक्त भारत पखवाड़ा' का सफलतापूर्वक समापन किया

स्वतंत्र प्रभात

नई दिल्ली: अंतर्राष्ट्रीय बाजार में 3274.5 करोड़ से अधिक मूल्य की अवैध नशीली दवाइयों का विनष्टिकरण दिल्ली पुलिस ने किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, उपराज्यपाल दिल्ली एवं माननीय मुख्यमंत्री दिल्ली के दूरदर्शी नेतृत्व में, दिल्ली पुलिस नशीले पदार्थों के खिलाफ युद्ध छेड़े हुए है और नशा संबंधी अपराधों के प्रति "शून्य सहिष्णुता नीति Zero-Tolerance Policy लागू करने हेतु प्रतिबद्ध है। दिल्ली पुलिस का लक्ष्य नशीली दवाओं की तस्करी को जड़ से समाप्त करना और समाज को सुरक्षित और स्वस्थ बनाना है। यह तमाम बातें देवेश चंद्र श्रीवास्तव विशेष पुलिस आयुक्त, अपराध, दिल्ली पुलिस ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान कही। उन्होंने बताया कि "अंतर्राष्ट्रीय नशा विरोधी दिवस" के अवसर पर, दिल्ली पुलिस ने "नशा मुक्त भारत पखवाड़ा 12 जून से 26 जून, 2025 के सफल समापन की घोषणा की। यह अभियान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रारंभ किए गए 'नशा मुक्त भारत अभियान' और माननीय गृह मंत्री अमित शाह के निर्देशों के अनुरूप चलाया गया। मुख्य कार्यक्रम में, दिल्ली पुलिस द्वारा क्राइम ब्रांच एवं स्पेशल सेल यूनिट्स द्वारा जब्त की गई लगभग 1537.1 किलोग्राम अवैध मादक पदार्थ नष्ट किए गए, जिनमें शामिल हैं। 961.9 किग्रा गांजा, 542.9 किग्रा कोकीन, 6 किग्रा हेरोइन, 3 किग्रा चरस, 5.4 किग्रा अफीम, 18 किग्रा अल्प्राजोलम पाउडर। इसके अतिरिक्त, रोहिणी व नई दिल्ली जिलों द्वारा जब्त की गई लगभग 92 किग्रा नशीली दवाइयां भी नष्ट की गई, जिनमें 87.5 किग्रा गांजा, 2 किग्रा हेरोइन, 2.6 किग्रा चरस और कुछ टैबलेट्स, इंजेक्शन आदि शामिल हैं। उन्होंने आगे बताया कि इस प्रकार, कुल 1629.4 किग्रा नशीले पदार्थों का विनष्टिकरण किया गया, जिसकी अंतरराष्ट्रीय बाजार में अनुमानित कीमत ? 3274.5 करोड़ है। इसके साथ ही देवेश चंद्र श्रीवास्तव ने बताया कि 15 जून 2025 तक, दिल्ली में एनडीपीएस अधिनियम के तहत 1127 मामले दर्ज किए गए और 1439 नशा तस्करों को गिरफ्तार किया गया। वित्तीय जांच के अंतर्गत लगभग ?7.76 करोड़ की संपत्ति जब्त की गई और ?19.03 करोड़ की संपत्ति जब्ती की अंतिम प्रक्रिया में है। इसके अलावा, 28 नशा तस्करों के विरुद्ध PITNDPS अधिनियम, 1989 के अंतर्गत कार्रवाई शुरू की गई है और 32 अन्य के विरुद्ध कार्यवाही प्रगति में है नशा मुक्त भारत पखवाड़ा 12-26 जून, 2025 की प्रमुख उपलब्धियाँ ऑपरेशन "कवच-8.0 18 और 19 जून को दिल्ली पुलिस ने 15 जिलों में 1040 स्थानों पर छापेमारी की। सैकड़ों नशा तस्करों, अवैध शराब विक्रेताओं, हथियार तस्करों और जुआरियों को गिरफ्तार किया गया। साथ ही, 5105 लोगों को एहतियातन हिरासत में लिया गया।

4 जून को कनॉट प्लेस के सेंट्रल पार्क में भव्य उद्घाटन समारोह के साथ पखवाड़े की शुरुआत हुई। एएनटीएफ क्राइम ब्रांच ने युवाओं में जागरूकता के लिए प्रेरणादायक संदेश प्रसारित किए इसको लेकर कई कार्यक्रम आयोजित किए गए 14 जून कार्यशाला 164 स्कूलों के 330 शिक्षकों और प्राचार्यों के लिए बच्चों में नशे के लक्षण व पुनर्वास विषय पर कार्यशाला 21 जून (अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस)~ लाल किले पर ब्रह्माकुमारी संगठन के सहयोग से नशा विरोधी कला प्रदर्शनी 22 जून~ इंडिया गेट पर ड्रग-फ्री दिल्ली÷ अभियान। मुख्य अतिथि- माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता। विशेष आकर्षण~ गायक मीका सिंह की संगीत प्रस्तुति दिल्ली पुलिस का नशा विरोधी अभियान" पुस्तिका का विमोचन, चित्रकला प्रदर्शनी और श्री राहुल खन्ना के थिएटर समूह की नुक्कड़ नाटक प्रस्तुति।

- 23 जून- दिल्ली पुलिस, एनसीबी, एवं ड्रग कंट्रोलर विभाग के 382 जांच अधिकारियों के लिए विशेष प्रशिक्षण सत्र।
- विश्वविद्यालय परिसरों में छापे~ एएनटीएफ (क्राइम ब्रांच) ने एनसीबी कैनाइन स्क्वाड और जिला नारकोटिक्स स्क्वाड के साथ मिलकर दिल्ली विश्वविद्यालय के उत्तर और दक्षिण परिसर में तलाशी अभियान चलाया।

मादक पदार्थ विनष्टिकरण कार्यक्रम का आयोजन

- स्थान- बायोटिक वेस्ट सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड, 46-47, एसएसआई इंडस्ट्रियल एरिया, जीटी कर्नाल रोड, नई दिल्ली-33 (जहांगीर पुरी मेट्रो स्टेशन के पास) 26 जून 2024 को उपराज्यपाल दिल्ली मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। साथ ही विशेष पुलिस आयुक्त (स्पेशल सेल) श्री विवेक गोगिया, संयुक्त आयुक्त (क्राइम) श्री सुरेन्द्र कुमार, अतिरिक्त आयुक्त (क्राइम) श्री मंगेश कश्यप, अतिरिक्त आयुक्त (क्राइम) श्री संजय कुमार सैन एवं मुझ सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे, जो इस अभियान के प्रति प्रशासन की सामूहिक प्रतिबद्धता को दर्शाता है। ÷नशा मुक्त भारत अभियान÷ के अंतर्गत दिल्ली पुलिस ने पहले के छह अभियानों में लगभग 43019 किग्रा अवैध मादक पदार्थों को नष्ट किया है, जिसकी कुल अनुमानित कीमत 10520 करोड़ थी।

थाना हण्डिया पुलिस टीम द्वारा 02 वारण्टी अभियुक्त गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात

प्रयागराज। आयुक्त व अपर पुलिस आयुक्त के निर्देशन में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में हण्डिया पुलिस टीम द्वारा आज दिनांक-27.06.2025 को मा0 न्यायालय ए0सी0जे0एम0 कक्ष संख्या-08 इलाहाबाद द्वारा निर्गत गिरफ्तारी अधिपत्र सम्बंधित मु0नं0-1153/24 धारा-323/504/506/452/427/354 भा0द0सं0 से सम्बंधित 02 वारण्टी अभियुक्त 1. राकेश पुत्र शुकरु 2. राजू पुत्र बंशी निवासीगण ग्राम टेला थाना हण्डिया कमिश्नरेट प्रयागराज को थाना हण्डिया क्षेत्रान्तर्गत उसके निवास ग्राम टेला के पास से गिरफ्तार कर नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही की गयी। थाना हण्डिया पुलिस टीम द्वारा 01 वांछित अभियुक्त गिरफ्तार 01 बाल अपचारी प अभिरक्षा मे लिया गया।

थाना हण्डिया पर पंजीकृत मु0अ0सं0-365/25 धारा-303(2) भा0न्या0सं0 से सम्बंधित वांछित अभियुक्त सूरज कुमार गौतम पुत्र राधेश्याम गौतम निवासी ग्राम किरांव बुनवापुर थाना हण्डिया कमिश्नरेट प्रयागराज को थाना हण्डिया पुलिस टीम द्वारा आज दिनांक-27.06.2025 को थाना हण्डिया क्षेत्रान्तर्गत ग्राम हीरामनपट्टी स्थित पुलिया के पास से मुकदमा उपरोक्त मे चोरी हुए 01 मोबाइल फोन व लाकेट चोरी के बिक्री से प्राप्त कुल 500/- रुपये के साथ गिरफ्तार किया गया तथा 01 बाल अपचारी को थाना हण्डिया क्षेत्रान्तर्गत ग्राम हीरामनपट्टी स्थित पुलिया के पास से मुकदमा उपरोक्त मे चोरी हुए लॉकेट की बिक्री से प्राप्त 450 रूपये के साथ पुलिस अभिरक्षा मे लिया गया। उक्त बरामदगी के आधार पर मुकदमा उपरोक्त मे धारा-317(2) भा0न्या0सं0 की बढ़ोत्तरी कर नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही की गयी। उल्लेखनीय है थाना हण्डिया क्षेत्रान्तर्गत ग्राम हीरामनपट्टी में 01 मोबाइल फोन व 01 सोने की लॉकेट चोरी होने के सम्बंध में थाना हण्डिया पर प्राप्त तहरीर के आधार पर मु0अ0सं0-365/2025 उपरोक्त पंजीकृत किया गया था।

प्रधान के नेतृत्व में ग्राम पंचायत की बुनियादी सुविधाएं पहुँची जन-जन तक

स्वतंत्र प्रभात

गोंडा। जनपद की विकास खंड रूपईडीह के ग्राम पंचायत कौड़ियां के अन्तर्गत आने वाले कोणरी मजरा में विकास की नई इबारत लिखी जा रही है। पंचायत की कार्यशैली और नेतृत्व के चलते आज यह मजरा उन गांवों की श्रेणी में आ खड़ा हुआ है जहां विकास केवल कागज़ों पर नहीं, बल्कि ज़मीन पर नजर आता है।ग्राम प्रधान शिवशंकर मिश्रा उर्फ रिंकू मिश्रा के निर्देशन में पेयजल, विद्युत, स्वच्छता, मार्ग निर्माण, पेंशन वितरण एवं शिक्षा से जुड़ी योजनाएं तेज़ी से क्रियान्वित की गई हैं, जिनका सीधा लाभ ग्रामवासियों को मिला है।

जनहित के प्रमुख कार्य जो गाँव की तस्वीर बदल रहे हैं

पेयजल व्यवस्था- मजरे में पाइपलाइन बिछाकर शुद्ध जल की व्यवस्था की गई, जिससे अब गांव के हर घर तक पानी पहुंच रहा है।

विद्युतकरण- अंधेरे में डूबे मोहल्लों में अब बिजली की रोशनी फैल रही है।

खड़ंजा और इंटरलॉकिंग रास्ते~ उबड़-खाबड़ गलियों को पक्का कर आम जनजीवन को सुविधा दी गई।सुलभ एवं व्यक्तिगत शौचालय- 'स्वच्छ भारत मिशन' के अंतर्गत गांव को खुले में शौच से मुक्त करने की दिशा में ठोस कदम उठाए गए।

अंत्येष्टि स्थल निर्माण- सम्मानजनक अंतिम संस्कार के लिए समुचित स्थल का निर्माण कराया गया।

पेंशन योजनाएं- पात्र वृद्ध, विधवा और विकलांग लाभार्थियों को पेंशन योजनाओं से जोड़ा गया,शिक्षा क्षेत्र में नवाचार~ कन्या जूनियर हाईस्कूल और प्राइमरी स्कूल का सौंदर्यीकरण कर वातावरण को अध्ययन योग्य बनाया गया।

सामाजिक सहभागिता बनी विकास की नींव- इन कार्यों को सफल बनाने में ग्राम के जागरूक नागरिक उमाशंकर शुक्ला, मनोज मिश्रा, राजेश तिवारी, ननके धोबी और राजरानी का विशेष सहयोग रहा। इन्होंने ना सिर्फ जनहित के मुद्दों को उठाया, बल्कि कार्यों की निगरानी में भी सक्रिय भूमिका निभाई।

प्रधान का बयान- प्रधान शिवशंकर मिश्रा उर्फ रिंकू मिश्रा ने कहा, "गांव को हर स्तर पर विकसित करना मेरा संकल्प है। हमारा प्रयास है कि हर घर तक योजनाओं का लाभ पहुंचे। आगे की योजना में स्वास्थ्य सुविधा, रोजगार और डिजिटलीकरण को प्राथमिकता दी जाएगी।"

गांव का बदलता चेहरा, जनता का बढ़ता भरोसा

कोणरी मजरा के निवासी साफ-सुथरे रास्तों पर चलते हैं, रोशनी से जगमग घरों में रहते हैं और सरकारी योजनाओं से सीधे जुड़ चुके हैं। यह सब संभव हो पाया है पंचायत की पारदर्शी कार्यप्रणाली और जन-जन की भागीदारी से।

आरेडिका में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक बैठक व ''प्रगति'' पत्रिका का विमोचन

स्वतंत्र प्रभात

लालगंज रायबरेली- आरेडिका में महाप्रबंधक प्रशान्त कुमार मिश्रा की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें आरेडिका की राजभाषा गतिविधियों एवं प्रगति की समीक्षा की गई। इसके साथ ही राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं लेखन कौशल को बढ़ावा देने के उद्देश्य से त्रैमासिक प्रकाशित होने वाली गृह पत्रिका ''प्रगति'' के अंक का विमोचन महाप्रबंधक महोदय के कर -कमलों द्वारा किया गया।

इस पत्रिका में मौलिक रचनाओं यथा कविता, कहानियाँ, संस्मरण, प्रेरक लेख इत्यादि को शामिल किया गया है। महाप्रबंधक महोदय ने ''प्रगति'' पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित रचनाओं के रचनाकारों की सराहना की । इसी के साथ महाप्रबंधक महोदय ने स्वयं के लिखे एक लेख ब्रिटिश कालीन भारत में बने पहले कोच के निर्माण की शुरूआत के संबंध में विस्तृत रुप से बताया।

इस बैठक में ही महाप्रबंधक महोदय ने सांस्कृतिक संगठन की टीम को क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, भुसावल में आयोजित अखिल भारतीय रेल नाट्योत्सव में सर्वश्रेष्ठ स्क्रिप्ट लेखन का पुरस्कार प्राप्त करने के उपलक्ष्य में प्रशस्ति पत्र प्रदान किये एवं प्रदर्शन के लिए बधाई दी और अच्छा करने के लिए प्रेरित किया।

बैठक में आरेडिका के प्रधान मुख्य यांत्रिक अभियंता विवेक खरे, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी अतुल प्रियदर्शी, प्रधान मुख्य सामग्री प्रबंधक राकेश राजपुरोहित, प्रधान मुख्य विद्युत अभियंता मनोज कुमार जिंदल, मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं महानिरीक्षक सह प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त रमेश चन्द्र, प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी रूपेश श्रीवास्तव, प्रधान मुख्य अभियंता सत्य प्रकाश यादव, प्रधान मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा0 आभा जैन, वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखाधिकारी अरविन्द कुमार, मुख्य सतर्कता अधिकारी एवं वरिष्ठ उपमहाप्रबंधक अकमल वदूद, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी अष्टानन्द पाठक,सचिव महाप्रबंधक आरएन तिवारी, जनसंपर्क अधिकारी अनिल कुमार श्रीवास्तव व राजभाषा अधिकारी राकेश रंजन उपस्थित रहे।

चंद्रप्रकाश खरे बने प्रांतीय उपाध्यक्ष, राजीव श्रीवास्तव को चित्रकूट जिलाध्यक्ष की जिम्मेदारी

● बच्चों के लिए निश्शुल्क कोचिंग की योजना

स्वतंत्र प्रभात

चित्रकूट। अखिल भारतीय कायस्थ महासभा उत्तर प्रदेश के प्रांतीय अध्यक्ष आनंद कुमार जौहरी और संयुक्त महामंत्री विपिन जौहरी द्वारा शुक्रवार को चित्रकूट में संगठन के विस्तार और सशक्तिकरण के उद्देश्य से एक अहम बैठक का आयोजन किया गया। सिंचाई विभाग के डाकबंगले में हुई इस बैठक में कायस्थ समाज के दर्जनों प्रमुख लोगों ने भाग लिया। बैठक के दौरान सर्वसम्मति से भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष चंद्रप्रकाश खरे को अखिल भारतीय कायस्थ महासभा का प्रदेश उपाध्यक्ष और हीरो मोटोकॉर्प के स्थानीय व्यवसायी राजीव श्रीवास्तव को चित्रकूट जिला अध्यक्ष मनोनीत किया गया। प्रदेश अध्यक्ष आनंद जौहरी ने नए जिलाध्यक्ष को एक सप्ताह के भीतर जिला कार्यकारिणी गठित करने के निर्देश दिए। इस अवसर पर चित्रगुप्त मंदिर के महंत रामदास महाराज ने उपस्थित समाजजनों को कायस्थ कुलगुरु भगवान चित्रगुप्त की उत्पत्ति और समाज की ऐतिहासिक भूमिका पर विस्तृत जानकारी दी।

महंत ने कहा कि कायस्थ समाज प्राचीन काल से ही न्याय, लेखा और प्रशासन जैसे क्षेत्रों में अग्रणी रहा है और आज भी उसे उसी गरिमा के साथ समाज में आगे आना चाहिए। नवनियुक्त प्रदेश उपाध्यक्ष चंद्रप्रकाश खरे ने कहा कि वह सदैव 'कायस्थ हित प्रथम' के सिद्धांत को लेकर कार्य करते रहे हैं और भविष्य में भी इसी भावना से समाज के लिए कार्य करते रहेंगे। उन्होंने घोषणा की कि हर महीने के अंतिम रविवार को कायस्थ समाज की बैठक आयोजित की जाएगी, जिसमें समाज से जुड़ी समस्याओं और योजनाओं पर चर्चा होगी।

बैठक में यह निर्णय भी लिया गया कि कायस्थ समाज के प्रतिभाशाली लेकिन आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों के लिए निश्शुल्क कोचिंग की व्यवस्था की जाएगी। समाज के शिक्षाविदों और प्रतिष्ठित व्यक्तियों से इसमें सहयोग लेने की योजना है। जिलाध्यक्ष बनाए गए राजीव श्रीवास्तव ने कहा, "मैं केवल नाम का अध्यक्ष हूं, असल में हम सब मिलकर समाज के अध्यक्ष हैं। कोई एक व्यक्ति नहीं, बल्कि समाज का हर सदस्य संगठन का चेहरा होगा।" उन्होंने समाज के भीतर फैली गुटबाजी को खत्म कर एकजुट होकर काम करने की अपील की। प्रदेश अध्यक्ष आनंद जौहरी ने जानकारी दी कि कई लोग फर्जी तरीके से खुद को महासभा से जुड़ा बताकर समाज को गुमराह कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि एक फर्जी अध्यक्ष के खिलाफ रजिस्ट्रार कार्यालय से पत्र भेजकर 'अखिल भारतीय कायस्थ महासभा' नाम हटाने की भी कार्रवाई की गई है।

बैठक में सुशील श्रीवास्तव, विकास श्रीवास्तव, राजू श्रीवास्तव, शैलेंद्र निगम, भरत श्रीवास्तव, भानू प्रताप श्रीवास्तव, नवनीत निगम, दयाशंकर श्रीवास्तव, प्रतीक श्रीवास्तव, रविंद्र खरे, मनोज श्रीवास्तव, दिलीप, अजीत, अनुज निगम, राजेंद्र श्रीवास्तव, रोहित खरे, अमरीश श्रीवास्तव समेत कायस्थ समाज के लगभग 50 से अधिक प्रमुख लोग मौजूद रहे। सभी ने नए पदाधिकारियों को शुभकामनाएं देते हुए संगठन के कार्यों में सहयोग का आश्वासन दिया। चित्रकूट में हुई इस बैठक से कायस्थ समाज के संगठनात्मक ढांचे को एक नई दिशा मिली है। नए पदाधिकारियों की नियुक्ति और भविष्य की योजनाएं समाज के लिए मील का पत्थर साबित हो सकती हैं।

संक्षिप्त खबरें

बघला पुल के पास बाइक दुर्घटना, दो घायल, अस्पताल से रेफर

त्रिवेणीगंज (सुपौल-बिहार) त्रिवेणीगंज थाना क्षेत्र अंतर्गत बघला पुल के पास एक अनियंत्रित बाइक हादसे का शिकार हो गई, जिससे दो युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना उस वक्त हुई जब दोनों युवक त्रिवेणीगंज से वापस अपने गांव बघला लौट रहे थे। हादसे के बाद स्थानीय लोगों की मदद से दोनों घायलों को इलाज के लिए त्रिवेणीगंज अनुमंडलीय अस्पताल लाया गया, जहां ड्यूटी पर तैनात चिकित्सक द्वारा प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए रेफर कर दिया गया। घायलों की पहचान बघला निवासी अजीत कुमार एवं मोहम्मद मुस्ताक के रूप में की गई है। पुलिस मामले की जांच में जुट गई है। बताया जा रहा है कि बाइक की रफ्तार तेज थी, जिस कारण चालक नियंत्रण नहीं रख सका और यह हादसा हो गया।

पाकुड़ कांग्रेस कार्यालय में संगठनात्मक बैठक सम्पन्न

"संविधान बचाओ रैली" की तैयारी को लेकर तनवीर आलम ने भरा जोश

पाकुड़, झारखंड- पाकुड़ जिला कांग्रेस कार्यालय में शनिवार को एक अहम संगठनात्मक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता जिला कांग्रेस अध्यक्ष श्री कुमार सरकार ने की, जबकि मुख्य अतिथि के रूप में झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महासचिव तनवीर आलम उपस्थित रहे। बैठक का मुख्य उद्देश्य 28 जून 2025 को रविंद्र भवन, पाकुड़ में प्रस्तावित ÷संविधान बचाओ रैली÷ की व्यापक तैयारी तथा कांग्रेस संगठन को जमीनी स्तर पर और मजबूत बनाने को लेकर रणनीति तय करना था।अपने प्रेरणादायक संबोधन में तनवीर आलम ने कार्यकर्ताओं में जोश भरते हुए कहा कि संविधान की रक्षा आज की सबसे बड़ी राष्ट्रीय आवश्यकता है। कांग्रेस इस ऐतिहासिक जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा से निभा रही है। 'संविधान बचाओ रैली' केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि लोकतंत्र को जीवित रखने की जन आवाज है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से अपील की कि वे संगठन के मूल विचारों – धर्मनिरपेक्षता, सामाजिक न्याय और समानता – को गांव-गांव तक पहुंचाएं और जनसरोकारों के मुद्दों पर लगातार सक्रिय रहें। विशेष रूप से युवा कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए उन्होंने नई सोच, नेतृत्व और नवाचार के साथ आगे आने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस महज एक राजनीतिक दल नहीं, बल्कि यह भारत की लोकतांत्रिक आत्मा का प्रतीक है। जब लोकतांत्रिक संस्थाएं संकट में हों, तो हर कार्यकर्ता की जिम्मेदारी और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। बैठक में जिला कांग्रेस कमेटी, सभी प्रखंड अध्यक्ष, महिला कांग्रेस, युवा कांग्रेस, एनएसयूआई एवं अन्य मोर्चा संगठनों के पदाधिकारी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। सभी ने मिलकर ÷संविधान बचाओ रैली÷ को ऐतिहासिक रूप से सफल बनाने का संकल्प लिया।

अतिक्रमण दुकानों पर चला बुलडोजर

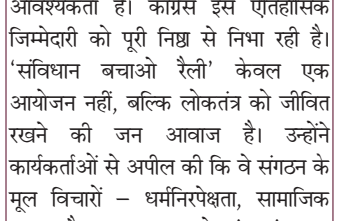

बछरावां रायबरेली। चौराहा से लालगंज रेलवे क्रासिंग तक सड़क की पटरी पर दुकानों द्वारा अतिक्रमण कर लिया गया था। जिसके पश्चात उप जिलाधिकारी महराजगंज बछरावां थाना इंचार्ज क्षेत्राधिकारी महराजगंज द्वारा अतिक्रमण कार्यों की दुकानों पर बुलडोजर द्वारा अतिक्रमण हटाया गया। दर्जनों दुकानदारों ने बताया कि हम कई बार अधिकारियों से वार्तालाप किया लेकिन दुकानों के लिए कहीं पर जगह नहीं दी गई है और दुकान हमारे लोगों की बुलडोजर द्वारा तोड़ दी गई है कोई दुकान पान की दुकान खोलता था किसी की नाई की दुकान एक महिला कपड़े स्त्री करती थी इसी तरह दर्दनो दुकानदारों को बुलडोजर द्वारा अतिक्रमण उठाया गया है जिसके कारण कई दुकानदार तो रो-रो कर अपना दुखड़ा सुनाते रहे लेकिन अतिक्रमण की वजह से दुकानदारों की दुकानें हटाई गई। और इसी आक्रमांक की वजह से बछरावां थाना इंचार्ज को लाइन हाजिर किया गया था इसके पश्चात प्रशासन का पूरा फोकस है कि बछरावां चौराहा के आसपास जो भी अतिक्रमण है ।उस अतिक्रमण को हटाया जाएगा।

त्रिवेणीगंज नगर परिषद वार्ड 11 उपचुनाव 28 जून को, शांतिपूर्ण मतदान को लेकर प्रशासन सतर्क

स्वतंत्र प्रभात

त्रिवेणीगंज सुपौल बिहार । नगर परिषद के वार्ड 11 के रिक्त पार्षद पद के लिए उपचुनाव हेतु मतदान शनिवार 28 जून को सुबह 7 बजे से शाम 5 बजे तक होगा।शांतिपूर्ण और भयमुक्त मतदान सुनिश्चित करने के लिए शुक्रवार को एसडीएम कार्यालय में नगरपालिका निर्वाची पदाधिकारी सह एसडीएम अभिषेक कुमार की अध्यक्षता में एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई।बैठक में मतदान प्रक्रिया को सुचारू रूप से संपन्न कराने और कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए गश्ती सह संग्रहण दंडाधिकारी,सेक्टर पदाधिकारी,जोनल दंडाधिकारी और पुलिस पदाधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। एसडीएम अभिषेक कुमार और एसडीपीओ विभाष कुमार ने संयुक्त रूप से अधिकारियों को मतदान प्रक्रिया निष्पक्ष और शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने को लेकर कई दिशा निर्देश दिए।अधिकारियों ने मतदान केंद्रों पर सुरक्षा व्यवस्था,मतदाता की सुविधाओं और निर्वाचन प्रक्रिया की निगरानी पर विशेष ध्यान देने का निर्देश दिया। प्रशासन ने मतदाताओं से निर्भय होकर अपने मताधिकार का उपयोग करने की अपील भी की है मौके पर जानकारी देते हुए एसडीएम अभिषेक कुमार ने बताया कि शांतिपूर्ण व भयमुक्त माहौल में मतदान की प्रक्रिया संपन्न कराने के लिए सभी प्रकार की प्रशासनिक तैयारियां पूरी कर ली गई है उन्होंने कहा कि शांतिपूर्ण व भयमुक्त माहौल में मतदान संपन्न कराने के लिए बीएनएसएस की धारा 126 के तहत 21 लोगों पर कार्रवाई की गई है उन्होंने कहा कि वार्ड 11 में मतदान के लिए उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय बभनगामा उत्तर और दक्षिण भाग मिलाकर दो मतदान केंद्र बनाए गए हैं उत्तर भाग में मतदान केंद्र संख्या एक पर कुल वोटर 671 हैं जिसमें 351 पुरुष और 320 महिला मतदाता शामिल है वहीं दक्षिण भाग में मतदान केंद्र संख्या दो पर कुल मतदाता 737 है जिसमें 384 पुरुष व 353 महिला मतदाता शामिल है बता दें कि उपचुनाव में नप वार्ड 11 में पार्षद पद के लिए चार महिला उम्मीदवार कोमल कुमारी,गुंजन देवी,गीता देवी और ममता देवी चुनावी मैदान में है एसडीएम ने बताया कि शांतिपूर्ण व भयमुक्त माहौल में चुनाव सम्पन्न कराने के उद्देश्य से डीसीएलआर संस्कार रंजन और सीआई सुनील कुमार पासवान को जोनल तो बीडीओ अभिनव भारती को सेक्टर मजिस्ट्रेट बनाया गया है कंट्रोल रूम इंचार्ज बीपीआरओ मनीष कुमार को बनाया गया है तो वहीं पीसीसीपी में एसआई मनीष कुमार और रंजीत कुमार मंडल को तैनात किया गया है बता दें कि त्रिवेणीगंज को नगर परिषद का दर्जा मिलने के बाद वर्ष 2022 में नगरपालिका के प्रथम चुनाव में वार्ड 11 से शांति देवी वार्ड पार्षद के रूप में विजयी हुई थी और वार्ड पार्षद बनने के करीब दो वर्ष बाद उनका आकस्मिक निधन हो गया था,उनके निधन के 8 महीने बाद यह चुनाव हो रहा है।

बालू माफिया-शराब माफिया बिहार में बन रहे हैं मंत्री,विधायक व एमएलसी

- जमीन विवाद पर सांसद पप्पू यादव ने की जांच की मांग,भ्रष्टाचार पर साधा निशाना
- त्रिवेणीगंज सीओ की शिकायत गवर्नर से करने की कही बात

स्वतंत्र प्रभात

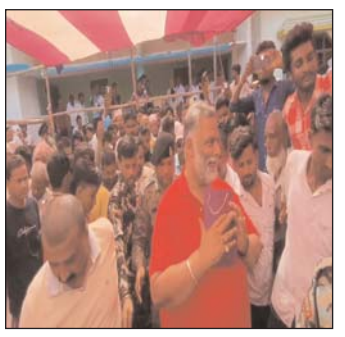

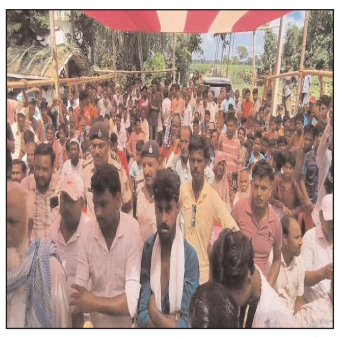

त्रिवेणीगंज । थाना क्षेत्र के गोनहा पंचायत के पुरनदाहा वार्ड 15 में बीते 12 जून को कब्रिस्तान की जमीन जोतने को लेकर दो पक्षों में हुए विवाद के मामले में गुरुवार को पूर्णिया सांसद राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव ने घटनास्थल का दौरा किया। स्थानीय मुखिया के यहां पहुंचकर उन्होंने स्थिति का जायजा लिया और समाज के लोगों को मामले में धैर्य व संयम बरतने के लिए धन्यवाद कहा। इस दौरान उन्होंने पुलिस की कार्यशैली की सराहना की और लोगों को एकजुट रहने के लिए धन्यवाद दिया। मौके पर उन्होंने मीडिया से बातचीत में सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर तीखा प्रहार किया। उन्होंने कहा कि देश में जातिगत और धार्मिक आधार पर समाज को बांटने की कोशिश हो रही है। हाल के दिनों में आशुतोष नामक व्यक्ति द्वारा पासवान समाज की एक महिला पर की गई टिप्पणी और जवाबी गाली-गलौज की घटना को गलत ठहराते हुए उन्होंने नेताओं से अपील की कि वे चुनाव जीतने के लिए समाज को न बांटें। उन्होंने कहा,कब तक जाति और धर्म के नाम पर वोट मांगेंगे? कोई घटना किसी व्यक्ति के स्वार्थ के कारण होती है,न कि पूरे समाज के कारण। पूरे समुदाय को बदनाम करना गलत है उन्होंने उत्तर प्रदेश की एक घटना का जिक्र करते हुए कहा कि वहां एक पिछड़े समाज के व्यक्ति को प्रवचन देने से रोका गया और उसका सिर मुंडवाया गया। उन्होंने सवाल उठाया कि क्या इसके लिए पूरे समाज को दोष देना उचित है? सांसद ने नेताओं के आचरण पर चिंता जताते हुए कहा कि सत्ता में रहते हुए न तो भ्रष्टाचार खत्म होता है,न गरीबी,न ही लोगों को न्याय और अधिकार मिल पाता है उन्होंने बिहार में बढ़ते अपराध और माफिया राज पर भी निशाना साधा। सांसद ने कहा कि बालू-शराब माफिया और अपराधी अब मंत्री और विधायक बन रहे हैं। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि दिल्ली में हत्या के मामले में तिहाड़ जेल में रहे व्यक्ति को मुजफ्फरपुर में मंत्री बनाया गया और सासाराम में बालू माफिया एमएलसी बन गया। उन्होंने समाज से अपील की कि वह गलत लोगों का साथ देना बंद करे।सांसद ने बिहार के अधिकारियों पर भ्रष्टाचार का गंभीर आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि सीओ,बीडीओ, डीसीएलआर और एडीएम जैसे पदों पर 99.9 प्रतिशत अधिकारी भ्रष्टाचार में लिप्त हैं। उन्होंने दावा किया कि सीओ की पोस्टिंग 20-40 लाख रुपये और डीसीएलआर-एडीएम की पोस्टिंग एक करोड़ रुपये में होती है। ऐसे में निष्पक्ष जजमेंट और जमाबंदी संभव नहीं है। उन्होंने शुक्रवार को पटना में राज्यपाल से मिलकर भ्रष्ट अधिकारियों की बेनामी संपत्ति की जांच व जब्त कर कार्रवाई करने की मांग की बात कही। पूरंदहा में कब्रिस्तान की जमीन को जबरन जोतने के विवाद पर सांसद ने त्रिवेणीगंज सीओ प्रियंका सिंह के कार्यों की जांच की मांग की। उन्होंने आरोप लगाया कि सीओ ने मोटी रकम लेकर गैर-मजरूआ आम यानी सरकारी जमीन की रसीद काटी और जमाबंदी की,जो कानून के खिलाफ है। उन्होंने कहा कि इस मामले की लिखित शिकायत की जाएगी और गवर्नर से सीओ के कार्यों की जांच की मांग की जाएगी।सांसद ने समाज से एकजुट रहने और गलत लोगों को वोट न देने की अपील की। उन्होंने कहा कि ब्लॉक और थानों में आम आदमी की इज्जत नहीं होती,क्योंकि समाज ही गलत लोगों को बढ़ावा देता है। इस दौरे के दौरान सांसद ने स्थानीय लोगों को धैर्य रखने के लिए धन्यवाद दिया और मामले को शांतिपूर्ण ढंग से सुलझाने पर जोर दिया।

एसडीएम की अध्यक्षता में विशेष मतदाता सूची पुनरीक्षण को लेकर बैठक आयोजित

- राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों से बीएलए-2 की नियुक्ति की अपील

स्वतंत्र प्रभात

त्रिवेणीगंज (सुपौल)। अनुमंडल कार्यालय स्थित एसडीएम वेश्म में गुरुवार की शाम मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण कार्यक्रम को लेकर एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता निर्वाचन निबंधन पदाधिकारी सह एसडीएम अभिषेक कुमार ने की। बैठक में विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि शामिल हुए। एसडीएम ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार 1 जुलाई की अर्हता तिथि को आधार मानते हुए 25 जून से 26 जुलाई तक विशेष पुनरीक्षण अभियान चलाया जाएगा। इस दौरान बीएलओ द्वारा घर-घर जाकर मतदाताओं को दो प्रतियों में इन्यूमेरेशन फॉर्म वितरित किया जाएगा। 27 से 31 जुलाई तक नियंत्रण तालिका का अद्यतन किया जाएगा। इसके बाद 1 अगस्त को मतदाता सूची का प्रारूप प्रकाशित किया जाएगा, जिस पर 1 अगस्त से 1 सितंबर तक दावे और आपत्तियां ली जाएंगी। अंतिम मतदाता सूची का प्रकाशन 30 सितंबर को किया जाएगा। उन्होंने बताया कि प्रत्येक मतदान केंद्र पर मतदाताओं की संख्या 1200 से अधिक नहीं होनी चाहिए। साथ ही सभी राजनीतिक दलों से अनुरोध किया गया कि वे अपने-अपने दल से बीएलए-2 की शीघ्र नियुक्ति करें, ताकि कार्य में पारदर्शिता बनी रहे। एसडीएम ने बताया कि बिहार में पिछली बार गहन पुनरीक्षण वर्ष 2003 में हुआ था। अब यह पुनरीक्षण आवश्यक हो गया है क्योंकि शहरीकरण, प्रवासन, नये युवा मतदाताओं की वृद्धि, मृत मतदाताओं की जानकारी का अभाव और अवैध विदेशी नागरिकों के नाम सूची में दर्ज होने जैसी समस्याएं सामने आ रही हैं। बैठक में प्रखंड विकास पदाधिकारी अभिनव भारती

अनियंत्रित बाइक की टक्कर से 15 वर्षीय छात्र गंभीर रूप से घायल, रेफर

स्वतंत्र प्रभात

त्रिवेणीगंज (सुपौल) त्रिवेणीगंज-पिपरा मुख्य मार्ग एनएच 327 ई पर नगर परिषद क्षेत्र अंतर्गत लालपट्टी गांव के समीप गरुवार की संध्या सड़क दुर्घटना में 15 वर्षीय साइकिल सवार छात्र गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल छात्र की पहचान नगर परिषद क्षेत्र के बभनगामा वार्ड 16 निवासी अनिल मेहता के पुत्र अंकित कुमार के रूप में की गई है। मिली जानकारी के अनुसार, अंकित कुमार त्रिवेणीगंज बाजार स्थित एक कोचिंग संस्थान से पढ़ाई कर साइकिल से अपने घर लौट रहा था। इसी दौरान लालपट्टी गांव के समीप विपरीत दिशा से तेज रफ्तार आ रही एक अज्ञात मोटरसाइकिल ने उसे जोरदार टक्कर मार दी।टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि छात्र सड़क पर गिरकर बुरी तरह घायल हो गया जबकि उसकी साइकिल भी क्षतिग्रस्त हो गई। जिसे स्थानीय राहगीरों व आसपास के लोगो द्वारा घायल छात्र को इलाज हेतु अनुमंडलीय अस्पताल लाया गया, जहां ड्यूटी पर तैनात चिकित्सक डॉ.उमेश कुमार यादव ने प्राथमिक उपचार के बाद छात्र की गंभीर स्थिति को देखते हुए बेहतर इलाज के लिए उसे मधेपुरा मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया। इधर घटना के बाद से परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है।परिजनों ने बताया कि अंकित कोचिंग से पढ़कर घर लौट रहा था, तभी यह सड़क हादसा हुआ।

धरती आबा जनभागीदारी अभियान के तहत पंचायत स्तरीय शिविर का हुआ आयोजन, बड़ी संख्या में ग्रामीणों की रही भागीदारी

स्वतंत्र प्रभात

पाकुड़, झारखंड- जिला प्रशासन द्वारा जिले के सभी जनजातीय बहुल पंचायत एवं गांवों में धरती आबा जनभागीदारी अभियान के तहत ग्राम स्तरीय शिविरों का सफल आयोजन किया जा रहा है। इन शिविरों का उद्देश्य सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं को अंतिम पंक्ति के पात्र लाभुक तक पहुँचाना है। शिविर के माध्यम से अभियान चलाकर योग्य लाभुकों की पहचान की जा रही है एवं उन्हें मौके पर ही योजनाओं से जोड़ा जा रहा है। पाकुड़ प्रखंड के नसीपुर पंचायत, लिट्टीपाड़ा प्रखंड के फुलपहाड़ी पंचायत एवं महेशपुर प्रखंड के अर्जुनदहा एवं श्री रामगड़िया पंचायत में आयोजित शिविर के माध्यम से प्रधानमंत्री आवास योजना, आयुष्मान भारत योजना, राशन कार्ड, श्रमिक पंजीयन, किसान क्रेडिट कार्ड, वृद्धा/विधवा/दिव्यांग पेंशन योजना, नेशनल डिजिटल हेल्थ मिशन, उज्ज्वला योजना, मतदाता पहचान पत्र अद्यतन, टीकाकरण, पीएम किसान सम्मान निधि योजना आदि के तहत सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। शिविरों में बड़ी संख्या में ग्रामीणों की उपस्थिति देखी जा रही है, जो उत्साहपूर्वक अपने दस्तावेजों के साथ योजनाओं का लाभ उठाने हेतु पहुँच रहे हैं।

मौके पर ही आधार लिंकिंग, आधार अपडेट, बैंक खाता खुलवाना, स्वास्थ्य जांच, पेंशन सत्यापन, आवास जांच एवं श्रमिक पंजीकरण जैसी महत्वपूर्ण प्रक्रियाएं संपन्न की जा रही हैं। जिला स्तरीय पदाधिकारी एवं प्रखंड विकास पदाधिकारियों, पंचायत सचिवों, पंचायत सेवकों, सहायक अभियंताओं, बीसी, सीएससी ऑपरेटरों एवं अन्य कर्मियों की प्रतिनियुक्ति कर शिविरों को सुचारू ढंग से संपन्न कराया जा रहा है। साथ ही, अभियान के अंतर्गत समाज कल्याण, ग्रामीण विकास, खाद्य आपूर्ति, स्वास्थ्य, कृषि, कल्याण, एवं मत्स्य पालन विभाग की योजनाओं से भी लाभुकों को जोड़ने का कार्य किया जा रहा है। जिला प्रशासन का प्रयास है कि अनुसूचित जनजाति बहुल क्षेत्रों में प्रत्येक पात्र परिवार तक जन कल्याणकारी योजनाओं का सीधा लाभ पहुँचाया जाए, जिससे सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण सुनिश्चित हो सके। धरती आबा जनभागीदारी अभियान सरकार की जन केंद्रित योजनाओं को जमीनी स्तर पर लागू करने की दिशा में एक पहल है।

30 जून को रोटरी क्लब रांची के द्वारा सदर अस्पताल रांची में लगेगी अत्याधुनिक मैमोग्राफी मशीन

- मशीन से होगी ब्रेस्ट कैंसर की जांच, 45 लाख है मशीन की लागत

स्वतंत्र प्रभात

भुरकुंडा, झारखंड- शुक्रवार को रोटरी क्लब रांची में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में क्लब के प्रवक्ता प्रवीण राजगढ़िया ने बताया कि रोटरी क्लब ऑफ रांची द्वारा अपने प्रोजेक्ट आरोग्यम- बैटलिंग ब्रेस्ट कैंसर के तहत यह मशीन लगाया जा रहा है। इसमें दक्षिण कोरिया के रोटरी क्लब सुवोन-नोसोंग डी-3750 का भी सहयोग मिला है। मशीन की कीमत लगभग 45 लाख रुपये है। रोटरी क्लब राँची के अध्यक्ष गौरव बागरॉय ने बताया कि इस डिजिटल मैमोग्राफी मशीन का उद्घाटन 30 जून 2025 को किया जाएगा। मशीन लगने के बाद सदर अस्पताल में ब्रेस्ट कैंसर जांच की सुविधा काफी कम दर पर उपलब्ध होगी। आयुष्मान भारत योजना के लाभार्थियों को यह सेवा पूरी तरह निःशुल्क मिलेगी। इस पहल का उद्देश्य सिर्फ एक मशीन स्थापित करना नहीं है, बल्कि महिलाओं को समय पर जांच के लिए प्रोत्साहित करना और स्तन कैंसर के प्रति जागरूकता फैलाना है। उन्होंने बताया कि मशीन का उद्घाटन मुख्य अतिथि डीजी रोटेरियन बिपिन चाचन, फर्स्ट लेडी रोटेरियन शिल्पी चाचन, सिविल सर्जन राँची डॉ प्रभात कुमार करेंगे। उन्होंने कहा कि सदर अस्पताल, राँची न केवल जिला मुख्यालय का प्रमुख स्वास्थ्य केंद्र है, बल्कि आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के लिए भी जीवन रेखा है। हमारा लक्ष्य है कि प्रत्येक जरूरतमंद मरीज को समय पर गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सुविधा मिले। इसलिए रोटरी राँची ने आमजनों के हित को देखते हुए सदर अस्पताल राँची में मशीन लगाने का निर्णय लिया है। रोटरी राँची के द्वारा लगातार तीन साल तक मशीन की देखरेख समेत सदर अस्पताल में कार्यरत चिकित्सकों और पारा-मेडिकल स्टाफ के लिए मेमोग्राफी मशीन का प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किया जायेगा।

क्यों आवश्यक है मैमोग्राफी मशीन: 40 वर्ष से अधिक उम्र की महिलाओं में स्तन कैंसर का जोखिम अधिक होता है। प्रारंभिक अवस्था में कैंसर की पहचान से न केवल इलाज आसान होता है, बल्कि जान भी बचाई जा सकती है। मैमोग्राफी एक प्रभावी तकनीक है। जिससे छोटी से छोटी गांठ, ऊतक में बदलाव या असामान्य संरचना का पता लगाया जा सकता है वह भी क्लिनिकल लक्षणों के प्रकट होने से पहले। यह सुविधा स्तन कैंसर की प्रारंभिक जांच और रोकथाम में महत्वपूर्ण योगदान देगी।

क्या है इस मशीन की विशेषताएँ: अत्याधुनिक मैमोग्राफी वीनस डीवीआर प्लस में कई विशेषताएं हैं। यह फुल फील्ड डिजिटल मैमोग्राफी (एफएफडीएम) तकनीक पर आधारित है। इसका स्मार्ट एइसी तकनीक मरीज को आवश्यकतानुसार सटीक मात्रा में एक्स-रे डोज़ देता है। यह उच्च गुणवत्ता वाली इमेजिंग-इमेज स्क्रीन पर मात्र 10 सेकंड में दे देती है। कम दबाव और दर्द रहित जांच के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन की गई कंप्रेशन पैडल्स है। घने स्तन ऊतक में भी स्पष्ट पहचान की सुविधा उपलब्ध है।

रोटेरियन जो इस प्रोजेक्ट को कर रहे हैं सपोर्ट: 45 लाख की इस मशीन को लगाने के लिए रोटेरियन योगदान दे रहे हैं। इनमें में बिपिन चाचन, सुरेश साबू, बिनोद सरावगी, रविंदर सिंह चड्ढा, सुमित अग्रवाल, रमेश धरणीधरका, ललित त्रिपाठी, पवन जायसवाल, आदित्य मल्होत्रा, राजेश नाथ शाहदेव, संदीप मुंजाल , ख्याति मुंजाल, अजय साबू, जसदीप सिंह, सुधा ढानढानिया, दीपक श्रीवास्तव, गिरीश अग्रवाल, हरमिंदर सिंह, रजत बेहल, आस्था बेहल, अश्वनी गुप्ता, गौरव बागरॉय, प्रवीण राजगढ़िया मुख्य हैं।

हजारीबाग विधायक के सौजन्य से भगवान जगन्नाथ धाम मंदिर में महाभोग (खिचड़ी) का वितरण

- रथयात्रा आस्था और सेवा का पर्व है, भगवान जगन्नाथ की कृपा सभी श्रद्धालुओं पर बनी रहे : प्रदीप प्रसाद

स्वतंत्र प्रभात

हजारीबाग, झारखंड- हजारीबाग सदर विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत सदर प्रखंड स्थित सिलवार गांव के प्राचीन भगवान जगन्नाथ धाम मंदिर में रथयात्रा महोत्सव के पावन अवसर पर हजारीबाग विधायक प्रदीप प्रसाद के सौजन्य से श्रद्धालुओं के बीच महाभोग स्वरूप खिचड़ी का भव्य वितरण किया गया। महाभोग का वितरण सुबह लगभग 10:00 बजे प्रारंभ हुआ, जो देर शाम तक अनवरत रूप से चलता रहा। बताते चले कि महाभोग का वितरण पिछले कई सालो से करवाया जाता रहा है। श्रद्धालुओं की भारी भीड़ के बीच अत्यंत सुव्यवस्थित ढंग से प्रसाद वितरण किया गया, जिससे श्रद्धालुओं में उत्साह एवं संतोष का वातावरण बना रहा। हजारीबाग विधायक प्रदीप प्रसाद निजी कारणों से शहर से बाहर होने के बावजूद उन्होंने पूर्व से ही आयोजन की विस्तृत योजना तैयार कर अपने प्रतिनिधियों व कार्यकर्ताओं को निर्देशित कर दिया था। विधायक की अनुपस्थिति में भी आयोजन में कहीं कोई कमी नहीं दिखी। विधायक की टीम भाजपा के नेता व कार्यकर्ताओं ने पूरी तत्परता और समर्पण के साथ महाभोग वितरण कार्य को कुशलतापूर्वक संपन्न कराया विधायक प्रदीप प्रसाद के सुपुत्र सूर्यांश कुमार विशेष रूप से मंदिर परिसर पहुंचे और भगवान जगन्नाथ, बलभद्र एवं सुभद्रा माता की विधिवत पूजा-अर्चना की। उन्होंने क्षेत्रवासियों की सुख, शांति और समृद्धि की कामना की तथा श्रद्धालुओं के बीच स्वयं प्रसाद वितरण करते हुए सेवा कार्य में लगे रहे। इस अवसर पर मंदिर परिसर में भक्ति और उल्लास का वातावरण बना रहा। भजन-कीर्तन, पूजा-पाठ और प्रसाद वितरण से पूरा इलाका भक्तिरस में डूबा रहा। स्थानीय लोगों एवं ग्रामीणों ने इस आयोजन को अत्यंत सराहनीय बताते हुए विधायक प्रदीप प्रसाद के प्रति आभार जताया। हजारीबाग विधायक प्रदीप प्रसाद ने दूरभाष के माध्यम से जानकारी देते हुए कहा की रथयात्रा हमारे समाज में आस्था, परंपरा और लोकसेवा का प्रतीक है। हर वर्ष की भांति इस बार भी महाभोग वितरण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जिससे श्रद्धालु भगवान जगन्नाथ की कृपा प्राप्त कर सकें। मैं स्वयं उपस्थित नहीं रह सका, इसका खेद है, परंतु मेरी टीम व भाजपा नेता व कार्यकर्ताओं ने जिस प्रतिबद्धता के साथ आयोजन को सफल बनाया, वह अत्यंत प्रशंसनीय है। उन्होंने सभी श्रद्धालुओं, मंदिर समिति, स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों पुलिस व मीडिया बन्धुओ को धन्यवाद देते हुए भगवान जगन्नाथ से क्षेत्रवासियों के कल्याण की प्रार्थना की। इस खास अवसर पर भाजपा नेता व पूर्व जिला परिषद सदस्य कौलेश्वर रजक, धर्मनाथ प्रसाद, सचिव नेमीचंद कुशवाहा, भाजपा नेता रामअवतार शर्मा, बिरजू रवि, अमृत पासवान, राजू प्रसाद, प्रमेश्वर गोप, रंजीत राम, राजेश साव, राजेन्द्र मेहता, मनोज कुशवाहा, महेन्द्र राम, जगदीश प्रसाद, नरेश यादव, विशेष्वर पाडेय, मंदिर समिति अध्यक्ष अभय सिह, प्रवेश रजक, टुन्नू पाडेय, राजेश यादव, भजन साव, मोनू कुमार, अविनाश कुमार, राजेश ठाकुर, राहूल मंडल, ज्वाला प्रताप, मनीष ठाकुर, चंदन सिह, दीपक प्रजापति सहित सैकेडों संख्या मे लोग महाभोग वितरण व रथ यात्रा मेला मे श्रद्धालुओं के स्वागत में मुस्तेद रहे।

भगवान जगन्नाथ यात्रा को लेकर गारलाही में धूमधाम से हुआ पूजा-अर्चना, उमड़े श्रद्धाल

- भंडारे और प्रसाद वितरण के साथ संपन्न हुआ धार्मिक आयोजन

स्वतंत्र प्रभात

बरही, झारखंड- बरही प्रखंड के अंतर्गत करियातपुर पंचायत स्थित ग्राम गारलाही (शिवपुर) में भगवान जगन्नाथ यात्रा के शुभ अवसर पर विशेष पूजा-अर्चना का आयोजन किया गया। इस धार्मिक आयोजन में पूरे गांव के लोगों ने श्रद्धा और उत्साह के साथ हिस्सा लिया। देवी मंडप स्थल पर आयोजित इस पूजा में जय जगन्नाथ के उद्घोष से वातावरण भक्तिमय हो गया। कार्यक्रम की शुरुआत विधिवत पूजा-पाठ और अधिष्ठान के साथ हुई, जिसके उपरांत प्रसाद वितरण और विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। श्रद्धालुओं ने भक्ति भाव के साथ प्रसाद ग्रहण किया और भंडारे में सम्मिलित होकर भगवान जगन्नाथ की कृपा प्राप्त की। इस अवसर पर करियातपुर पंचायत के मुखिया मनोज कुमार, ग्राम विकास समिति के अध्यक्ष राजीव रंजन, वरिष्ठ समाजसेवी पुरन राम, कुणाल कटरियार, मोहन प्रजापति, अजय प्रजापति, पप्पू यादव, वीरेंद्र राणा, ललन राणा, नरेश प्रजापति, सोहन प्रजापति, नारायण प्रजापति, अमरेंद्र राम, तुलसीराम, भुवनेश्वर राणा, बिगन राम, गणेश पंडित, प्रसादी यादव, अर्जुन महतो, विनोद प्रजापति, राजेंद्र साव, तथा बड़ी संख्या में महिला श्रद्धालु जिनमें यशोदा देवी, सरिता देवी, सुशीला देवी, रेखा देवी, लीला देवी, मालती देवी, तरवा देवी, पर्वा देवी, चांदनी देवी, शीला देवी, अनीता देवी, आरती देवी, संगीता देवी, रीना देवी आदि प्रमुख रूप से शामिल हुईं। पूरे आयोजन के दौरान श्रद्धालुओं के चेहरों पर आस्था और उल्लास का भाव स्पष्ट देखा गया। ग्रामीणों ने इस आयोजन को एकता, सामाजिक सद्भाव और आध्यात्मिक जागरूकता का प्रतीक बताया। स्थानीय लोगों ने बताया कि इस प्रकार के धार्मिक आयोजनों से गांव में समरसता और भाईचारे की भावना मजबूत होती है और आने वाली पीढ़ियों को भी हमारी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ने में मदद मिलती है।

संक्षिप्त खबरें

उर्वरक रैकों से 40 प्रतिशत उर्वरकों की आपूर्ति पीसीएफ को किये जाने का हुआ निर्देश

प्रतापगढ़। एआर कोआपरेटिव देवेन्द्र बर्मन ने बताया है कि उत्तर प्रदेश शासन द्वारा सहकारिता क्षेत्र की समितियों पर कृषकों के मध्य उर्वरकों की मांग में वृद्धि के दृष्टिगत निजी उर्वरक कम्पनियों की जनपद में लगने वाली उर्वरक रैकों से 40 प्रतिशत उर्वरकों की आपूर्ति पीसीएफ को किये जाने के निर्देश दिये गये है। इससे समितियों के सदस्य लाभान्वित होगें तथा उन्हें उनकी जोत के अनुसार पर्याप्त मात्रा में उर्वरक उपलब्ध कराया जायेगा।

डॉ. अवनीत सोनकर का आयुष चिकित्सक पद पर चयन, जिले का नाम किया रोशन परिवार व शुभचिंतकों में हर्ष की लहर

जौनपुर। जिले के प्रतिभाशाली बेटे डॉ. अवनीत सोनकर ने एक बार फिर साबित कर दिया कि कठिन परिश्रम और दृढ़ संकल्प से कोई भी मंज़िल पाई जा सकती है। हाल ही में उनका चयन आयुष चिकित्सक पद पर हुआ है, जिसकी सूचना मिलते ही परिवारजनों, शुभचिंतकों और समाज के लोगों में हर्ष की लहर दौड़ गई। डॉ. अवनीत की इस सफलता पर बधाई देने वालों का तांता लग गया। सबसे पहले उन्हें बधाई दी डॉ. चित्रलेखा सिंह ने, इसके बाद बिजली विभाग के निखिलेश सिंह, सामाजिक कार्यकर्ता बागी सिंह, डॉ. सलील श्रीवास्तव, डॉ. गुलनाज खान, डॉ. निधि श्रीवास्तव, डॉ. विकास सिंह और रोशी सोनकर सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने शुभकामनाएं प्रेषित कीं। शुभचिंतकों ने कहा कि डॉ. अवनीत की यह उपलब्धि क्षेत्र के बेटो के लिए प्रेरणास्रोत है। वहीं परिजनों ने इसे उनकी कड़ी मेहनत, निष्ठा और सेवा भावना का परिणाम बताया। समाज में उनके चयन को स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में एक सकारात्मक पहल के रूप में देखा जा रहा है। लोग उम्मीद कर रहे हैं कि डॉ. अवनीत सोनकर अपने कर्तव्यों का पूरी निष्ठा और ईमानदारी से निर्वहन कर समाज को बेहतर स्वास्थ्य सुविधा देने में अहम भूमिका निभाएंगी।

पॉलिथीन के खिलाफ चला विशेष अभियान, कई दुकानदारों पर हुई कार्रवाई

जौनपुर- शासन के निर्देश के क्रम में नगर पालिका अधिशासी अधिकारी पवन कुमार के द्वारा पॉलिथीन के उपयोग पर रोक लगाने और जनजागरूकता के उद्देश्य से विशेष अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान नगर के प्रमुख बाजारों, चौराहों और सार्वजनिक स्थलों पर छापेमारी के दौरान करीब 01 क्विंटल प्रतिबंधित पॉलीथिन जब्त की गई। संबंधित दुकानदारों के खिलाफ सख्त कार्यवाही करते हुए कुल 22 हजार रुपये का जुर्माना भी वसूला गया। इस अभियान में नगर पालिका के सफाई निरीक्षक अवधेश यादव सहित अन्य कर्मचारियों की विशेष टीम ने विभिन्न दुकानों, ठेलों और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों पर जांच की और पॉलिथीन का प्रयोग करते पाए गए लोगों पर सख्त कार्रवाई की गई। इसके साथ ही लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करते हुए वैकल्पिक थैले जैसे कप?ा और जूट के बैग प्रयोग करने की अपील भी की गई।अधिशासी अधिकारी ने कहा कि हमारा लक्ष्य है कि पॉलिथीन के उपयोग को पूरी तरह समाप्त किया जाए इसके लिए लगातार अभियान चलाए जाएंगे और किसी को भी नियमों के उल्लंघन की छूट नहीं दी जाएगी। उन्होने आमजनमानस से भी अपील है कि वे नियमों का पालन करें और स्वच्छता व पर्यावरण सुरक्षा में सहयोग दें नगर पालिका परिषद ने यह भी स्पष्ट किया कि यह अभियान केवल एक दिन का नहीं, बल्कि लगातार चलाया जाएगा। नगर को पॉलिथीन मुक्त बनाने के लिए हर आवश्यक कदम उठाए जाएंगे, जिसमें जनजागरूकता और सख्त कार्रवाई दोनों शामिल होंगे।

लेखपाल, अरेंजर और चपरासी सहित सात लोगों के विरुद्ध धोखाधड़ी का मुकदमा दर्ज

स्वतंत्र प्रभात

जौनपुर- बदलापुर थाने में उच्च न्यायालय के आदेश के क्रम में हल्का लेखपाल, अरेंजर शाहगंज, चकबंदी अधिकारी बदलापुर के चपरासी सहित सात लोगों के विरुद्ध धोखाधड़ी का मुकदमा दर्ज किया गया है, जिसकी विवेचना की जा रही है। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार जिले में बदलापुर थाना क्षेत्र के रैभानीपुर गांव निवासी शिवकुमार दुबे पुत्र मंगल प्रसाद दुबे ने उच्च न्यायालय में एक रिट याचिका दाखिल कर मांग किया था कि हल्का लेखपाल कैलाश, अरेंजर शाहगंज रमेश, चकबंदी अधिकारी बदलापुर के चपरासी मुरारी सहित पारसनाथ, कृष्णकांत, कमलाकांत और चिंतामणि उपाध्याय के विरुद्ध अभिलेखों में हेर फेर करने का मुकदमा दर्ज किया जाए जिसकी पुष्टि बंदोबस्त अधिकारी चकबंदी वाराणसी द्वारा 24 3.2025 को अपने आदेश में की गई है। बंदोबस्त अधिकारी चकबंदी वाराणसी द्वारा 24 मार्च 2025 को पारित अपने आदेश के तहत 5 अगस्त 2010 को अभिलेखों में दर्द फर्जी आदेश को निरस्त करने का भी आदेश दिया गया।

आवेदक शिवकुमार दुबे ने बताया कि मैंने लक्ष्मीकांत से उनकी जमीन का पंजीकृत बैनामा प्राप्त किया था और जब दाखिल खारिज के लिए प्रार्थना पत्र दिया तो आकर पत्र 23 भाग एक में यह अंकित पाया गया कि मुकदमा नंबर 42 धारा 12 में दिनांक 5 अगस्त 2010 को यह आदेश हुआ कि चक संख्या 42 में अंकित खातेदार इनरदेई का नाम निरस्त करके पारिवारिक समझौता याददाश्त पत्रक के आधार पर पारसनाथ पुत्र दूधनाथ का नाम बतौर असल काश्तकार अंकित हो जो बिल्कुल फर्जी, कूट रचित व मिथ्या था जिसे अभियुक्त गण द्वारा आपसी खड्यंत्र व मिली भगत करके सरकारी अभिलेखों में हेरा फेरी करते हुए फर्जी पत्रावली तैयार की गई थी, क्योंकि अभियुक्त पारसनाथ, कृष्णकांत व कमलाकांत द्वारा लक्ष्मीकांत के भूमि को कम मूल्य में प्राप्त करना चाहते थे परंतु लक्ष्मीकांत द्वारा अपनी भूमिका माकूल कीमत हम प्रार्थी से प्राप्त करके बैनामा कर किया गया जिसके प्रतिशोध में अभियुक्तगण सांठ गांठ व फर्जी बाड़े के द्वारा एक साथ एक राय होकर छल कपट करते हुए अभियुक्त चिंतामणि उपाध्याय के साथ साथ सांठ गांठ करके कूट रचित पत्रावली न्यायालय चकबंदी अधिकारी अतिरिक्त बाद संख्या 43 धारा 12 तारीख फैसला 5 अगस्त 2010 को तैयार कर कर अन्य अभियुक्त गण चकबंदी कार्यालय व कलेक्ट्रेट के कर्मचारी जिसमे हल्का लेखपाल कैलाश, रमेश अरेंजर शाहगंज, मुरारी चपरासी चकबंदी बदलापुर के सहयोग से गलत इंद्राज कर दाखिल दफ्तर कर दिया तथा अभियुक्त मुरारी के द्वारा फर्जी पत्रावली में अपने हस्तलेख में मृतक इनरदेई का बयान भी उनके मृत्यु के पश्चात लेकर अपराध किया गया है। आवेदक शिवकुमार दुबे ने बताया कि उच्च न्यायालय के आदेश के क्रम में बदलापुर थाने में हल्का लेखपाल, अरेंजर शाहगंज, चपरासी सहित सात लोगों के विरुद्ध धोखाधड़ी का मुकदमा दर्ज कर विवेचना की जा रही है।

वरिष्ठ उद्घोषक रहे सुशील वर्मा की मनायी गयी 5वीं पुण्यतिथि

जौनपुर। पूर्वांचल के वरिष्ठ उद्घोषक, दीवानी न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता, श्री लक्ष्मी पूजा महासमिति के संस्थापक सुशील वर्मा की 5वीं पुण्यतिथि शुक्रवार को मनायी गयी। नगर के ओलन्दगंज स्थित उनके आवास पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित लोगों ने उनके चित्र पर माल्यार्पण करके श्रद्धांजलि अर्पित किया। साथ ही उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। विधि-विधान से पूजा करने के बाद हवन हुआ जहां उपस्थित सभी लोगों ने नम आंखों से श्रद्धांजलि दिया। इस दौरान स्व. वर्मा की धर्मपत्नी रीता वर्मा, पुत्री वैशाली वर्मा, स्नेहा वर्मा के अलावा डा. राजकुमार वर्मा, पूनम वर्मा, रामजी जायसवाल, विदिशा जायसवाल, मुकेश यादव, अजय पाण्डेय, महेन्द्र प्रजापति, विनोद यादव, कमलेश वर्मा, हर्ष वर्मा, राकेश वर्मा, अभिषेक अग्रहरि, सूर्य प्रकाश विश्वकर्मा सहित तमाम लोग उपस्थित रहे। अन्त में स्व. वर्मा के पुत्र वैभव वर्मा ने समस्त आगंतुकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

ट्रेन के आगे कूद कर किशोरी नें की आत्महत्या

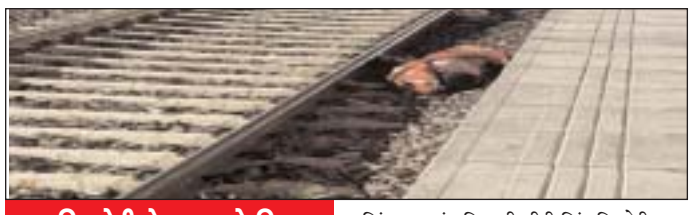

●किशोरी के पास से मिला सुसाइड नोट

स्वतंत्र प्रभात

जौनपुर। चन्दवक थाना अंतर्गत औडिहार जौनपुर रेल प्रखंड पर स्थित डोभी रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर 2 पर बृहस्पतिवार की शाम मालगाड़ी के आगे खुद कर एक किशोरी ने अपनी जान दे दी पुलिस ने कहा कि किशोरी के पास से सुसाइड नोट भी मिला है उसमें उसने मर्जी से आत्महत्या करने की बात लिखी है रेलवे पुलिस में शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा पुलिस के अनुसार गाजीपुर जिले के खानपुर थाना क्षेत्र के सिंगारपुर गांव निवासी श्रीद्वी सिंह किशोरी शाम को डोभी स्टेशन पहुंची थी प्रत्यक्षदर्शीयो के अनुसार वह काफी देर से प्लेटफार्म नंबर दो पर खड़ी थी शाम 6:42 पर औडिहार से जौनपुर की तरफ जा रही मालगाड़ी जब स्टेशन पर पहुंची तो किशोरी इंजन के आगे कूद अपनी जान दे दी स्टेशन मास्टर ने औडिहार जीआरपी थाने पर जीआरपी पुलिस को घटना की सूचना दी गई मौके पर पहुंची पुलिस को शव के पास से सुसाइड नोट भी मिला था नोट में किशोरी ने अपनी मर्जी से आत्महत्या की बात लिखी थी साथ ही यह भी लिखा था कि उसके शव को वाराणसी स्थित उसके ससुराल भेज दिया जाए युवती की शादी इसी वर्ष फरवरी माह में हुई थी किशोरी किस बात को लेकर आत्महत्या की अभी तक पता नहीं लगा है।

थाना जफराबाद की पुलिस पर पुस्तैनी जमीन कब्जाने में सहयोग का आरोप

● महिलाओं को थाने में बैठाया पीड़ति परिवार ने मुख्यमंत्री को भेजा पत्र

स्वतंत्र प्रभात

जौनपुर- थाना जफराबाद क्षेत्र के कचगाँव (टेडवा) की निवासी ज्ञान्ती देवी, पूजा देवी और चाँदनी शर्मा सहित कई महिलाओं ने मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश को एक शिकायती पत्र भेजकर गंभीर आरोप लगाए हैं। प्रार्थिनीगण का कहना है कि उनकी पुस्तैनी आबादी पर जबरन कब्जा कराने में थाना अध्यक्ष जफराबाद व सब इंस्पेक्टर संजय कुमार ने विपक्षियों से मिलकर भूमिका निभाई। पीड़ति महिलाओं के अनुसार, उनकी पुस्तैनी भूमि का मामला न्यायालय सिविल जज (जू.डि.) जौनपुर में विचाराधीन है, जिसकी अगली सुनवाई 03 जुलाई 2025 को निर्धारित है। इसके बावजूद दिनांक 26 जून को दोपहर करीब 12 बजे थाना अध्यक्ष व सब इंस्पेक्टर पुलिस बल के साथ उनके घर पहुंचे और गाली-गलौज करते हुए परिवार की महिलाओं व पुरुषों को जबरन थाने उठा ले गए। इसी दौरान विपक्षीगण फकरू, रियाज, मंगल खाँ, मंगल मौर्या सहित अन्य अज्ञात लोग पुलिस की मौजूदगी में मिस्त्रियों की मदद से उनकी पुस्तैनी जमीन पर पांच फीट ऊँची दीवार खड़ी करवा दी।

पीड़तिों ने यह भी आरोप लगाया कि नीम के जिस पेड़ की पूजा माता के रूप में की जाती थी, उसे भी कब्जे में ले लिया गया। साथ ही घर में मौजूद छोटे बच्चों को डराया-धमकाया गया और कहा गया कि अगर किसी ने आवाज उठाई तो जेल भेज दिया जाएगा। जब महिलाएं जमानत कराके घर लौटीं तो देखा कि घर का सामान तोड़ दिया गया है और दीवार खड़ी कर दी गई है। पीड़ति परिवार ने दावा किया कि विपक्षी रातभर लाठी-डंडा लेकर गालियाँ दे रहे हैं और धमकी दे रहे हैं कि अगर किसी ने शिकायत की तो जान से मार देंगे, क्योंकि पुलिस उनके साथ है। पीड़ति महिलाओं ने मुख्यमंत्री से मांग की है कि पुलिस अधीक्षक जौनपुर को उच्च स्तरीय जांच के आदेश दिए जाएं, दोषी पुलिसकर्मियों और विपक्षियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की जाए, अवैध निर्माण को हटवाया जाए और उनके परिवार की जान-माल की सुरक्षा सुनिश्चित की जाए।

स्कूल चलो अभियान से परिषदीय विद्यालयों में बढ़ेगा नामांकन

अलीगढ़। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी राकेश सिंह द्वारा बताया गया है कि परिषदीय विद्यालयों में छात्रों की संख्या बढ़ाए जाने के लिए 1 जुलाई से ÷स्कूल चलो अभियान÷ के दूसरे चरण की शुरुआत की जा रही है, जिसके अंतर्गत व्यापक स्तर पर नामांकन अभियान चलाया जाएगा। विद्यालयों में छात्रों की संख्या बढ़ाए जाने के लिए सभी खण्ड शिक्षा अधिकारियों, प्रधानाध्यापकों एवं शिक्षकगणों को लक्ष्य के अनुरूप नामांकन वृद्धि के लिए निर्देशित किया गया है। बीएसए ने यह भी बताया है कि वर्ष 2024-25 में कुल 2,20,000 बच्चों के सापेक्ष वर्तमान शैक्षिक सत्र 2025-26 में अभी तक 1,94,870 बच्चों का नामांकन हो चुका है, जबकि नामांकन की समय-सीमा 30 सितम्बर तक है। ऐसे में यह स्पष्ट है कि नामांकन प्रक्रिया अभी प्रगति पर है और शेष तीन महीनों में पिछली वर्ष की तुलना में अधिक नामांकन का लक्ष्य पूरा कर लिया जाएगा। उन्होंने बताया कि जिले में लगभग 160 ऐसे विद्यालय हैं जिनमें छात्रों की संख्या 20 से कम है, जिन्हें निकटवर्ती विद्यालयों में समायोजित करने की योजना पर भी कार्य प्रगति पर है, जिससे संसाधनों का समुचित उपयोग होने के साथ विद्यालयों में छात्र संख्या में प्रगति होगी और बच्चों को गुणवत्तापरक शिक्षा मिलेगी।

गोमती घाट निर्माण पर बयानों की राजनीति स्वच्छ गोमती अभियान अध्यक्ष के आरोपों पर उठे सवाल

स्वतंत्र प्रभात

जौनपुर- नगर के उत्तरी छोर पर चल रहे गोमती घाट निर्माण कार्य को लेकर स्वच्छ गोमती अभियान के अध्यक्ष गौतम गुप्ता द्वारा की गई प्रेस वार्ता में उठाए गए आरोपों को लेकर अब कई हलकों में सवाल उठने लगे हैं। जानकारों का मानना है कि बिना किसी तकनीकी प्रमाण और विधिक दस्तावेजों के इस तरह के सार्वजनिक बयान देना न केवल जनमानस को भ्रमित करने वाला है, बल्कि यह विकास कार्यों को बाधित करने की कोशिश भी प्रतीत होती है। प्रेस वार्ता में गौतम गुप्ता ने कहा कि घाट निर्माण N G T के मानकों के विरुद्ध हो रहा है और इसके लिए कोई अनुमति नहीं ली गई। लेकिन स्थानीय प्रशासनिक सूत्रों का कहना है कि निर्माण कार्य नमामि गंगे परियोजना के दिशा-निर्देशों के

अंतर्गत ही हो रहा है, और किसी भी प्रकार की प्रक्रिया का उल्लंघन नहीं किया गया है।

इसके अलावा, पुरातात्विक धरोहर शाही पुल से संबंधित टिप्पणियों को भी कई जानकार अतिशयोक्तिपूर्ण मान रहे हैं। एक वरिष्ठ अधिकारी ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि "शाही पुल को लेकर ASI की अनुमति के बगैर कोई कार्य नहीं हो सकता, ऐसे में इस प्रकार की बातों का आधार स्पष्ट नहीं है।"गौरतलब है कि गौतम गुप्ता पूर्व में भी कई बार ऐसे मुद्दों को लेकर सुर्खियों में आ चुके हैं, जिनमें तथ्यात्मक पुष्टि का अभाव रहा है। ऐसे में सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या यह बयान जनहित में है या किसी निजी या राजनीतिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए दिया गया है?

हालांकि, उन्होंने जिलाधिकारी डॉ. दिनेश चंद्र सिंह, एमएलसी बृजेश सिंह प्रिंशु, और नगर पालिका चेयरमैन प्रतिनिधि डॉ. रामसूरत मौर्य के कार्यों की सराहना अवश्य की, लेकिन जानकारों का मानना है कि यदि प्रशासनिक कार्यों की नीयत व पारदर्शिता पर भरोसा है, तो फिर एकतरफा आरोप लगाने के बजाय प्रमाण सहित जिम्मेदार मंचों पर अपनी बात रखनी चाहिए। अब देखना यह होगा कि आगामी दिनों में स्वच्छ गोमती अभियान द्वारा घोषित ज्ञापन कितना तथ्यात्मक और तर्कसंगत होगा, अथवा यह एक और मीडिया स्टंट बनकर रह जाएगा।

सोनभद्र में सवर्ण आर्मी के जिलाध्यक्ष को मिली धमकी, पुलिस से लगाई गुहार

स्वतंत्र प्रभात

सोनभद्र, उत्तर प्रदेश। चूर्क स्थित पुलिस लाइन में सवर्ण आर्मी के जिलाध्यक्ष पंकज शुक्ला को जान से मारने की धमकी मिलने का मामला सामने आया है। गुरुवार दोपहर को पंकज शुक्ला ने इस संबंध में अपर पुलिस अधीक्षक (एएसपी) अनिल कुमार को एक ज्ञापन सौंपकर त्वरित कार्रवाई की मांग की। इस दौरान सवर्ण आर्मी के प्रदेश अध्यक्ष सूरज प्रसाद चौबे भी उनके साथ मौजूद थे। पंकज शुक्ला ने एएसपी को बताया कि उन्हें और सवर्ण आर्मी के जिला महामंत्री के मोबाइल नंबर पर एक अज्ञात व्यक्ति का फोन आया। फोन करने वाले ने उन्हें चंदन तिवारी हत्याकांड में पैरवी करने को लेकर धमकाया और कहा कि उन्हें दो दिनों के भीतर उठवा लिया जाएगा। एएसपी अनिल कुमार ने सवर्ण आर्मी द्वारा दिए गए प्रार्थना पत्र के आधार पर मामले की जांच कर उचित कार्रवाई का आश्वासन दिया है। इस मौके पर सवर्ण आर्मी

के जिला प्रवक्ता अशोक कुमार दुबे, जिला प्रचारक अविनाश शुक्ला और अन्य कार्यकर्ता भी उपस्थित थे। यह घटना सोनभद्र में चंदन तिवारी हत्याकांड के बाद से चल रहे तनाव को और बढ़ा सकती है। सवर्ण आर्मी इस मामले में लगातार पैरवी कर रही है, और यह धमकी इसी पैरवी का नतीजा मानी जा रही है। पुलिस अब इस मामले की गंभीरता से जांच कर रही है ताकि धमकी देने वालों का पता लगाया जा सके और पंकज शुक्ला व उनके साथियों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

सोनभद्र में सोन चेतना का उदय जन समस्याओं के समाधान का नया बिगुल

स्वतंत्र प्रभात

सोनभद्र ,ओबरा। के चिल्ड्रन पाणर्क में सोन चेतना नामक एक नए संगठन की पहली बैठक सफलतापूर्वक संपन्न हुई। यह संगठन सोनभद्र जनपद के आम नागरिकों की आवाज बनने और उनकी समस्याओं के समाधान के लिए एक मंच प्रदान करने के उद्देश्य से बनाया गया है। बैठक में जनपद की गंभीर और दीर्घकालिक समस्याओं जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, बिजली, पानी, भ्रष्टाचार और सरकारी उपेक्षा पर गहन विचार-विमर्श किया गया। बैठक में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि सोन चेतना अब सोनभद्र के आम नागरिकों की आवाज को हर संभव मंच पर उठाएगा। संगठन का मुख्य उद्देश्य सरकारी तंत्र में पारदर्शिता लाना, स्थानीय समस्याओं का स्थायी समाधान खोजना और युवाओं व नागरिकों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना है। संगठन के अध्यक्ष अभिषेक अग्रहरी ने बैठक की अध्यक्षता करते हुए स्पष्ट किया, यह संगठन न किसी राजनीतिक दल का समर्थन करता है और न ही किसी का विरोध। हमारा एकमात्र लक्ष्य जनहित, जनचेतना और जनसशक्तिकरण है। यह बयान संगठन की निष्पक्षता और जन-केंद्रित दृष्टिकोण को दर्शाता है।

इस महत्वपूर्ण बैठक में अभिषेक अग्रहरी, गोपाल सिंह, दीपक कुमार गुप्ता, साहिल कुमार, हैप्पी अग्रवाल, अमित शुक्ला, दीपक यादव, सिद्धांत, सत्य प्रकाश, आशीष सोनकर, अजय कुमार, अर्पित और पवन पटेल सहित कई कार्यकर्ता उपस्थित रहे। सभी ने एकमत होकर संगठन के उद्देश्यों का समर्थन किया और भविष्य में सक्रिय भागीदारी निभाने का संकल्प लिया। यह उत्साह संगठन के शुरुआती दिनों में ही उसकी मज़बूत नींव का संकेत देता है। बैठक में निम्नलिखित मुख्य बिंदुओं पर विशेष जोर दिया गया। जनपद में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की खस्ताहालत को सुधारने के लिए प्रभावी कदम उठाने पर जोर दिया गया। पारदर्शिता लाने और भ्रष्टाचार को जड़ से खत्म करने के लिए व्यापक अभियान चलाने का संकल्प लिया गया। युवाओं को सकारात्मक गतिविधियों में शामिल करने और उनकी प्रतिभा को निखारने के लिए मंच प्रदान करने की योजना बनाई गई।समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के उद्देश्य से इन महत्वपूर्ण अभियानों को सक्रिय रूप से बढ़ावा देने का निर्णय लिया गया। संगठन ने अपने समापन वक्तव्य में यह स्पष्ट कर दिया कि अब चुप्पी नहीं, जवाबदेही का समय है। यह नारा सीधे तौर पर सरकारी तंत्र और संबंधित अधिकारियों को एक संदेश है कि अब उन्हें जनता के प्रति जवाबदेह होना पड़ेगा। सोन चेतना संगठन ने यह भी घोषणा की कि आने वाले समय में वे हर गांव और हर गली तक पहुंचेंगे, ताकि जन समस्याओं के समाधान की इस लड़ाई को एक व्यापक जन-आंदोलन में बदला जा सके। यह देखना दिलचस्प होगा कि सोन चेतना सोनभद्र में किस प्रकार बदलाव लाता है और क्या यह वास्तव में जनपद के लोगों की आशाओं पर खरा उतर पाता है।

संचारी रोग नियंत्रण अभियान कार्यक्रम को लेकर बैठक

सिद्धार्थनगर। ब्लॉक सभागार बर्डपुर में शुक्रवार को संचारी रोग नियंत्रण अभियान कार्यक्रम को लेकर बैठक आयोजित हुई जिसमें अभियान की सफलता को लेकर रणनीति तय की गई। संचारी रोग नियंत्रण अभियान दस्तक अभियान शासन के निर्देश अनुसार 1 जुलाई से संचारी रोग नियंत्रण अभियान रोस्टर के मुताबिक संचालित होगा जिसमें सभी की सहभागिता जरूरी है। बैठक में ग्राम प्रधान शिव सागर यादव,सहायक विकास अधिकारी कृषि अजीत वर्मा, सचिव मनोहर लाल बरनवाल आदि उपस्थित रहे।

बोलेरो और बाइक की आमने-सामने टक्कर, पति-पत्नी और बच्ची गंभीर रूप से घायल जिला अस्पताल रेफर

स्वतंत्र प्रभात

जौनपुर- मड़ियाहूं थाना क्षेत्र के दादरा बाईपास के पास गुरुवार को एक दर्दनाक सड़क हादसा हो गया, जिसमें बोलेरो और बाइक की आमने-सामने टक्कर में तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसे में घायल दंपती और उनकी मासूम बेटी को ग्रामीणों की मदद से इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मड़ियाहूं लाया गया, जहां से डॉक्टरों ने तीनों को जिला अस्पताल रेफर कर दिया। मिली जानकारी के अनुसार, बडेरी नदियांव निवासी किशन (30 वर्ष) अपनी पत्नी अंजू (28 वर्ष) और तीन वर्षीय बेटी दिया के साथ मड़ियाहूं से दवा लेकर बाइक से अपने घर लौट रहे थे। तभी बेलवा बाजार की ओर से तेज रफ्तार में आ रही बोलेरो (UP 62 C S 0335) ने दादरा बाईपास के पास बाइक में जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि तीनों सवार सड़क पर गिरकर तड़पने लगे।

हादसे की आवाज सुनकर मौके पर पहुंचे स्थानीय ग्रामीणों ने तत्परता दिखाते हुए घायलों को एम्बुलेंस से अस्पताल भिजवाया। सूचना मिलने पर मड़ियाहूं पुलिस भी मौके पर पहुंची और बोलेरो वाहन व उसके चालक को कब्जे में लेकर थाने भेज दिया। डॉक्टरों के अनुसार घायलों की हालत चिंताजनक बनी हुई है और उन्हें बेहतर इलाज हेतु जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया है। वहीं हादसे की खबर सुनते ही मौके पर पहुंचे परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है।

सोनभद्र रावर्ट्सगंज की बदहाली वाराणसी-शक्तिनगर मुख्य मार्ग बना तालाब, नगर पालिका की लापरवाही उजागर

स्वतंत्र प्रभात

सोनभद्र, उत्तर प्रदेश। मानसून की पहली जोरदार बारिश ने सोनभद्र नगर पालिका के ड्रेनेज सिस्टम की पोल खोल दी है। गुरुवार को हुई मूसलाधार बारिश के बाद रावर्ट्सगंज में वाराणसी-शक्तिनगर मुख्य मार्ग पूरी तरह से तालाब में बदल गया, जिससे आम जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ। सड़क पर घुटनों तक पानी भर जाने का एक वीडियो तेजी से सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, जिसमें बच्चे इस जलभराव में खेलते हुए दिखाई दे रहे हैं। यह दृश्य शहर में जल निकासी की बदहाली और नगर पालिका की लापरवाही को साफ तौर पर उजागर करता है। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, बारिश शुरू होते ही मुख्य सड़क पर पानी जमा होना शुरू हो गया। देखते ही देखते जलस्तर इतना बढ़ गया कि सड़क और नालियों के बीच का अंतर मिट गया। सड़कों पर पानी भर जाने से वाहनों को निकलने में भारी मशक्कत करनी पड़ी, जिससे यातायात बुरी तरह बाधित हुआ। कई छोटे वाहन पानी में फंस गए, जिन्हें धक्का लगाकर निकालना पड़ा। इस स्थिति से स्थानीय लोगों को आवागमन में खासी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। स्थानीय निवासियों का कहना है कि यह समस्या कोई नई नहीं है। हर साल

बारिश के मौसम में सोनभद्र नगर पालिका क्षेत्र की सड़कें जलमग्न हो जाती हैं। उनका आरोप है कि नगर पालिका द्वारा नालियों की नियमित सफाई न होने और जल निकासी की उचित व्यवस्था न होने के कारण ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है। निवासियों ने इस समस्या को लेकर कई बार शिकायतें की हैं, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई। उनकी शिकायतों को लगातार नजरअंदाज किया जाता रहा है, जिसका खामियाजा अब शहर की जनता को भुगतना पड़ रहा है। सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा बच्चों का पानी में खेलते हुए वीडियो एक तरफ जहां उनकी मासूमियत को दर्शाता है, वहीं दूसरी तरफ यह नगर पालिका की घोर उदासीनता और निष्क्रियता पर गंभीर सवाल खड़े करता है। यह केवल आवागमन की समस्या नहीं है, बल्कि जलभराव के कारण मच्छरों के पनपने और जलजनित बीमारियों के फैलने का खतरा भी कई गुना बढ़ जाता है, जिससे स्वास्थ्य संबंधी नई चुनौतियां खड़ी हो सकती हैं। इस घटना ने सोनभद्र नगर पालिका की मानसून से निपटने की तैयारियों पर बड़े प्रश्नचिह्न लगा दिए हैं। अब देखना होगा कि इस वायरल वीडियो और जनता के बढ़ते आक्रोश के बाद नगर पालिका प्रशासन जल निकासी की इस गंभीर समस्या से निपटने के लिए क्या ठोस और प्रभावी कदम उठाता है। क्या इस बार शिकायतों को गंभीरता से लिया जाएगा और स्थायी समाधान निकाला जाएगा।

ग्राम प्रधानों ने ग्राम पंचायत अधिकारी पर कमीशन मांगने का लगाया आरोप

स्वतंत्र प्रभात

सिद्धार्थनगर। जिले के उसका बाजार ब्लाक के ग्राम पंचायत उटिया, लक्षनपुर, सुगहाँ के ग्राम प्रधानों ने ग्राम पंचायत अधिकारी अनिल निगम पर कमीशन की माँग करने का आरोप लगाया हैऔर कमीशन न देने पर कार्य में अवरोध उत्पन्न करते हैं। ग्राम प्रधानों ने जिलाधिकारी को दिए गए पत्र में कहा है कि आवास में पात्र लोगों को अपात्र करते है अपात्र लोगों को पात्र करते है और जन्म, मृत्यु प्रमाण-पत्र समय से नही जारी करते है और परिवार रजिस्टर भाग-1 को समय से नहीं जारी करते है। जिसकी शिकायत जिला पंचायत राज अधिकारी से कई बार किया जा चुका है। परन्तु कोई कार्यवाही नहीं किया गया। उक्त अधिकारी फोन से कमीशन की मांग का आडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। हालांकि स्वतंत्र प्रभात अखबार वायरल ऑडियो की सत्यता की पुष्टि नहीं करता है। ग्राम प्रधानों ने जिलाधिकारी से जांच कराकर कार्रवाई की मांग की है।

संक्षिप्त खबरें

उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मोर्या कानपुर आये, पुलिस आयुक्त ने किया स्वागत

कानपुर। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मोर्या को आज, उत्तर प्रदेश के कानपुर शहर आगमन पर कमिश्नरेट कानपुर नगर पुलिस द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर (सलामी) दी गई। कमिश्नरेट कानपुर नगर द्वारा प्रोटोकॉल के अनुसार पूर्ण सम्मान के साथ स्वागत कार्यक्रम संपन्न कराया गया। पुलिस आयुक्त अखिल कुमार द्वारा उप मुख्यमंत्री का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया गया। आगमन के अवसर पर पुलिस विभाग द्वारा सुरक्षा व्यवस्था के व्यापक प्रबंध किए गए थे। कार्यक्रम स्थल, रूट और अन्य स्थलों पर पुलिस बल की पर्याप्त तैनाती की गई थी।

घाटमपुर में रेलवे कर्मचारी को गोली मारने वाले चारों अभियुक्त हुए गिरफ्तार

रेलवे स्टेशन के बाहर विवाद होने पर गोली मारकर भागे थे

कानपुर। कल घाटमपुर रेलवे स्टेशन के बाहर एक रेलवे कर्मचारी के गोली मारकर गंभीर रूप से घायल कर देने वाले सभी चारों अभियुक्तों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। इसकी जानकारी देते हुए पुलिस उपायुक्त दक्षिण दीपेंद्र नाथ चौधरी ने बताया कि दिनांक 25/6 को रात्रि 11 बजे एक लड़का कृष्णा शर्मा जो कि रेलवे में संविदा कर्मचारी

है और टिकट काउंटर पर टिकट बेचने का कार्य करता है। वहीं स्टेशन के बाहर उनके पिता जी की छोटी सी चाय और सिगरेट की दुकान है। वो लड़का वहीं बैठा था तभी चार लड़के उसके पास आये और सिगरेट और पान की डिमांड करने लगे। कृष्ण शर्मा ने कहा कि अभी हमारी दुकान बंद है। तो उन लड़कों ने विवाद किया और उसके साथ मारपीट की। मारपीट करने के बाद वह लड़के भागे तो कृष्णा शर्मा ने पीछा कि तो उनमें से प्रशांत सिंह राणा ने कृष्णा पर गोली चला दी जो कि उसकी गर्दन में लगी। कृष्णा को तुरंत हैलेट में भर्ती कराया गया जहां से गंभीर हालत में उसे रीजेंसी भेजा गया जहां उसका आप्रेशन हो रहा है। घटना के बाद थाना घाटमपुर में 307 आईपीसी के तहत मुकदमा दर्ज किया गया और गिरफ्तारी के लिए टीमें गठित की गई। पुलिस ने कई सीसीटीवी कैमरों से लोकेशन प्राप्त कर उन चारों प्रशांत सिंह राणा, बलराम सिंह, विपिन सिंह गौतम व एक बाल अपचारी को गिरफ्तार कर लिया है।

मोहर्रम और जगन्नाथ रथयात्रा को लेकर हुई आवश्यक बैठक

कानपुर। आज दिनांक 27.06.2025 को पुलिस उपायुक्त दक्षिण दीपेंद्र नाथ चौधरी की अध्यक्षता में आगामी त्यौहार मोहर्रम एवं जगन्नाथ रथ यात्रा को शांतिपूर्ण सम्पन्न कराये जाने हेतु थाना जूही में पीस कमेटी की मीटिंग की गई। मीटिंग में क्षेत्र के गणमान्य नागरिक, समाजसेवी, विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधि साथ ही ताजिया रखने वाले, जुलूसों के आयोजकों ने प्रतिभाग किया। गोष्ठी में मोहर्रम के सभी जुलूसों को शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराने के सम्बन्ध में वार्ता करते हुए जुलूस आयोजको से बेहतर समन्वय स्थापित करने की अपील की गई। जगन्नाथ रथ यात्रा को सकुशल संपन्न कराने हेतु सभी बिंदुओं पर वार्ता की गई एवं आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। उन्होंने कहा कि जगन्नाथ रथयात्रा और मोहर्रम के जुलूस शांतिपूर्ण ढंग से निकाले जाएं और अराजकतत्वों पर विशेष नजर रखी जाए। पुलिस कर्मियों से त्योहारों में अराजकता फैलाने वाले असमाजिक तत्वों की पहचान करते हुए आवश्यक कार्यवाही करने / कराने हेतु सर्व संबंधित को आवश्यक दिशा निर्देश दिए गये। मीटिंग में एसएचओ जूही व सम्बंधित पुलिस अधिकारी/कर्मचारी मौजूद रहे।

जगन्नाथ रथयात्रा के दौरान लाउडस्पीकर को लेकर कानपुर में हंगामा- धरने पर बैठे समर्थक

●सपा विधायक अमिताभ बाजपेई ने किया रथयात्रा के महंतों का समर्थन

स्वतंत्र प्रभात

कानपुर - आज यहां शुक्रवार को जगन्नाथ रथयात्रा के दौरान लाउडस्पीकर लगाने को लेकर हंगामा हो गया। इस बीच पुलिस और पनकी हनुमान मंदिर के महंत के बीच जमकर विवाद भी हुआ। जिसके बाद सैकड़ों समर्थक बादशाहीनाका के इंस्पेक्टर को सस्पेंड करने की मांग को लेकर नयागंज पीपल वाली कोठी पर धरने पर बैठ गए, जिसमें समाजवादी पार्टी के विधायक अमिताभ बाजपेई भी शामिल हुए। रथ यात्रा के दौरान माहौल तब गरमा गया जब लाउडस्पीकर लगाने की बात आई ,जिस पर पुलिस प्रशासन का कहना था कि रथयात्रा में लाउडस्पीकर पर प्रतिबंध है। इसके बाद समर्थकों ने पुलिस मुर्दाबाद के नारे लगाए। सूचना मिलने पर पुलिस के अधिकारी मौके पर समर्थकों को समझाने पहुंचे। यहां सपा विधायक अमिताभ बाजपेयी भी समर्थकों के साथ पहुंचे हैं।

जानकारी के मुताबिक रथयात्रा निकलने से पहले पुलिस अधिकारी मंदिर के महंत जितेंद्र दास और कृष्ण दास के पास पहुंचे और बैंड में दो स्पीकर लगाने को कहा। जिसका उन्होंने विरोध किया। महंत का आरोप है कि इस दौरान पुलिसकर्मियों ने बदसलूकी की। इस बीच वहां पर के कानपुर बुंदेलखंड क्षेत्रीय संयोजक विनोद गुप्ता भी पहुंचे। उन्होंने कहा- हम क्या पाकिस्तान में रथ यात्रा निकलेगी। मंदिर से जुड़े 40 मंडल है, जो 210 सालों से यात्रा निकाल रहे हैं, सभी पुलिस के कृत्य के विरोध में हैं। अगर जल्द नाका इंस्पेक्टर को सस्पेंड नहीं किया गया, तो बाजार बंद किया जाएगा। अवगत कराते चलें कि 215 साल पुराने इतिहास वाली यहां की जगन्नाथ रथयात्रा दोपहर ढाई बजे जनरलगंज स्थित जगन्नाथ गली से यात्रा निकली गई। इस तरह से दो दिन चलने वाली यात्रा आज 28 जून को काहूकोठी, नयागंज चौराहा, हूलागंज, भूसाटोली, नागेश्वर मंदिर, नयागंज चौराहा, मनीराम बगिया, मेस्टन रोड, चौक सर्राफा, कोतवाली चौराहा, शिवाला, संगम लाल मंदिर, कमला टावर, लाठी मोहाल होकर जनरलगंज स्थित जगन्नाथ मंदिर पर खत्म होगी।

चकेरी पुलिस ने जिला बदर शातिर लुटेरे को किया गिरफ्तार

●अभियुक्त के खिलाफ चकेरी थाने में दर्ज हैं सात मुकदमे

स्वतंत्र प्रभात

कानपुर। चकेरी थाना पुलिस ने चैन लूट के एक अभियुक्त को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की है अभियुक्त के कब्जे से लूटी हुई सोने की चैन, एक मोबाइल व कुछ नकद राशि बरामद किए हैं। सहायक पुलिस आयुक्त चकेरी अभिषेक कुमार पाण्डेय ने बताया कि पिछले दिनों थाना चकेरी क्षेत्र के अन्तर्गत दिनांक 12 जून को हरिहर धाम मन्दिर के पास डी ब्लाक मे दो अज्ञात स्कूटी सवार अपराधियों द्वारा वृद्ध महिला मालती शिरोमणि के साथ गले से सोने की चैन छीनने की घटना को दिन दहाड़े अंजाम दिया गया था जिसके सम्बन्ध मे लगातार त्रिनेत्र सीसीटीवी कैमरों की लगातार निगरानी करते हुए घटना को अंजाम देने वाले अपराधियों का पता लगाया गया। जिसमे दो अपराधी सलमान पुत्र अख्तर अली निवासी बाबूपुरवा कानपुर नगर व गौरव निषाद उर्फ अनुराग पुत्र उमाचन्द्र निषाद निवासी सफीपुर थाना चकेरी कानपुर नगर का नाम प्रकाश मे आया था अपराधियों की गिरफ्तारी व बरामदगी के सतत प्रयास करते हुए दिनांक 26/ 27-06-2025 की रात मे चैकिंग के दौरान निहुरा रोड पर जिला बदर अपराधी गौरव निषाद उर्फ अनुराग पुत्र उमा चन्द्र निषाद निवासी सफीपुर थाना चकेरी कानपुर नगर को मय लूटी हुई सोने की चैन व अन्य मुकदमा से सम्बन्धित एक अदद चोरी का मोबाइल ओप्पो तथा 4000 /- रु0 नगद बरामद करते हुए गिरफ्तार किया गया। सहायक पुलिस आयुक्त ने बताया कि गिरफ्तार अभियुक्त जिला बदर अपराधी है जो लगातार शर्तों का उल्लघंन करते हुए अपराध को अंजाम दे रहा था। अभियुक्त सलमान पुत्र अख्तर अली के गिरफ्तारी का प्रयास जारी है। जिसे शीघ्र गिरफ्तार किया जायेगा। अभियुक्त के विरुद्ध थाना चकेरी में सात अभियोग पंजीकृत हैं।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में आयोजित हुई सेवारत/भूतपूर्व सैनिकों एवं उनके आश्रितों की समस्याओं के निस्तारण हेतु बैठक

●प्राप्त समस्याओं का प्राथमिकता के आधार पर गुणवत्तापूर्ण निस्तारण हेतु दिए आवश्यक दिशा निर्देश

स्वतंत्र प्रभात

अमेठी। जिलाधिकारी संजय चौहान की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में जनपद अमेठी के सेवारत/भूतपूर्व सैनिकों एवं उनके आश्रितों की समस्याओं के गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित कराए जाने हेतु बैठक आयोजित हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने सेवारत/भूतपूर्व सैनिकों, उनके आश्रितों के भूमि विवाद, पुलिस सुरक्षा, पेंशन, शिक्षा, चिकित्सा, आर्थिक अनुदान व अन्य प्रकार की शिकायतों को सुना एवं प्राथमिकता के आधार पर गुणवत्तापूर्ण निस्तारण हेतु संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया। बैठक में विंग कमांडर अखिलेश पांडे द्वारा भूतपूर्व सैनिकों के कल्याण के लिए जिला प्रशासन द्वारा किए जा रहे प्रयासों पर प्रकाश डाला गया। बैठक में भूतपूर्व सैनिकों द्वारा विभिन्न समस्याओं जैसे कैंटीन की सुविधा, स्वास्थ्य सेवा हेतु उचित चिकित्सा व्यवस्था, नए शस्त्र लाइसेंस देने तथा शस्त्र नवीनीकरण जैसे प्रकरण जिलाधिकारी के सम्मुख रखा गया जिसको उन्होंने सुना और उनके लिए उचित समाधान का आश्वासन दिया। उन्होंने संबंधित विभागों को निर्देश दिया कि वे भूतपूर्व सैनिकों की समस्याओं के समाधान के लिए तत्काल कदम उठाएं। बैठक के दौरान जिलाधिकारी ने भूतपूर्व सैनिकों को जिला प्रशासन के साथ मिलकर काम करने और अपने समुदाय में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए भी प्रोत्साहित किया। बैठक में जिलाधिकारी ने भूतपूर्व सैनिकों को मिलने वाली स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने, रोजगार और कौशल विकास के अवसरों को बढ़ाने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए। जिलाधिकारी ने कहा कि जिला प्रशासन भूतपूर्व सैनिकों के लिए प्रतिबद्धत है और उन्हें हर संभव सहायता प्रदान करने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएंगे। बैठक के दौरान अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व अर्पित गुप्ता, अपर पुलिस अधीक्षक शैलेंद्र कुमार सिंह, अतिरिक्त मजिस्ट्रेट मो असलम सहित अन्य संबंधित मौजूद रहे।

जुआ खेलते 19 अभियुक्त गिरफ्तार,5.69 लाख नकद आभूषण मोबाइल वाहन बरामद

स्वतंत्र प्रभात

प्रतापगढ़। नगर कोतवाली क्षेत्र में कई सालों से पेशेवर जुआरियों का जमावड़ा लगता रहा है और रोज लाखों के जुआ का खेल लंबे समय से चल रहा है। प्रभारी निरीक्षक नीरज यादव के नेतृत्व निरीक्षक प्रभात कुमार सिंह,एसआई पुष्पराज सिंह,सतीश यादव आदि ने सरोज चौराहा कांशीराम कालोनी के पीछे बने एक मकान से दबिश देकर 19 जुआरियों अकबर अमीर खाना पुत्र ए जेड खान निवासी जैतपुर हनुमानगंज थाना सराय इनायत प्रयागराज,ज्ञानेंद्र बहादुर पुत्र स्व हीरा लाल निवासी उदयपुर थाना फूलपुर प्रयागराज,अतुल सिंह पुत्र हरिवंश सिंह निवासी कटरा रोड करनपुर नगर कोतवाली प्रतापगढ़, पुनीत कुमार ओझा पुत्र कल्पनारायण ओझा निवासी शिवजीपुरम कटरा रोड कोतवाली नगर प्रतापगढ़, अरविंद कुमार सिंह ऊर्फ केतन सिंह पुत्र अनिल कुमार सिंह करनपुर कटरा रोड, मान बहादुर उर्फ मुन्ना पुत्र छत्रपाल सिंह निवासी गोहांड थाना जरिया हमीरपुर, बिमल तिवारी पुत्र सुधीर तिवारी निवासी चकेढी थाना संग्रामगढ़ प्रतापगढ़,संदीप सोनी उर्फ सनी पुत्र चंद्रिका प्रसाद सोनी निवासी टक्करगंज कोतवाली नगर, सोनू सिंह पुत्र मुरारी लाल सिंह मुबारकपुर थाना बहरिया प्रयागराज,मनीष शर्मा उर्फ मोनू पुत्र अरुण शर्मा निवासी शिवजीपुरम कोतवाली नगर प्रतापगढ़, अतुल सिंह पुत्र संजय सिंह निवासी सिविल लाइन कटरा रोड कोतवाली नगर प्रतापगढ़,अभिषेक सिंह पुत्र धर्मेन्द्र सिंह विवेक नगर कोतवाली नगर प्रतापगढ़, राम चन्द्र सोनी पुत्र स्व शंकर लाल सोनी साइजिंग गली कपड़े वाली मिल फाफामऊ बाजार थाना फाफामऊ प्रयागराज,नागेन्द्र कुमार पुत्र सुखदेव कुमार बोमापुर मऊ आइमा थाना मऊ आइमा प्रयागराज,सत्यम सिंह ऊर्फ गांधी पुत्र कृष्ण भान सिंह सरोज चौराहा कोतवाली नगर प्रतापगढ़,सुधीर त्रिपाठी पुत्र उदित नारायण निवासी मलाक सिंघ हरहर कंधई का पुरवा थाना फाफामऊ प्रयागराज,पारस नाथ पुत्र गुद्दर सरोज निवासी बरई का पुरवा सराय इनायत प्रयागराज,साहब सिंह पुत्र राम भवन सिंह निवासी मोहनगंज पूरे खुशई कोतवाली देहात प्रतापगढ़, रोहित पटेल पुत्र उमापति पटेल निवासी पृथ्वीगंज जौहर कोतवाली देहात प्रतापगढ़ को हिरासत मे लिया गया।इनके कब्जे से नगद 5 लाख 69 हजार 104 रुपए,तीन अंगूठी,एक चेन,एक लाकेट,एक कड़ा सभी सोने का,छः अंगूठी चांदी,दो चेन चांदी,19 एंड्रॉयड मोबाइल,सात वाहन की चाबी,तास की चार गड्डी, दो कार दो बाईक बरामद किया गया है।

कमरौली पुलिस द्वारा 01 अदद तमंचा व 01 अदद जिन्दा कारतूस 315 बोर के साथ 01 अभियुक्त गिरफ्तार

कमरौली अमेठी। पुलिस अधीक्षक अमेठी अपर्णा रजत कौशिक के निर्देशन में एवं अपर पुलिस अधीक्षक अमेठी शैलेन्द्र कुमार सिंह के पर्यवेक्षण में जनपद अमेठी में अपराध एवं अपराधियों के धर पकड़ हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में क्षेत्राधिकारी मुसाफिरखाना अतुल कुमार सिंह के कुशल नेतृत्व में थाना कमरौली पुलिस द्वारा तलाश वांछित देखभाल क्षेत्र व चेकिंग संदिग्ध व्यक्ति, वस्तु, वाहन के दौरान मुखबिर की सूचना पर अभियुक्त मो0 आकिब पुत्र गुड्डू निवासी ग्राम पालपुर कस्बा जगदीशपुर थाना जगदीशपुर जनपद अमेठी उम्र करीब 22 वर्ष को गिरफ्तार किया गया । तलाशी से अभियुक्त के कब्जे से 01 अदद तमंचा व 01 अदद जिन्दा कारतूस 315 बोर बरामद हुआ । गिरफ्तारी व बरामदगी के संबन्ध में थाना कमरौली पुलिस द्वारा विधिक कार्यवाही की गई।

10 दिन से धरना पर बैठने के बावजूद पुलिस ने विरोधी पर कोई कार्रवाई नहीं की

स्वतंत्र प्रभात

प्रतापगढ़। पारिवारिक विवाद में बीते 12 जून को करनपुर चुंगी कटरा रोड निवासी रिंकू गुप्ता सुत स्व. छेदी लाल गुप्ता के पड़ोसी विष्णु गुप्ता, सतीश कुमार गुप्ता निवासी महुली मंडी, खुशबू पत्नी विष्णु गुप्ता व सतीश की पत्नी एवं पूनम देवी निवासी प्रतापगढ़ सिटी ने योजना बनाकर 04 बजे दिन दहाड़े घर पर चढ़ाई कर मारना पीटना चालू कर दिए। रिंकू ने हल्ला गुहार मचाते हुए भागकर किसी तरह अपना बचाव किया। लेकिन रिंकू के भाग जाने के पश्चात सभी विरोधी पक्ष घर में घुसकर रिंकू की पत्नी को लाठी डंडा से मारा पीटा जिससे उसको गंभीर चोटें आई है। पड़ोसियों के बीच बचाव के बाद 100 नंबर पर फोन करने पर पुलिस आई और तभी उन लोगों की जान बच पाई। रिंकू गुप्ता ने थाना कोतवाली प्रतापगढ़ में घटना की सूचना देकर प्राथमिकी दर्ज करने का अनुरोध किया। लेकिन अभी तक रिंकू के पत्नी की पिटाई का एफआईआर दर्ज नहीं किया गया है। एफआईआर दर्ज कराने के लगभग एक सप्ताह तक रिंकू गुप्ता ने नगर कोतवाली थाना का चक्कर लगाया। इतना ही नहीं एफआईआर के बाबत रिंकू ने पुलिस अधिकारियों के कार्यालय का चक्कर लगाया लेकिन एफआईआर दर्ज नहीं हो पाया। रिंकू गुप्ता का कहना है कि पुलिस द्वारा विरोधियों के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं करने की दशा में विरोधियों के हौसले बुलन्द हैं और परिवारी जनों को अब भी परेशान किया जा रहा है। पुलिस का सहयोग नहीं मिलने की स्थिति में थक हारकर रिंकू गुप्ता ने जिला मुख्यालय पर 19 जून से अनिश्चितकालीन धरना बैठा हुआ है। रिंकू गुप्ता का कहना है कि घटना को 15 दिन से अधिक समय गुजर जाने के बावजूद कोई भी अधिकारी उसकी हाल चाल लेने की जरूरत नहीं समझा है। जिसके कारण रिंकू गुप्ता का परिवार डर भय के माहौल में किसी तरह जी रहा है।

जनपद के समस्त कार्यालयों में पूर्ण रूप से ई-ऑफिस प्रणाली लागू

प्रतापगढ़। मुख्य विकास अधिकारी डा0 दिव्या मिश्रा के निर्देशन में जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी प्रिंयका सोनी (ईएमडी मैनेजर ई-आफिस) की टीम एवं एनआईसी प्रतापगढ़ द्वारा संयुक्त रूप से समस्त विकास विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारियों को पत्रावली चलाने हेतु विकास भवन सभागार में ई-आफिस प्रणाली की लाइव ट्रेनिंग दी गयी। ई-आफिस प्रशिक्षण कार्यक्रम में जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी द्वारा बताया गया कि ई-ऑफिस प्रणाली लागू होने से पत्रावलियों के व्यवहरण क्षमता बढ़ने के साथ ही साथ पारदर्शिता भी बढ़ेगी।अब अधिकारी यह देख सकेंगे कि पत्रावलियां किस स्तर पर कितने समय से लम्बित है, जिससे कार्य चालन क्षमता में सुधार आयेगा। साथ ही जिन कार्यालयों के कार्मिक अभी तक ई-ऑफिस प्रणाली से नहीं जुड़े है, उन्हें अर्थ एवं संख्याधिकारी कार्यालय से सम्पर्क करते हुए ई-आफिस पर गो-लाइव होने हेतु निर्देशित किया गया।

व्यापारी कल्याण दिवस पर कर विभाग करेगा सम्मानित

कानपुर। उत्तर प्रदेश सरकार ने दानवीर भामाशाह के जन्म दिवस 28 जून को "व्यापारी कल्याण दिवस" के रूप में मनाने का निर्णय लिया है। इस अवसर पर पूरे प्रदेश में राज्य कर विभाग द्वारा जिला प्रशासन के सहयोग से विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा, जिनका उद्देश्य व्यापारियों के योगदान का सम्मान करना एवं व्यापारी वर्ग के साथ समरसता को बढ़ावा देना है। जनपद कानपुर नगर में व्यापारी कल्याण दिवस के मुख्य कार्यक्रम का आयोजन 28 जून 2025 को अपराह्न 3:30 बजे, IIA भवन, सीएफ-2, उद्योग कुंज, पनकी साइट-5, कानपुर में किया जाएगा। इस आयोजन में जनपद के सम्मानित करदाताओं को सम्मानित किया जाएगा। कार्यक्रम में व्यापारियों, व्यापार संगठनों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों की सहभागिता अपेक्षित है। उपायुक्त (प्रशासन), राज्य कर, कानपुर नगर ने समस्त व्यापारियों से अपील की है कि वे अपने-अपने व्यापारिक प्रतिष्ठानों पर व्यापारी कल्याण दिवस को उत्साहपूर्वक मनाएं तथा अधिक से अधिक संख्या में आयोजन में भाग लें। साथ ही उन्होंने यह भी अनुरोध किया है कि वे अपने व्यापारिक संगठनों एवं साथियों को भी इस अवसर पर सहभागी बनने के लिए प्रेरित करें।

दिव्यांगजन दुकान निर्माण संचालन ऋण योजना का उठाये लाभ, करें आवेदन

स्वतंत्र प्रभात

प्रतापगढ़। जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी आशीष द्विवेदी ने जनपद के दिव्यांगजनों को सूचित किया जाता है कि कार्यालय जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी प्रतापगढ़ में दुकान निर्माण संचालन ऋण योजनान्तर्गत आवेदन पत्र स्वीकार किये जा रहे है। इस योजनान्तर्गत आवेदक को दुकान निर्माण संचालन हेतु रूपये 10000 का ऋण दिया जाता है, जिसमें रूपये 7500 पर 04 प्रतिशत साधारण वार्षिक ब्याज एवं रूपये 2500 अनुदान स्वरूप दिया जाता है। ऋण की पात्रता के सम्बन्ध में बताया है कि आवेदक जनपद का निवासी हो, आवेदक की दिव्यांगता 40 प्रतिशत से कम न हो, आवेदक उ0प्र0 का स्थाई निवासी या कम से कम पांच वर्ष से उसका अधिवासी हो।आवेदक किसी अपराधिक मामले में दण्डित न किया गया हो एवं उसके द्वारा पूर्व में कोई ऋण बकाया न हो, आवेदक की आयु 18 वर्ष से कम तथा 60 वर्ष से अधिक न हो। आवेदक आयकर दाता की श्रेणी में न आता हो। आवेदक का राष्ट्रीयकृत बैंको में संचालित बैंक खाता सम्बन्धी बैंक पासबुक, नवीनतम दिव्यांगता दर्शाती हुई फोटोग्राफ होना आवश्यक है। उन्होने बताया है कि इच्छुक पात्रता रखने वाले दिव्यांगजन विभागीय पोर्टल https//divyangjandukan.up.gov.in पर उपलब्ध विकल्प में जाकर निर्धारित प्रारूप पर आनलाइन आवेदन कर सकते है।

एक वृक्ष सौ पुत्र समान वृक्षारोपण कार्य महान - पीके तिवारी

●बरगद, पीपल, नीम, पकड़िया, आम सहित कम से कम पांच वृक्ष अवश्य लगाएं

स्वतंत्र प्रभात

कमरौली अमेठी। कृष्णा जन कल्याण सेवा संस्थान रजि के प्रबंधक ग्राम पंचायत भटमऊ शुकुलबाजार अमेठी निवासी समाजसेवी पी के तिवारी प्रत्येक वर्ष सार्वजनिक स्थलों पर पांच सौ से अधिक वृक्षारोपण करते हैं उसी क्रम मे इस वर्ष भी उन्होने विश्व पर्यावरण दिवस से वृक्षारोपण कार्य शुरू कर दिया है उसी क्रम मे औद्योगिक क्षेत्र कमरौली पहुंचकर संस्था का हमेशा मार्गदर्शन उत्साहवर्धन एवं सहयोग करने वाले श्री इंटरप्राइजेज के मैनेजर विनय मिश्रा से मुलाकात कर सामाजिक विषयों पर चर्चा की एवं कार्यालय परिसर मे उनके साथ वृक्षारोपण किया और कहा कि वह क्षेत्र मे पहुंचकर लोगों से अधिक से अधिक वृक्षारोपण करने की अपील करेंगे जिससे पर्यावरण संरक्षण किया जा सके, उन्होंने कहा एक वृक्ष 100 पुत्र समान वृक्षारोपण कार्य महान। लोगों को प्रेरित करते हुए कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम पांच वृक्ष अवश्य लगाने चाहिए जिसमें पीपल, बरगद, पकड़िया, नीम और आम जैसे वृक्षों को प्रमुखता के आधार पर लगाए। वृक्ष हमें ऑक्सीजन देते हैं, फल देते हैं तथा पर्यावरण का संरक्षण करते हैं, वृक्ष हमें ऑक्सीजन देते हैं जीवन दाइनी हवा प्रदान करते हैं, फल प्रदान करते हैं और उनकी लकडियों से भवन निर्माण व अन्य आवश्यक वस्तुओं का निर्माण होता है। वहीं क्षेत्र के लोग संस्था प्रबंधक समाजसेवी पी के तिवारी के पुनीत कार्य की सराहना कर रहे हैं और उनका उत्साहवर्धन कर रहे हैं श्री इंटरप्राइजेज मैनेजर विनय। मिश्रा ने संस्था प्रबंधक समाजसेवी पी के तिवारी का धन्यवाद करते हुए संस्था द्वारा कराए जा रहे कार्यों को समाज के प्रति गौरवपूर्ण बताया।

अवकाशप्राप्त प्रधानाचार्य डा. वीरेन्द्र बनाये गये प्रान्त कार्याध्यक्ष

स्वतंत्र प्रभात

जौनपुर। कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरू में गत दिवस हुई अन्तरराष्ट्रीय हिन्दू परिषद की राष्ट्रीय बैठक में जौनपुर के डा. वीरेन्द्र प्रताप सिंह (अवकाशप्राप्त प्रधानाचार्य टीडी इण्टर कालेज) को काशी प्रान्त का कार्याध्यक्ष बनाया गया। देश के विभिन्न प्रान्तों से आये राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक पदाधिकारियों की बीच यह घोषणा अहिप के संस्थापक/अध्यक्ष डा. प्रवीण भाई तोगड़िया ने किया। इस पर उपस्थित सभी लोगों ने करतल ध्वनि से डा. सिंह का स्वागत किया। बता दें कि इसके पहले डा. विरेन्द्र राष्ट्रीय छात्र परिषद के प्रान्त अध्यक्ष के रूप में दायित्व का निर्वहन कर रहे थे। इधर गृह जनपद पहुंचने पर उनके निज आवास पर पहुंचे तमाम पदाधिकारियों ने डा. सिंह का माल्यार्पण करके स्वागत किया। इस मौके पर चन्द्र प्रकाश तिवारी विभाग महामंत्री, अजय पाण्डेय जिलाध्यक्ष अन्तरराष्ट्रीय हिन्दू परिषद, दीनानाथ शुक्ल अध्यक्ष राष्ट्रीय किसान परिषद, जितेन्द्र बहादुर सिंह जिलाध्यक्ष राष्ट्रीय बजरंग दल, कृष्ण कुमार उपाध्याय जिला महामंत्री राबद सहित तमाम लोगों ने माल्यार्पण करके स्वागत किया। इस दौरान जिलाध्यक्ष अजय पाण्डेय ने कहा कि जौनपुर के लिए यह गौरव की बात है कि यहां के 3 पदाधिकारी काशी प्रांत का नेतृत्व कर रहे हैं। ऐसे पदाधिकारियों में तरून शुक्ल प्रान्त महामंत्री अहिप एवम् एडवोकेट प्रभाकर तिवारी उपाध्यक्ष हिन्दू एडवोकेट फोरम पहले से हैं। इसी क्रम में डा. विरेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि प्रान्त कार्याध्यक्ष का दायित्व देकर डा. प्रवीण भाई तोगड़िया ने जो जिम्मेदारी दी है, उसे पूरा करना मेरे जीवन का लक्ष्य होगा।

अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला के चौथे दिन देश-विदेश के विद्वानों ने बौद्ध दर्शन पर व्यक्त किए विचार

स्वतंत्र प्रभात

चित्रकूट -अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध शोध संस्थान संस्कृति विभाग लखनऊ तथा जगदुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग राज्य विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग के संयुक्त तत्वावधान में चल रही सात दिवसीय ग्रीष्मकालीन कार्यशाला के चौथे दिन शुक्रवार को विद्वानों ने बौद्ध दर्शन के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी। कार्यशाला में मॉरीशस के विद्वान प्रोफेसर राजेंद्र कुमार डाबी ने 'रियलिटी कंसीडर्ड दुःख शून्यता एंड माया' नामक अपने व्याख्यान में बौद्ध दर्शन के दुख, माया एवं उससे जुड़े हुए पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। कहा कि सांसारिक दुःखों को समझने की समझ तथा उससे निवृत्ति के उपाय सहज ही खोजे जा सकते हैं, जिससे हम जीवन जीते हुए ही मुक्ति का अनुभव कर सकते हैं। कहा कि समस्त प्रकार की समस्याओं का मूल दुःख नहीं होता। बौद्ध दर्शन समस्त प्रकार की मानवीय समस्याओं का निदान करने में अनुकूल समाधान प्रस्तुत करता है। पतंजलि विश्वविद्यालय हरिद्वार के प्रोफेसर ओम नारायण त्रिपाठी ने कहा कि बौद्ध दर्शन एक दृष्टिकोण है, जो व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से मानव की सोच का परिष्कार करता है और जब इस दर्शन के साथ योग का प्रयोग किया जाता है तो व्यक्तित्व का सर्वोत्कृष्ट स्वरूप सामने आता है। श्रीलंका के प्रोफेसर डॉ वेन जुलमपिटिये पुण्यासार महास्थविर ने जीवन की सार्थकता और जीवन मूल्यों की दृष्टि से बौद्ध दर्शन की उपयोगिता को बताते हुए कहा कि बिना बौद्ध के सिद्धांतों को अपनाये वर्तमान वैश्विक समस्याओं का निदान संभव नहीं है। नेहरू ग्राम भारती डीम्ड विश्वविद्यालय प्रयागराज के डॉ राजेश कुमार तिवारी ने योग साधन पद की प्रमाणिकता को बताते हुए बौद्ध दर्शन के सिद्धांतों के साथ योग पथ के विशिष्टीकरण के महत्व को प्रस्तुत किया। इस मौके पर संयोजक डॉ हरिकांत मिश्रा, डॉ शशिकांत त्रिपाठी, डॉ गोपाल कुमार मिश्र, डॉ किरण त्रिपाठी, डॉ जयप्रकाश दुबे, जयवीर सिंह, डॉ रजनीश कुमार सिंह, डॉ सुनीता श्रीवास्तव, डॉ अमिता त्रिपाठी, डॉ दुर्गेश कुमार मिश्र, डॉ शांत कुमार चतुर्वेदी आदि मौजूद रहे।

संक्षिप्त खबरें

प्लास्टिक की पॉलीथिन मिलने पर 29500 रुपये का वसूला जुर्माना

मथुरा। प्रतिबंधित प्लास्टिक के विरुद्ध नगर निगम मथुरा वृंदावन फिर कार्यवाही की है। सहायक नगर आयुक्त एवं औरंगाबाद ज़ोन प्रभारी कल्पना सिंह चौहान के निर्देशन में नगर निगम टीम द्वारा वृंदावन ज़ोन एवं सिटी ज़ोन के अंतर्गत भरतपुर गेट से होलीगेट होते हुए विकास बाज़ार तक प्रतिबंधित पॉलीथिन, सिंगल यूज प्लास्टिक एवं अतिक्रमण करने वालों के विरुद्ध विशेष अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान प्रतिबंधित प्लास्टिक एवं सिंगल यूज़ आइटम जैसे गिलास, चम्मच आदि के उपयोग भंडारण पाए जाने पर विभिन्न प्रतिष्ठानों पर कार्यवाही की गई। इस दौरान 29,500 रूपये का जुर्माना वसूला गया। लगभग 12 किलो प्रतिबंधित प्लास्टिक की पॉलीथिन जब्त की गई। मार्ग पर अतिक्रमण कर रखे हुए सामान को हटाकर मार्ग को अतिक्रमण मुक्त किया गया। प्रतिष्ठान संचालकों को सख्त चेतावनी दी गई कि भविष्य में अतिक्रमण न करें एवं प्रतिबंधित सामग्री का उपयोग न करें।

विधायक ने किया सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट का निरीक्षण

यमुना शुद्धिकरण में लापरवाही किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं: श्रीकांत शर्मा

मथुरा। सदर सीट से विधायक श्रीकांत शर्मा ने सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट का निरीक्षण किया। विधायक श्रीकांत शर्मा ने शुक्रवार सुबह मसानी सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट से विश्राम घाट ध्रुव घाट तक निरीक्षण किया। ट्रीटमेंट प्लांट का निरीक्षण कर कार्य की गुणवत्ता देखी। वहीं श्रीकांत शर्मा ने अधिकारियों से कहा कि स्वयं यमुना वॉच ट्रीटमेंट प्लांट और अन्य स्थलों का निरीक्षण कर रहा हूँ ताकि कार्य की गुणवत्ता और पारदर्शिता बनी रहे। यह केवल एक सरकारी परियोजना नहीं, यह ब्रजवासियों की आस्था, भविष्य और पर्यावरण का प्रश्न है। वहीं उन्होंने कहा कि संबंधित विभाग यह सुनिश्चित करें कि नालों का गंदा पानी बिना ट्रीटमेंट के यमुना में न गिरे। जल निगम सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट की नियमित मॉनिटरिंग करे एवं नगर निगम यमुना किनारे की सफाई व्यवस्था को मजबूत करे। श्रीकांत शर्मा ने कहा कि नगर निगम, जल निगम, सिंचाई विभाग सहित सभी संबंधित विभाग नगर आयुक्त अनिल कुमार के साथ पूर्ण समन्वय स्थापित कर कार्य की प्रगति की नियमित समीक्षा और रिपोर्टिंग सुनिश्चित करें। सभी संबंधित विभाग यमुना की धाराओं को अविरल बनाने की दिशा में ठोस कदम उठाए। यदि किसी भी स्तर पर कोताही सामने आई, तो व्यक्तिगत उत्तरदायित्व तय किया जाएगा और दोषियों पर कार्यवाही की अनुशंसा होगी।

मोहर्रम और कावड़ यात्रा को लेकर पीस कमेटी की बैठक

सिद्धार्थनगर । मोहाना थाना क्षेत्र के पुलिस चौकी शुद्धोधन के प्रांगण में शुक्रवार को थानाध्यक्ष मोहाना रोहित कुमार उपाध्याय की अध्यक्षता में आगामी त्यौहार, मोहर्रम, सावन मास, कावड़ आदि के संबंध में पीस कमेटी की बैठक आयोजित की गई तथा त्यौहार को सकुशल सम्पन्न कराये जाने हेतु भिन्न-भिन्न धर्मो के धर्मगुरुओ, मौलवियों, ग्राम प्रधान, सम्भ्रान्त व्यक्तियों, त्यौहार कमेटी के अध्यक्ष व सदस्यो के साथ गोष्ठी की गयी । सभी से शान्ति व सौहार्दपूर्वक ढ़ंग से त्यौहार को मनाये जाने की अपील की गयी । बैठक में मौजूद सभी व्यक्तियों से त्यौहार के दृष्टिगत शासन द्वारा उच्चाधिकारियों से प्राप्त गाइडलाइन से अवगत कराया गया । सभी धर्मगुरुओं व कमेटी के अध्यक्ष व सदस्यों को उनके जिम्मेदारियों से अवगत कराया गया ।

सात जुलाई को तीन टोल प्लाजा पर प्रदर्शन करेंगे किसान

● भाकियू अराजनैतिक ने किसानों की समस्याओं को लेकर की बैठक

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा। गांव गड़सौली में भाकियू अराजनैतिक की मंडल स्तरीय बैठक कैंप कार्यालय पर हुई। बैठक भाकियू अराजनैतिक मंडल अध्यक्ष राजकुमार तोमर के नेतृत्व में हुई। जिसमें किसानों की समस्या के बारे में विस्तृत चर्चा की गई। बैठक में किसान हित में अहम फैसले लिए गए। मंडल अध्यक्ष राजकुमार तोमर ने बताया कि 64.7 प्रतिशत यमुना एक्सप्रेस वे में अधिग्रहण जमीन का अतिरिक्त मुआवजा अभी किसानों को नहीं मिला है। तहसील महावन व मांट में धारा 143 का ना होना दोनों मुद्दों पर यमुना एक्सप्रेसवे की तीनों टोल प्लाजा को टोल फ्री करने का प्रस्ताव किया गया है। मंडल अध्यक्ष राजकुमार तोमर ने बताया कि सात जुलाई को यमुना एक्सप्रेस वे टोल प्लाजा, आगरा टोल प्लाजा, मथुरा टोल प्लाजा तीनों को किसानों के साथ फ्री किया जाएगा। जिसमें आगरा अलीगढ़ मंडल के सभी जिला अध्यक्ष किसानों के साथ बड़ी तादाद में रहेंगे। यमुना प्राधिकरण से बैठक होने के बावजूद भी अभी तक किसानों को मुआवजा नहीं मिला है। यमुना प्राधिकरण ने अपनी सीमा से 10-15 किलोमीटर तक अधिग्रहण कर लिया है। जिसकी कोई अनुमति नहीं दे रहे हैं और न ही कोई विकास कार्य प्राधिकरण द्वारा किया जा रहा है। यह किसानों के साथ अन्याय है। इसको देखते हुए एक बड़ा प्रदर्शन यमुना एक्सप्रेस वे पर 7 जुलाई को किया जाएगा। बैठक में जिला प्रवक्ता डॉक्टर संदीप, साहब सिंह सूबेदार, जिला अध्यक्ष आगरा दीपक तोमर, जिला अध्यक्ष फिरोजाबाद विनीत कुमार, जिला अध्यक्ष मैनपुरी नवनीत यादव, जिला अध्यक्ष कासगंज संजय प्रजापति, जिला अध्यक्ष हाथरस रवि चौधरी, जिला अध्यक्ष एटा मदनपाल सिंह, जिला अध्यक्ष अलीगढ़ योगेश तोमर, युवा मंडल आगरा अध्यक्ष मोहित, प्रदेश सचिव सोबरन सिंह, उदयवीर सरपंच, लाल सिंह तोमर, अवधेश रावत, प्रेम सिंह सिकरवार, गंगा प्रसाद, तिलक पंडित आदि लोग मौजूद थे।

बदमाशों ने घर के बाहर युवक को कनपटी पर सटाकर मारी गोली

● तैयापुर गांव की शिवनगर कॉलोनी में हुई घटना, पुलिस से जताई थी हत्या की आशंका

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा। जमुनापार स्थित तैयापुर गांव की शिवनगर कॉलोनी में गुरुवार रात साढ़े नौ बजे बदताशों ने घर के बाहर युवक को कहा सुनी के बाद गोली मार दी। गोली कपनटी पर सटा कर मारी गई थी जिससे युवक की मौके पर ही मौत हो गई। युवक ने पुलिस से अपने साथ किसी अनहोनी की आशंका जताई थी लेकिन पुलिस ने युवक की बात को नहीं सुना। रमेश उर्फ पप्पू रात में घटना के समय अपने घर के पास खाली प्लॉट में चारपाई पर सो रहा था। इसी दौरान तीन लोग वहां पहुंचे। तीनों की रमेश के साथ कुछ देर के लिए कहासुनी हुई इकसे बाद युवकों ने तमंचा निकालकर रमेश पर गोली चला दी।

जो गोली की आवाज सुनकर आसपास के लोग घटनास्थल की दौड़ तो आरोपी भागते हुए भी दूसरी गोली मारकर फरार हो गए। गोलियों की आवाज सुनकर आसपास के लोग मौके पर पहुंचे। हमलावर लोगों को देखते ही फरार हो गए। परिजन घायल रमेश को तुरंत अस्पताल ले गए। डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मृतक के बेटे राहुल चौधरी ने बताया कि कुछ दिन पहले आरोपियों से झगड़ा हुआ था जिसमें राजीनामा भी हो गया था लेकिन वह लोग लगातार जान से मारने की धमकी दे रहे थे। जिसकी शिकायत उनके द्वारा स्थानीय थाने में अभी की गई थी लेकिन पुलिस के द्वारा कोई भी एक्शन नहीं लिया गया आज नतीजा निकला कि आप ए चारपाई पर सोते उनके पिता की गोली मार कर हत्या कर कर फरार हो गए। एसपी सिटी राजीव कुमार सिंह के अनुसार प्रारंभिक जांच में पुरानी रंजिश हत्या का कारण सामने आया है। पुलिस ने मृतक के परिजनों की शिकायत पर तीनों आरोपियों के खिलाफ नामजद रिपोर्ट दर्ज कर ली है। पुलिस फरार आरोपियों की तलाश कर रही है।

कम छात्र संख्या वाले स्कूलों को मर्ज करने के खिलाफ हैं शिक्षक

● बीएसए कार्यालय पहुंचकर प्रभारी बीएसए को दिया मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा। प्रदेश सरकार द्वारा कम नामांकन वाले परिषदीय विद्यालय के मर्ज, पेयरिंग के निर्णय के विरोध में शुक्रवार को राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के बैनर तले शिक्षक, शिक्षामित्र, अनुदेशक, बेसिक शिक्षा कार्यालय पर एकत्रित होकर प्रदेश राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ महामंत्री डॉ. कमल कौशिक नेतृत्व में प्रभारी बेसिक शिक्षाधिकारी कैलाश कुमार शुक्ला को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा। संगठन के प्रदेश महामंत्री कमल कौशिक ने कहा- सरकार द्वारा परिषदीय विद्यालय में कम नामांकन का हवाला देते हुए साजिशन स्कूलों को मर्ज किए जाने का आदेश पर आर-पार की लड़ाई लड़ने की चेतावनी दी है। जिलाध्यक्ष अंजना शर्मा ने कहा इस आदेश से शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 का उल्लंघन होता है। जिला मीडिया प्रमुख गोवर्धन दास गुप्ता ने बताया कि आर. टी. ई. एक्ट के अनुसार हर एक किलोमीटर पर प्राथमिक तथा 3 किलोमीटर पर उच्च प्राथमिक विद्यालय होना चाहिए। 6 से 14 वर्ष के सभी बच्चों को निशुल्क अनिवार्य शिक्षा बाल अधिकार के तहत मिलनी चाहिए। लेकिन आर. टी. ई. एक्ट को दरकिनार कर समायोजन किया जा रहा है। इस पर सरकार को विचार करना चाहिए।

ज्ञापन देने वालों में चौधरी इंद्रपाल सिंह महामंत्री, हेम राज सिंह,गोविंद सिंह चौहान, भगवान सिंह पचोरी, बच्चू सिंह,बबलू यादव, मनमोहन गौतम,गोपाल प्रसाद,अवधेश,आकाश,आदित्य,सुबेंद सारस्वत,सुधीर उपाध्याय, सारस्वत,शैलेंद्र परिहार,प्रमोद वर्मा,कन्हैयालाल, देवेंद्र शर्मा, प्राची अग्रवाल, अर्चना वर्मा, गुरु प्यारी सत्संगी, सुरेंद्र यादव, माला रानी संजीव, बिंदु,नम्रता सोनकर आदि शिक्षक शिक्षिकाएं उपस्थित थीं।

थाने के सामने टूटकर गिर हाइटेंशन लाइन का तार, धूं धूं कर जल उठा टैंकर

● पुलिसकर्मियों में मची अफरा तफरी, फायर ब्रिगेड की गाड़ियों ने पाया आग पर काबू

स्वतंत्र प्रभात

मथुरां। हाइटेंशन लाइन का तार टूटकर गिरने से थाना जैंत के सामने कबाड़ में खड़े डीजल के खाली टैंकर में आग लग गई। आग की खबर लगते ही पुलिसकर्मियों में अफरा तफरी मच गई। आनन फानन में फायर ब्रिगेड की गाड़ी बुलाकर आग पर काबू पाया गया। गनीमत यह रही कि समय रहते आग पर काबू पा लिया गया। वरना अन्य वाहनों में आग लगती तो बड़ा हादसा हो सकता था। थाना जैंत के सामने मुकदमें में पावंद वाहन खड़े रहते हैं। जहां वाहन खड़े थे उसके ऊपर से हाइटेंशन लाइन जा रही है। शुक्रवार करीब 11 बजे किन्हीं कारणों से हाइटेंशन लाइन का तार टूटकर थाने के पास कबाड़ में खड़े डीजल के खाली टैंकर के ऊपर गिर गया।

जिससे अचानक से टैंकर में आग लग गई। टायर धूं धूं कर जलने लगे। थाना प्रभारी जैंत अश्वनी कुमार पुलिस बल के साथ आग बुझाने में जुट गए। सूचना पर जीएलए विश्व विद्यालय से एक व मथुरा से एक फायर ब्रिगेड की गाड़ी आग बुझाने पहुंची। काफी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया।

समय रहते आग पर काबू नहीं पाया जाता तो अन्य वाहनों में भी आग लग सकती थी। जिससे बड़ा हादसा होने का अंदेशा रहता। सीओ सदर संदीप कुमार सिंह ने बताया शॉर्ट सर्किट के चलते आग लगी थी। समय रहते आग पर काबू पा लिया गया।

राया में जुआ के अड्डे पर पुलिस की कार्यवाही

● छह जुआरियों को पुलिस ने मौके से दबोचा

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा। थाना राया पुलिस ने राया में जुआ के अड्डे पर कार्यवाही की। आधा दर्जन जुआरियों को पुलिस ने मौके से पकडा। 256000 रुपये व चार गड्डी ताश पत्ते व छह मोबाइल फोन बरामद किये हैं।डीडी प्लाजा की गैलरी के अन्दर तीसरी मंजिल पर बने कमरे में जूआ हो रहा है। पुलिस को सूचना मिली तो पुलिस टीम ने मौके पर दबिश दी। प्रभारी निरीक्षक अजय कौशल थाना राया, एसआई निशान्त पायल, एसआई सचिन कुमार, एसआई जयवीर सिंह, एसआई राजेश कुमार प्रथम थाना राया आदि पुलिसकर्मी टीम में शामिल थे। पुलिस ने सत्यपाल पुत्र दामोदर निवासी नारायण गढी थाना महावन, हरिओम पुत्र कालीचरण निवासी बिर्जापुर थाना हाईवे, रविन्द्र सिंह पुत्र हरिलाल निवासी चौमुंहा थाना जैत, संदीप कुमार पुत्र सुनहरी लाल निवासी सैमरा थाना खंदौली जनपद कमिश्नरेट आगरा, साबिर पुत्र सत्तार निवासी गौरा नगर कालोनी बस स्टैण्ड के पीछे थाना वृन्दावन व नीरज अग्रवाल पुत्र गोपाल प्रसाद निवासी शिवदत्त गली रेतिया बाजार थाना राया को पुलिस ने मौके से गिरफ्तार कर लिया। हरिओम शातिर जुआरी है।इसके खिलाफ मथुरा जनपद के विभिन्न थानों में अब तक आठ आपराधिक मामले दर्ज हो चुके हैं। अभियुक्त शाबिर और दूसरे गिरफ्तार हुए जुआरियों पर भी पहले से आपराधिक मामले दर्ज हैं।

सीमावर्ती राज्यों को रोकी जाएगी खाद की कालाबाजारी: आवेश कुमार सिंह

● नये डीओ कृषि उर्वरक की कालाबाजारी रोकने को दिखे चिंतित

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा। जिला कृषि अधिकारी आवेश कुमार सिंह की अध्यक्षता में आयोजित खरीफ 2025 में उर्वरकों की समीक्षा बैठक में अंतरराज्यीय सीमावर्ती जनपद मथुरा की तहसील छाता, गोवर्धन, मथुरा की सीमाओं पर लगे राजस्थान एवं हरियाणा बार्डर से उर्वरक की कालाबाजारी, तस्करी एवं बार्डर से अवैध परिसंचलन पर सतत् निगरानी रखी जाए। अन्य राज्यों के कृषकों को उर्वरकों का विक्र य नहीं करने के निर्देश दिए।राज्य के कृषकों को उनकी जोत वही खतौनी एवं फसल संस्तुतियों के आधार पर ही उर्वरकों की बिक्री हो। यूरिया, डी.ए.पी., एन.पी.यो. कम्प्लेक्स एवं एम.ओ.पी. की निर्धारित अधिकतम् खुदरा मूल्य दर से अन्तर्गत विकी सुनिश्चित की जाय। यदि कोई उर्वरक विक्रेता अधिकतम खुदरा मूल्य दर से अधिक मूल्य पर उर्वरक बिक्री करता हुआ पाया जाय तो उसके विरुद्ध कार्यवाही की जायेगी। ऐसे उर्वरक विनिर्माता प्रदायकर्ता संस्थाओं पर भी सतर्क दृष्टि रखी जाय। नियमों के उल्लंघन में एफआईआर दर्ज कर विधिक कार्यवाही सुनिश्चित की जाय। जिला कृषि अधिकारी ने प्रत्येक उर्वरक व्यवसायी के स्तर पर स्टॉक पंजिका विक्रय पंजिका तथा रसीद अनिवार्य रूप से रखी जाय या ऐसे भरूप में डिजिटल स्टॉक रजिस्टर, जो तिथिवार स्टॉक स्थिति, आरम्भिक अतिशेष दिन के दौरान प्राप्तियों, दिन के दौरान विक्रय और अन्तिम स्टॉक को स्पष्ट प्रदर्शित करता हो, को होना आवश्यक है। जनपद में थोक फुटकर उर्वरक विक्रेताओं तथा उर्वरक बिक्री केन्द्रों पर उर्वरकों की उर्वकरवार बिक्री दर तथा स्टॉक का अंकन रेट स्टॉक बोर्ड पर प्रतिदिन अंकित किया जाय। उन्होंने निर्देश दिए कि समस्त थोक उर्वरक विक्रेता अपना बाइट्सप ग्रुप बनाकर फुटकर विक्रेताओं को जोड़ेगें, जिला कृषि अधिकारी कार्यालय मथुरा से निर्गत निर्देशों के पत्रों की फुटकर विक्रेताओं तक पहुंचाने एवं परिपालन कराने का दायित्व होगा। उक्त कार्यों में किसी भी, प्रकार की लापरवाही न की जाय। बैठक में चंबल फर्टिलाइजर के प्रबंधक आगरा डा. पंकज गिल प्रबनाक, इफ्को के प्रबंधक सतवीर सिंह, गनेश वार्ष्णेय, भानु आदि उपस्थित थे।

नौहझील के गांव खाजपुर में मुख्य मार्ग पर भरा पानी

● मकान धसने का ग्रामीणों को सता रहा डर

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा। नौहझील ब्लॉक के गांव खाजपुर में पानी का निकास न होने के कारण मुख्य मार्ग ने तालाब का रूप ले लिया है। मार्ग पूरी तरह क्षतिग्रस्त हैं पानी के निकास की कोई व्यवस्था नही है। राहगीरों के साथ रास्ते निकलते वक्त आए दिन हादसे हो रहे हैं। भारी जलभराव के कारण मुख्य मार्ग के आसपास बने मकानों का धंसने का डर भी ग्रामीणों को सताने लगा है तो वहीं जलभराव के कारण ग्रामीणों को बीमारी फैलने का भी डर है। विकास कार्य के नाम पर सिर्फ जल भराव दिखाई दे रहा है। किसी भी जनप्रतिधि का इस ओर ध्यान नही दिया जा रहा है। जिससे ग्रामीणों में जनप्रतिनिधियों के प्रति आक्रोश पनप रहा है। देखा जाए तो कहीं न कहीं इस हालात के जिम्मेदार खुद ग्रामीण भी है जो विकास कार्य होने में बाधा उत्पन्न कर रहे हैं। जल निकासी के लिए नाली के निर्माण में ग्रामीणों द्वारा कई बार अड़ंगा लगाया गया है जिसकी वजह से जलभराव हो रहा है। खाजपुर गांव की समस्या बहुत पुरानी हैं जिसका समाधान करने की कई बार कोशिश की गई है, परंतु गांव के ही कुछ लोगों द्वारा जल निकासी के लिए नाली न बनाने देना, पानी को आगे नहीं निकलने देना एवं जलभराव के पास पंचायत की जमीन पर कब्जा करना है जिसमें पानी का सोख्ता बनाया जा सकता है बनाने की कोशिश भी की गई है जिससे जलभराव का समाधान हो सकता है।

वर्जन

जल्दी ही ग्रामीणों से बात कर के जलभराव की समस्या से स्थाई निजात दिलाई जाएगी। कोई भी मार्ग या गांव विकास कार्य से अछूता नही रहेगा। खाजपुर में जहां जलभराव हैं उसके नीचे सीसी रोड बना है।

-राजेश चौधरी विधायक मांट

नगर निगम की स्ट्रीट लाइटों से हो रही बिजली चोरी

● पार्किंग में स्ट्रीट लाइट से बिजली चोरी पकडी, एफआईआर दर्ज

● लगातार मिल रहीं शिकायतों के बाद नगर निगम ने शुरू की कार्यवाही

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा। अंडर ग्राउंड बिजली की लाइनें किये जाने के बाद बिजली चोरी करना मुश्किल हो गया है। इसके लिए लोगों ने नया तरीका खोज निकाला, हालांकि यह तरीका महंगा पड रहा है और जल्द ही पकड में भी आ रहा है। पूरे नगर निगम क्षेत्र में नगर निगम की स्ट्रीट लाइट लगी हैं। नगर निगम मथुरा वृंदावन के संज्ञान में यह मामला आया कि शहर के विभिन्न क्षेत्रों में जहां जहां स्ट्रीट लाइट लगी हैं, वहां कुछ लोगों द्वारा अवैध रूप से घरेलू एवं कमर्शियल विद्युत कनेक्शन जोड़ लिए गए हैं। इससे न केवल स्ट्रीट लाइट बाधित हो रही थी, बल्कि नगर निगम को धन की हानि भी हो रही थी। इस प्रकरण पर गंभीरता दिखाते हुए नगर आयुक्त ने तत्काल संज्ञान लिया गया तथा सभी ज़ोन में जांच के लिए टीमें गठित की गई। जांच के दौरान दिनांक 25 जून की रात्रि में नगर निगम वृंदावन के कर्मचारी कपिल कुमार द्वारा यहां पाया गया कि डी.के. पार्किंग द्वारा वृंदावन क्षेत्र में नगर निगम की स्ट्रीट लाइट पोल से अवैध रूप से विद्युत कनेक्शन लिया गया है। जब कपिल कुमार ने अवैध कनेक्शन हटाया, तो डी.के. पार्किंग से जुड़े लोगों द्वारा उनके साथ गाली गलौज, हाथापाई की गई, जातिसूचक शब्दों का प्रयोग किया गया और जान से मारने की धमकी दी गई। घटना की गम्भीरता को देखते हुए नगर निगम मथुरा वृंदावन द्वारा संबंधित व्यक्तियों के विरुद्ध कोतवाली वृंदावन में प्राथमिकी दर्ज कराई गई है। नगर निगम आम नागरिकों से अपील की गई है कि वे नगर निगम की सार्वजनिक संपत्ति का दुरुपयोग न करें। इस प्रकार की किसी भी अवैध गतिविधि के विरुद्ध नगर निगम सख्त कानूनी कार्यवाही करता रहेगा।

25 हजार के इनामी गैंगस्टर को मथुरा पुलिस ने दबोचा

● गौतम बुद्ध नगर पुलिस को थी तलाश, मथुरा में धरा गया रोहित

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा। एसओजी टीम व थाना कोसीकला पुलिस मथुरा की संयुक्त कार्यवाही में गौतम बुद्ध नगर में पंजीकृत गैंगस्टर के मुकदमे में वांछित 25 हजार के इनामी अन्तर्राज्यीय बदमाश पुलिस मुठभेड के दौरान गिरफ्तार हुआ है। मुठभेड़ के दौरान गोली लगने से बदमाश घायल हो गया। इसके बाद पुलिस ने उसे दबोच लिया। ग्राम कोटवन उमराला मार्ग से होडल की ओर जाने वाली बम्बे की कच्ची पटरी की पुलिया पर थाना कोसीकला जनपद मथुरा से गैंगस्टर रोहित पुत्र नवल निवासी ग्राम सिंगार थाना बिछोर जिला नूंह मेवात हरियाणा को गिरफ्तार किया। इसके पास से एक तंमचा, तीन खोका कारतूस, व तीन जिन्दा कारतूस, एक मोटर साइकिल बरामद हुई है। अभियुक्त गैंगस्टर एक्ट में थाना बीटा 2 जिला गौतमबुद्ध नगर में 25 हजार का इनामिया अपराधी है। आधा दर्जन से अधिक आपराधिक मामले इसके विरूद्ध दर्ज हैं। अन्य थानो व राज्य से आपराधिक इतिहास के सम्बन्ध में जानकारी की जा रही है। कार्यवाही करने वाली टीम में प्रभारी निरीक्षक अरविंद कुमार निर्वाल थाना कोसीकलां, एसआई राकेश कुमार एसओजी प्रभारी मथुरा, एसआई अरविन्द पूनिया चौकी प्रभारी कोटवन थाना कोसीकलां आदि पुलिसकर्मी थे।

गोवर्धन में एसडीएम ने हटवाया अस्थाई अतिक्रमण

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा। एसडीएम नीलम श्रीवास्तव ने नेतृत्व में गोवर्धन परिक्रमा में अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया गया। राजस्व विभाग और नगर पंचायत प्रशासन ने सख्ती दिखाते हुए राधाकुंड परिक्रमा मार्ग के दसविसा से अतिक्रमण हटवा दिया। अतिक्रमण करने वालों के तख्ता पट्टा जब्त कर कार्रवाई की चेतावनी दी गई। एसडीएम नीलम श्रीवास्तव, सीओ अनिल कुमार सिंह, अधिशाषी अधिकारी चैतन्य तिवारी के निर्देशन में नपं कर्मियों ने परिक्रमा मार्ग में अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया। उन्होंने सख्ती दिखाते हुए अस्थाई अतिक्रमण हटवाया। दुकानदारों ने सड़क पर तखत, कुर्सी तथा अन्य सामान रख मार्ग अवरुद्ध कर रखा था। एसडीएम ने सख्ती के साथ अतिक्रमण हटवाया। फुटपाथ पर लगे लकड़ी के खोखे (अस्थाई दूकान) हटाई। जिससे दुकानदारों में हड़कंप मच गया। पंचायत कर्मियों ने अवैध अतिक्रमण कर रहे तमाम सामान को जब्त कर लिया। एसडीएम ने बताया कि अतिक्रमण हटवाकर दुकानदारों को चेतावनी दे दी गई है। अगर पुनः अतिक्रमण मिला तो सख्त विधिक कार्रवाई भी की जाएगी।